NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance
specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D./ B. Pharma
BPT MPT D/BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

विजडम इंडिया

निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति

R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608

EMAIL: sheelshukla100@gmail.com

लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 262 लखनऊ, मंगलवार 07 मई 2024 मूल्य: 02 रुपये पृष्ठ- 08

कांग्रेस ने मान ली अपनी हार, आंध्र प्रदेश में बोले पीएम राज्य के विकास के लिए डबल इंजन की सरकार जरूरी

इंडी अलायंस अगर सत्ता में आया तो बिहार ही नहीं, पूरे देश में लग जाएगा लालू जैसा जंगलराज, विपक्ष अमित शाह का बड़ा हमला

एजेंसी।

नई दिल्ली मोदी ने कहा कि कांग्रेस नेताओं ने नतीजों से पहले ही चुनाव में हार स्वीकार कर ली है। साथ ही, वाईएसआर कांग्रेस पार्टी को आंध्र प्रदेश की जनता ने पूरी तरह से खारिज कर दिया है। वाईएसआर कांग्रेस के पास पूरे 5 साल थे, लेकिन इस बार उसने बुरी तरह बर्बाद कर दिया और आंध्र प्रदेश को पिछड़ेपन की बेड़ियों में जकड़े रखा।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में सार्वजनिक बैठक को संबोधित किया। लोकसभा चुनाव के साथ साथ आंध्र प्रदेश में विधानसभा के भी चुनाव हो रहे है। भाजपा यहां टीडीपी और जनसेना के

साथ गठबंधन कर चुनावी मैदान में है। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि एनडीए न सिर्फ आगामी लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड जीत दर्ज करेगा, बल्कि आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में भी परचम लहराएगा। शविकसित आंध्र प्रदेश, शविकसित भारतश के निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। मोदी ने कहा कि कांग्रेस नेताओं ने नतीजों से पहले ही चुनाव में हार स्वीकार कर ली है। साथ ही, वाईएसआर कांग्रेस पार्टी को आंध्र प्रदेश की जनता ने पूरी तरह से खारिज कर दिया है। वाईएसआर कांग्रेस के पास पूरे 5 साल थे, लेकिन इस बार उसने बुरी तरह बर्बाद कर दिया और आंध्र प्रदेश को पिछड़ेपन की बेड़ियों में जकड़े रखा। उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश ऊर्जा और प्रतिभा से समृद्ध है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आंध्र प्रदेश की ताकत का लोहा पूरी दुनिया मानती है। आज, जब भारत बड़ी प्रगति कर रहा है, तो आंध्र प्रदेश को भी ऐसा ही करना चाहिए। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के तहत आंध्र प्रदेश का विकास असंभव है। विकास के नाम पर काम शून्य और भ्रष्टाचार शत प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि पूरा देश टीवी पर देख रहा है, झारखंड में म्व ने नोटों के पहाड़ खोदकर निकाले हैं। कांग्रेस के मंत्री के निजी सचिव के नौकर के पास से ये नोटों का पहाड़ निकला है।

एजेंसी। नई दिल्ली अमित शाह ने कहा कि कर्पूरी ठाकुर जी ने मैथिली भाषा को सम्मान देने की मांग की थी और अटल जी ने मैथिली भाषा को आठवीं अनुसूची में स्थान दिया। उन्होंने कहा कि मोदी जी ने नीट, मेडिकल और एम्स के दाखिलों में पिछड़ा समाज और अतिपिछड़ा समाज को आरक्षण दिया। बिहार के उजियारपुर में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह जनसभा को संबोधित किया। भाजपा ने यहां से केंद्रीय राज्य मंत्री नित्यानंद राय को चुनावी मैदान में उतारा है। उन्होंन अपने संबोधन में कहा कि अभी–अभी बिहार के वंचितों के, पिछड़ों के, दलितों के नेता कर्पूरी ठाकुर

जी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्भारत रत्नश देकर जननायक भारत रत्न बनाने का काम किया है। कर्पूरी ठाकुर जी ने जीवन की अंतिम सांस तक गरीबों–पिछड़ों के लिए काम किया। अमित शाह ने कहा कि कर्पूरी ठाकुर जी ने मैथिली भाषा को सम्मान देने की मांग की थी और अटल जी ने मैथिली भाषा को आठवीं अनुसूची में स्थान दिया। उन्होंने कहा कि मोदी जी ने नीट, मेडिकल और एम्स के दाखिलों में पिछड़ा समाज और अतिपिछड़ा समाज को आरक्षण दिया। और पिछड़ा समाज के आरक्षण पर डाका डालने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया है। उन्होंन दावा किया कि कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार बनी और रातों रात सारे मुस्लिम समाज को, पिछड़ेपन का सर्वे किए बगैर पिछड़ा घोषित कर दिया और पिछड़े समाज का 5 प्रतिशत आरक्षण काटकर मुसलमानों को दे दिया। भाजपा नेता ने कहा कि कल झारखंड में इंडी गठबंधन के मंत्री के सचिव के नौकर के यहां से 30 करोड़ रुपये मिले। इसके 2 महीने पहले कांग्रेस सांसद के यहां से 350 करोड़ रुपया मिला, इससे कुछ समय पहले ममता बनर्जी के मंत्री के घर 51 करोड़ रुपया मिला। उन्होंने कहा कि इंडी अलायंस अगर सत्ता में आया तो बिहार ही नहीं,

आडिशा पीएम मोदी के वार पर नवीन पटनायक का पलटवार, बोले- दिन में सपने देख रही भाजपा

एजेंसी।

ओडिशा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज बेहरामपुर में एक रैली में कहा कि आजादी के बाद सात दशकों से अधिक समय तक कांग्रेस और फिर बीजू जनता दल की लूट ने संसाधनों से समृद्ध ओडिशा को गरीब बनाए रखा। प्रधानमंत्री ओडिशा में आम चुनाव के साथ होने वाले राज्य चुनावों से पहले भाजपा के लिए प्रचार कर रहे थे। ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने सोमवार को बीजेपी पर जमकर निशाना साधा और कहा कि पार्टी राज्य में सरकार बनाने का दिवास्वप्न देख रही है। इस मामले पर पटनायक की ओर से बोलते हुए उनके सहयोगी वीके पांडियन ने कहा कि भाजपा कई दिनों से दिवास्वप्न देख रही है।

ओडिशा में बीजेडी सरकार के दिन अब गिने–चुने रह गए हैं, इस पर पीएम के दावे का कड़ा खंडन करते हुए पांडियन ने कहा, नवीन पटनायक 9 जून को सुबह 11.30 बजे से दोपहर 1.30 बजे के बीच लगातार छठी बार ओडिशा के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज बेहरामपुर में एक रैली में कहा कि आजादी के बाद सात दशकों से अधिक समय तक कांग्रेस और फिर बीजू जनता दल की लूट ने संसाधनों से समृद्ध ओडिशा को गरीब बनाए रखा। प्रधानमंत्री ओडिशा में आम चुनाव के साथ होने वाले राज्य चुनावों से पहले भाजपा के लिए प्रचार कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ओडिशा में पानी है, उपजाऊ जमीन है, खनिज हैं, लंबी तटरेखा है, इतिहास है, संस्कृति है, भगवान ने बहुत कुछ दिया है। लेकिन ओडिशा के लोग गरीब क्यों हैं? इसका जवाब है लूट, पहले कांग्रेस नेताओं द्वारा और फिर बीजद नेताओं द्वारा। बीजेडी के छोटे नेताओं के पास भी बड़े–बड़े बंगले हैं। बीजद नेता और मुख्यमंत्री नवीन पटनायक पर एक दुर्लभ हमला करते हुए, प्रध ाान मंत्री ने गंजाम में एक रैली में पूछा कि उनके निर्वाचन क्षेत्र हिंजिली से मजदूर दूसरे राज्यों में क्यों पलायन करते हैं।

केजरिवाल ने क्या आतंकी संगठन से लिए 16 मिलियन डालर, एनआईए जांच की सिफारिश

एजेंसी।

नई दिल्ली केजरीवाल के खिलाफ एक और साजिश थी। उपराज्यपाल सचिवालय के अनुसार, सक्सेना को शिकायत मिली थी कि आप को 1993 के दिल्ली विस्फोटों के दोषी और आतंकवादी देवेंद्र पाल भुल्लर की रिहाई की सुविधा देने और खालिस्तानी समर्थक भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए खालिस्तानी समर्थक समूहों से 16 मिलियन अमेरिकी डॉलर मिले थे। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और आप सरकार को अमेरिका स्थित प्रतिबंधित खालिस्तानी समूह शसिख फॉर जस्टिसश से फंडिंग मिलने को लेकर दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने आरोपों की एनआईए जांच की सिफारिश की है।आप ने आरोपों का जोरदार खंडन किया और इसे केजरीवाल के खिलाफ एक और साजिश करार दिया है। उपराज्यपाल सचिवालय के अनुसार, वीके सक्सेना को शिकायत मिली थी कि आप को 1993 के दिल्ली विस्फोटों के दोषी और आतंकवादी देवेंद्र पाल भुल्लर की रिहाई की सुविधा देने और खालिस्तानी समर्थक भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए खालिस्तानी समर्थक समूहों से 16 मिलियन अमेरिकी डॉलर मिले थे। उन्होंने कहा कि चूंकि शिकायत एक मुख्यमंत्री के खिलाफ की गई थी और एक प्रतिबंधित संगठन से प्राप्त राजनीतिक फंडिंग से संबंधित थी। शिकायतकर्ता द्वारा दिए गए इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य की फोरेंसिक जांच सहित जांच की आवश्यकता है। उपराज्यपाल ने गृह मंत्रालय को जनवरी 2014 में केजरीवाल द्वारा इकबाल सिंह को लिखे गए एक पत्र का भी हवाला दिया है, जिसमें उल्लेख किया गया है कि आप सरकार पहले ही राष्ट्रपति को भुल्लर की रिहाई की सिफारिश कर चुकी है और अन्य मुद्दों पर काम करेगी। जिसमें सहानुभूतिपूर्वक और समयबद्ध तरीके से एसआईटी का गठन शामिल है। भुल्लर की रिहाई के लिए लिखित आश्वासन की मांग को लेकर इकबाल सिंह जंतर–मंतर पर अनशन पर बैठे थे। केजरीवाल का

कन्नौज में अखिलेश तो रायबरेली में राहुल की होगी हार, केशव मौर्य बोले– देश विरोधी ताकतें नहीं चाहती कि मोदी फिर से पीएम बने

संवाददाता श्रावस्ती से बीजेपी प्रत्याशी साकेत मिश्रा के समर्थन में एक सभा को संबोधित करते हुए मौर्य ने कहा कि जिस तरह 2019 में अखिलेश की पत्नी डिंपल यादव को कन्नौज से हार मिली थी, वही इस बार भी होगा। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को कहा कि समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव और कांग्रेस नेता राहुल गांधी दोनों लोकसभा चुनाव में क्रमशः कन्नौज और रायबरेली में हार जाएंगे। श्रावस्ती से बीजेपी प्रत्याशी साकेत मिश्रा के समर्थन में एक सभा को संबोधित करते हुए मौर्य ने कहा कि जिस तरह 2019 में अखिलेश की पत्नी डिंपल यादव को कन्नौज से हार मिली थी, वही इस बार भी होगा। उन्होंने कहा, श्श्राहुल को रायबरेली से भी हार का स्वाद चखना पड़ेगा। भाजपा नेता ने आम चुनाव में भगवा पार्टी के 400 से अधिक सीटें जीतने का भरोसा जताया। मौर्य ने इंडिया ब्लॉक के नेताओं पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि सभी श्भ्रष्ट पार्टियांश एक छत के नीचे आ गई हैं। उन्होंने आगे कहा कि विपक्ष यह कहकर लोगों को गुमराह कर रहा है कि संविधान खतरे में है। उन्होंने कहा, श्श्नरेंद्र मोदी पिछले 10 साल से देश के प्रधानमंत्री हैं और नई संसद में प्रवेश करने से पहले उन्होंने संसद के दरवाजे पर माथा टेका था। उन्होंने दावा किया कि भारत विरोधी ताकतें नहीं

चाहती कि मोदी जी फिर से प्रधानमंत्री बने। उन्होंने कहा कि यह चुनाव ऐतिहासिक है जिसमें दो खेमें हैं, एक ओर 12 लाख करोड़ के भ्रष्टाचार–घोटाले करने वाली कांग्रेस पार्टी है और दूसरी ओर 23 साल तक मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री रहने के बाद भी जिनपर 25 पैसे का आरोप नहीं लगा ऐसे आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी हैं। उन्होंने कहा कि कहा कि भाजपा सरकार की जन–कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से देश ने श्मोदी जी की गारंटीश को धरातल पर उतरते हुए देखा है। देश की जनता एक बार फिर प्रचंड बहुमत की भाजपा सरकार के कमल खिलाकर मा0 श्री नरेन्द्र मोदी जी को फिर एक बार प्रध ाानमंत्री बनाने जा रही है!

पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व शक्ति बनकर उभरेगा, चन्नी के बयान पर बोले रवनीत बिट्टू, शहीदों के प्रति क्या नहीं है कोई सम्मान ?

एजेंसी।

नई दिल्ली बिट्टू ने कहा कि यह आश्चर्य की बात है कि कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने हमारे रक्षा बलों के नायकों के खिलाफ चन्नी के बयान पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के रूप में अपने छोटे से कार्यकाल के दौरान चन्नी ने साबित कर दिया है कि उनमें कोई भावना नहीं है और उनका कार्यकाल अपमान के साथ समाप्त हुआ है। लुधियाना से भाजपा उम्मीदवार रवनीत बिट्टू ने आज पूर्व मुख्यमंत्री और जालंधर से कांग्रेस उम्मीदवार चरणजीत चन्नी द्वारा पुंछ हमले पर की गई देश विरोधी टिप्पणियों की कड़ी निंदा की। बिट्टू ने कहा कि वह चन्नी का यह बयान पढ़कर स्तब्ध हैं कि भाजपा ने पुंछ में वायु सेना के काफिले पर हमले की योजना बनाई थी, जिसमें सेना का एक जवान शहीद हो गया। उन्होंने कहा कि चन्नी के मन में शहीदों के प्रति कोई सम्मान नहीं है और उन्होंने सभी राष्ट्रवादियों की नजर में अपनी विश्वसनीयता खो दी है। बिट्टू ने कहा कि यह आश्चर्य की बात है कि कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने हमारे रक्षा बलों के नायकों के खिलाफ चन्नी के बयान पर ध यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के रूप में अपने छोटे से कार्यकाल के दौरान चन्नी ने साबित कर दिया है कि उनमें कोई भावना नहीं है और उनका कार्यकाल अपमान के साथ समाप्त हुआ है। बिट्टू ने कहा कि बीजेपी ही एक

ऐसी पार्टी है जिसने देश के दुश्मनों के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया और देश विरोधी ताकतों को मजबूती से हराया. उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उनके दृढ़ संकल्प और दूरदर्शिता के लिए सम्मान करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रध ाानमंत्री के नेतृत्व में भारत विश्व शक्ति बनकर उभरेगा और 4 जून के बाद भारतीय राजनीति में चन्नी जैसे नेताओं के लिए कोई जगह नहीं होगी। कांग्रेस नेता चरणजीत सिंह चन्नी ने रविवार को पुंछ आतंकी हमले को भाजपा को लोकसभा चुनाव में जीत दिलाने के लिए किया गया एक 'स्टंट' करार दिया, जिसमें भारतीय वायुसेना के एक जवान की मौत हो गयी थी और चार अन्य घायल हो गए। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और जालंधर संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार की टिप्पणी से विवाद पैदा हो गया।

जेपी नड्डा, अमित मालवीय और कर्नाटक बीजेपी अध्यक्ष पर केस दर्ज, एनिमेटेड वीडियो मामले में कांग्रेस ने कराई अफआईआर

एजेंसी।

नई दिल्ली एफआईआर बीजेपी कर्नाटक के सोशल मीडिया पेज पर पोस्ट किए गए एक वीडियो के संबंध में दर्ज की गई थी जिसमें कांग्रेस नेता राहुल गांधी और राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को मुसलमानों को बड़ा धन मुहैया कराते हुए दिखाया गया था। कथित तौर पर सांप्रदायिक नफरत भड़काने के आरोप में बीजेपी प्रमुख जेपी नड्डा, पार्टी की कर्नाटक इकाई के प्रमुख बीवाई विजयेंद्र और पार्टी के

आईटी सेल प्रमुख अमित मालवीय के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। एफआईआर बीजेपी कर्नाटक के सोशल मीडिया पेज पर पोस्ट किए गए एक वीडियो के संबंध में दर्ज की गई थी जिसमें कांग्रेस नेता राहुल गांधी और राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को मुसलमानों को बड़ा धन मुहैया कराते हुए दिखाया गया था। शनिवार, 4 मई को भाजपा की कर्नाटक इकाई द्वारा ट्वीट किए गए 17 सेकंड लंबे एनिमेटेड वीडियो में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और सिद्धारमैया द्वारा एक पक्षी के घोंसले पर श्मुस्लिमश लिखा अंडा डालते हुए दिखाया गया है। अंडे फूटने के बाद, राहुल गांधी मुस्लिम बच्चों को फंड खिलाते हैं, जबकि अन्य लोग इसके लिए प्रयास करते हैं। कर्नाटक कांग्रेस की कानूनी इकाई टीम के सदस्य रमेश बाबू ने शिकायत दर्ज कर मामले में कार्रवाई का आग्रह किया। इन आरोपों को लेकर एफआईआर का दायरा नड्डा, विजयेंद्र और मालवीय तक फैला हुआ है। इससे पहले, कर्नाटक कांग्रेस ने वीडियो के संबंध में राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पास शिकायत दर्ज की थी। एफआईआर दर्ज होने के बाद बोलते हुए राज्य के परिवहन मंत्री रामलिंगा रेड्डी ने कहा, बीजेपी के पास सामान्य ज्ञान नहीं है,

आज बाल ठाकरे होते तो इस अपमान का बदला... 26/11 वाले बयान पर सीएम शिंदे ने पूछा- फर्जी हिंदुत्ववादी चुप क्यों हैं?

एजेंसी।

मुम्बई मुख्यमंत्री ने कहा कि 26/11 हमले में शहीद पुलिसकर्मियों और मारे गए निर्दोष मुंबईकरों के संबंध में विजय वड्डेतिवार का बयान बेहद परेशान करने वाला और क्रोध पैदा करने वाला है। उन्होंने आलोचना करते हुए कहा कि विजय वड्डेतिवार भारत जोड़ो नहीं भारत तोड़ो यात्रा कर रहे राहुल गांधी के नारे के पीछे पागल हो गये हैं। लोकसभा चुनाव के दौरान विपक्ष के नेता विजय वड्डेतिवार के एक बयान से विवाद खड़ा हो गया है। महायुति द्वारा वड्डेतिवार की कड़ी आलोचना की जा रही है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे की आलोचना करते हुए कहा कि 26ध्11 हमले में शहीद पुलिसकर्मियों के बारे में विजय वड्डेतिवार के अमर्यादित बयान पर कांग्रेस की गोद में बैठे फर्जी हिंदुत्ववादी चुप क्यों हैं? ठाणे में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री ने कांग्रेस का हाथ, पाकिस्तान के साथ का नारा लगाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि 26ध्11 हमले में शहीद पुलिसकर्मियों और मारे गए निर्दोष मुंबईकरों के संबंध में विजय वड्डेतिवार का बयान बेहद परेशान करने वाला और क्रोध पैदा करने वाला है। उन्होंने आलोचना करते हुए कहा कि विजय वड्डेतिवार भारत जोड़ो नहीं भारत तोड़ो यात्रा कर रहे राहुल गांधी के नारे के पीछे पागल हो गये हैं। उन्होंने कहा कि आरएसएस कूट–कूट

कर राष्ट्रवाद से ओत–प्रोत संगठन है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वकील उज्वल निकम ने कई गद्दारों को फांसी दी। कांग्रेस की नीति पाकिस्तान को पकड़कर रखना है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस के एक नेता पाकिस्तान के बयान के पक्ष में बयान दे रहे हैं। वोटों की कमी को लेकर कांग्रेस ने भी ऐसे ही आरोप लगाए थे। मुख्यमंत्री ने उबाथा से कहा कि उनकी गोद में बैठते समय उन्हें अपने शरीर की नहीं, बल्कि कम से कम शर्म आनी चाहिए थी। नकली हिंदुत्व, मैं हिंदू हूं, मैं आदमी हूं कह देने से कोई हिंदू नहीं हो जाता। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज अगर हिंदू हृदय सम्राट बाला साहब ठाकरे होते तो उनकी खूब धुलाई होती। लोग इस अपमान का बदला लिये बिना चौन से नहीं बैठेंगे।

तमिलनाडु में बेहद दर्दनाक हादसा! कन्नियाकुमारी तट के पास 5 मेडिकल छात्र समुद्र में डूब गए

एजेंसी। तमिलनाडु

मिलनाडु में शहर के तट के पास समुद्र में डूब गए। पीड़ित, जिनमें दो महिलाएँ भी शामिल थीं, अपने पाठ्यक्रम के अंतिम सप्ताह में थे। वे कन्नियाकुमारी में बंद एक निजी समुद्र तट पर तैर रहे थे।तमिलनाडु के कन्नियाकुमारी तट के पास 5 मेडिकल छात्र समुद्र में डूब गए। घटनाओं के एक दुखद मोड़ में, पांच मेडिकल छात्र, जो एक शादी में शामिल होने के लिए कन्नियाकुमारी गए थे, सोमवार को तमिलनाडु में शहर के तट के पास समुद्र में डूब गए।

पीड़ित, जिनमें दो महिलाएँ भी शामिल थीं, अपने पाठ्यक्रम के अंतिम सप्ताह में थे। वे कन्नियाकुमारी में बंद एक निजी समुद्र तट पर तैर रहे थे। एनडीटीवी ने कन्नियाकुमारी जिले के पुलिस अधीक्षक ई सुंदरवथानम के हवाले से कहा कि छात्र नारियल के पेड़ों से होते हुए बंद लेमुर समुद्र तट तक पहुंचे थे। उन्होंने बताया कि समुद्र की उथल–पुथल के कारण समुद्र तट को बंद कर दिया गया और पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, पीड़ित तिरुचिरापल्ली के एक लोकप्रिय मेडिकल कॉलेज के एक बड़े समूह का हिस्सा थे जो रविवार को एक शादी में शामिल होने के लिए कन्नियाकुमारी आए थे। रिपोर्टों से पता चलता है कि छात्रों ने शहर का पता लगाने के लिए छोटे समूह बनाए और कन्नियाकुमारी के विभिन्न हिस्सों की ओर प्रस्थान किया।मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि मृतकों की पहचान कन्नियाकुमारी के सर्वदर्शित, डिंडीगुल के प्रवीण सैम, तंजावुर के चारुकावी, नेवेली के गायथिरी और आंध्र प्रदेश के वेंकटेश के रूप में हुई है। तीन महिला छात्र, जो प्रशिक्षु थीं, को बचाया गया और असारीपल्लम मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया।

आज भारत की तरफ कोई आंख नहीं उठा सकता, ये है मोदी की गारंटी– मुख्यमंत्री योगी

उन्नाव लखनऊ । कांग्रेस और सपा का इतिहास प्रभु राम का विरोध करने वाला रहा है। कांग्रेस कहती थी कि प्रभु राम हुए ही नहीं जबकि सपा कहती थी कि अयोध्या में एक भी परिंदा पर नहीं मार सकता है। यह इनका दोहरा चरित्र है। ऐसे में आप सभी को इन पर कभी विश्वास नहीं करना है। देश को सशक्त, समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित बनाने के लिए तीसरी बार फिर से मोदी सरकार बनानी है। अब तक दो चरणों में 191 सीटों पर मतदान हो चुका हैं। यहां पर लोगों के मन में मोदी सरकार को दोबारा लाने के लिए एक नई उत्सुकता देखने को मिली है। यह अचानक नहीं हुआ बल्कि पिछले 10 वर्षों में देश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा जो परिवर्तन किया गया है, यह इसी का नतीजा है। हम अगर वर्ष 2014 से पहले और बाद के कार्यों की तुलना करें तो जमीन–आसमान का अंतर नजर आएगा। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को उन्नाव लोकसभा क्षेत्र में जनसभा को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान उन्होंने लोकसभा प्रत्याशी और सांसद साक्षी महाराज के पक्ष में वोट की अपील की।हम गौकशी बर्दाश्त नहीं कर सकते

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि समाजवादी पार्टी अपने शासनकाल में आतंकवादियों के मुकदमे वापस ले रही थी। इन लोगों ने अयोध्या, रामपुर में सीआरपीएफ कैंप, काशी में संकटमोचन मंदिर, लखनऊ, अयोध्या और वाराणसी की कचहरी पर हमला करने वाले आतंकियों के मुकदमों को वापस लेने का प्रयास किया था। इस पर न्यायालय ने तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा था कि आज आप इनके मुकदमे वापस लेने की बात कह रहे हैं और कल इन्हें पद्म पुरस्कार से नवाजेंगे। इसके बाद न्यायालय ने समाजवादी पार्टी को रोका था। सरकार का यह कृत्य खतरनाक व निंदनीय है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अयोध्या में जहां एक ओर रामलला विराजमान हो गए हैं, वहीं दूसरी ओर बड़े–बड़े माफिया की राम नाम सत्य की यात्रा निकल रही है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि इंडी गठबंधन के मेनिफेस्टो में अल्पसंख्यकों को खाने पीने की पूरी स्वतंत्रता देने की बात कही गयी है। यह जनता को नहीं बता रहे हैं कि ऐसा कौन सा खानपान है जो बहुसंख्यक समाज नापसंद करता है। दरअसल, बहुसंख्यक समाज गौ माता की पूजा करता है और वह गौकशी को बर्दाश्त नहीं कर सकता है। वहीं अल्पसंख्यक समाज गौमांस को पंसद करता है। ऐसे में हम किसी की रुचि के अनुसार खान–पान की स्वतंत्रता कतई नहीं देंगे। इसके लिये चाहे हमे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।कश्मीर में धारा 370 समाप्त कर दुनिया को बताया देश में है सशक्त सरकारमुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने अपील की कि आतंकवादियों के समर्थक और राम का अपमान करने वालों को वोट नहीं देना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीर में धारा 370 समाप्त करके दुनिया को बता दिया कि देश में सशक्त और दृढ़ इच्छा रखने वाली सरकार है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली मोदी सरकार ही ऐसे कड़े कदम उठा सकती है, जो पिछली सरकारें नहीं कर सकीं। कांग्रेस और इंडी गठबंधन के लोग देशवासियों को न सम्मान दिला सकते हैं और न ही सुरक्षा दे सकते हैं। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि मोदी सरकार ने दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ाने के साथ नए भारत और उसकी सोच को साफ कर दिया है। अब भारत की तरफ कोई भी आंख उठाकर नहीं देख सकता है। यही मोदी की गारंटी है। उन्होंने कांग्रेस पर करारा हमला बोलते हुए कहा कि विनाश काले विपरीत बुद्धि यही कांग्रेस का हाल है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने जीवन भर पाप किया। उन्हे अब जाते–जाते अच्छे काम करने चाहिये, लेकिन वह जाते–जाते भी अपना नरक बिगाड़ना चाहते हैं। मुख्यमंत्री ने वोटिंग की अपील करते हुए कहा कि हमें अति आत्मविश्वास से बचना होगा। 13 मई को भीषण गर्मी होगी, लेकिन उस दौरान हम सभी को अपना दायित्व निभाना है। हम सभी को पहले मतदान फिर जलपान को आत्मसात करते हुए अपने साथ दो और परिवारों को मतदान के लिए साथ लेकर जाना है। कार्यक्रम में विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित, मंत्री दया शंकर सिंह, विधायक आशुतोष शुक्ला, पंकज गुप्ता, बृजेश रावत, बंबालाल दिवाकर,

अबकी बार–400 पार' में उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा योगदान: मुख्यमंत्री

हरदोई/लखनऊ(आरएनएस)। अपने शासनकाल में समाजवादी पार्टी आतंकवादियों के मुकदमों को वापस लेने में रूचि लेती थी। इन लोगों ने अयोध्या, रामपुर में सीआरपीएफ कैंप, काशी में संकटमोचन मंदिर, लखनऊ, अयोध्या और वाराणसी की कचहरी पर हमला करने वाले आतंकियों के मुकदमों को वापस लेने का प्रयास किया था, तब माननीय हाईकोर्ट ने कहा था कि आज आतंकियों के मुकदमे वापस ले रहे हो, कल इन्हें पद्म पुरस्कार से नवाजोगे। सरकार का यह कृत्य खतरनाक व निंदनीय है। कोर्ट ने सपा को कंडम किया था। मुख्यमंत्री ने अपील की कि आतंकवादियों की समर्थक सपा और राम का अपमान करने वालों को वोट नहीं देना है।उक्त बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहीं। मुख्यमंत्री योगी ने मिश्रिख से भाजपा सांसद व प्रत्याशी अशोक रावत के लिए रविवार को मल्लावां, हरदोई में जनसभा कर वोट देने की अपील की। मुख्यमंत्री ने भीषण गर्मी में पहुंचे लोगों का अभिवादन किया और कहा कि विधानसभा चुनाव और 2019 में महागठबंधन के बाद भी भाजपा प्रत्याशियों को आमजन का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था।'अबकी बार–400 पार' में सबसे बड़ा योगदान उत्तर प्रदेश कामुख्यमंत्री ने जनता से अनुरोध किया कि नए भारत के निर्माण में हम भी सहभागी बनें। दो चरणों के चुनाव ने साबित कर दिया कि 'अबकी बार–400 पार' का लक्ष्य प्राप्त होगा और इसमें सबसे बड़ा योगदान उत्तर प्रदेश का होगा। 10 वर्ष में देश में व्यापक परिवर्तन हुआ है, इसलिए आमजन फिर से पीएम मोदी को चुनना चाहता है। हरदोई व लखनऊ के बीच 1000 एकड़ क्षेत्रफल में नए अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त पीएम श्री टेक्सटाइल्स पार्क बनने जा रहा है। इसमें हजारों युवाओं को नौकरी मिलेगी। एक जिला, एक मेडिकल कॉलेज का उपहार भी इस जनपद को प्राप्त हो चुका है। हरदोई व सीतापुर में बने सर्वाधिक आवास–शौचालय

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि नए भारत में नई विकास यात्रा चल रही है। 1947 तक जितने हाइवे बने, मोदी जी के नेतृत्व में उससे दोगुने हाइवे 10 वर्ष में बन गए हैं। दोगुने एयरपोर्ट बन गए हैं। कांग्रेस ने सिर्फ एक एम्स बनाया, छह एम्स अटल जी और 15 एम्स मोदी जी ने बनवाए। दस वर्ष में दोगुने विश्वविद्यालय बन गए। यह विकास की नई गाथा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सपा शासन में यह क्षेत्र हो या अन्य क्षेत्र, लोग भूख से मरते थे। पाकिस्तान का राग अलापने वालों को बताना चाहिए कि वहां के 23–24 करोड़ लोगों को दो जून की रोटी नहीं मिल रही है और यहां 80 करोड़ लोगों को फ्री में राशन मिल रहा है। सबसे अधिक शौचालय, पीएम आवास हरदोई व सीतापुर में बने हैं। बचे लोगों को भी पांच वर्ष में आवास मिलेगा।जिस दिन गंगा एक्सप्रेसवे बन जाएगा, उस दिन हरदोई की गिनती विकसित जनपद में होगीमुख्यमंत्री योगी ने कहा कि एक तरफ मोदी के नेतृत्व में नया भारत है, जिसमें सुरक्षा, सम्मान, गरीब कल्याण व आस्था का सम्मान भी है। डबल इंजन सरकार में अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो चुका है। जो लोग पांच– सात साल पहले गए होंगे, अब जाने पर उन्हें नई अयोध्या के दर्शन होंगे। 500 वर्ष बाद अयोध्या में रामलला ने होली भी खेली और जन्मोत्सव भी मनाया। सूर्य तिलक से भगवान राम का अभिषेक भी हुआ। अब भारत में विकास, विरासत व जनविश्वास भी है। समृद्धि के लिए नए कार्य हो रहे हैं। गंगा एक्सप्रेसवे का निर्माण तेजी से चल रहा है, जिस दिन यह बन जाएगा, हरदोई का कायाकल्प हो जाएगा और इसकी गिनती विकसित जनपद में होगी। लाखों नौजवानों को नौकरी व रोजगार मिलेगा।प्रधानमंत्री मोदी ने दिया तीन करोड़ ड्रोन दीदी बनाने का लक्ष्य मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस, सपा–बसपा शासन में गरीब भूखों मरता था। ठंड में ठिठुरता था, स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में दम तोड़ता था। इनकी संवेदना गरीब के प्रति नहीं होती थी। उन्होंने आरोप लगाया कि जब इन्हें लगा कि जनता बैरंग करने जा रही है तो इन लोगों ने सेंध लगानी शुरू कर दी है। यह अपने घोषणा पत्र में कहते हैं कि गठबंधन सरकार आएगी तो पिछड़ी, अनुसूचित जाति–जनजाति के आरक्षण में से एक हिस्सा मुसलमानों को दे देंगे। यह कतई स्वीकार नहीं है। इन पार्टियों ने बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का अपमान किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तीन करोड़ ड्रोन दीदी बनाने का लक्ष्य दिया है। यह कार्य भी प्रारंभ हो गया है। हम इन्हें लखपति दीदी बनाएंगे। जनसभा में योगी सरकार के मंत्री नितिन अग्रवाल, रजनी तिवारी, विधायक आशीष सिंह आशु, रामपाल वर्मा, अलका सिंह अर्कवंशी, माधवेंद्र प्रताप सिंह, श्याम प्रकाश, प्रभाष कुमार, राहुल बच्चा सोनकर, विधान परिषद सदस्य अशोक अग्रवाल, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती वर्मा, भाजपा के जिलाध्यक्ष अजीत सिंह आदि मौजूद रहे।

नाबालिक साली को भगा ले गया जीजा, आपहरण के आरोप में पुलिस ने भेजा जेल

प्रतापगढ़, कुण्डा (आरएनएस)। नाबालिक साली को भगाने के आरोप में पुलिस ने जीजा को गिरफ्तार कर सोमवार को जेल भेज दिया। कुण्डा थाना क्षेत्र के महमदपुर बरई काजीपुर निवासी ओम प्रकाश पुत्र राम आसरे की शादी थाना क्षेत्र के तिलौरी बिक्रमपुर गॉव में हुई थी। शादी के दो वर्ष बाद पत्नी की मौत हो गई। इस बीच ओम प्रकाश अपनी ससुराल तिलौरी बिक्रमपुर आता जाता रहा। इस दौरान ओम प्रकाश की अपनी नाबालिक साली से प्रेम हो गया। परिजनों को बिना बताए पिछले माह 28 अप्रैल को ओम प्रकाश अपनी साली को बिहार राज्य के पटना भगा ले गया। युवती के परिजनों ने काफी खोजबीन किया। बाद में उन्हें पता चला कि उन्हीं के घर का दामाद युवती को भगा ले गया। युवती के परिजनों ने कुण्डा कोतवाली में दामाद ओम प्रकाश के खिलाफ युवती के अपहरण समेत विभिन्न धाराओ में मुकदमा दर्ज कराया। कुण्डा कोतवाल सत्येन्द्र सिंह ने बताया कि सोमवार को मुखबिर की सूचना पर घर आए ओम प्रकाश को दबोच कर जेल भेज दिया।

दो गुटों में हुई हिंसक घटना में युवक के मौत के मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

प्रतापगढ़(आरएनएस)। बाघराय थाना क्षेत्र के काशीपुर डुबकी गांव में बीते शुक्रवार को पुरानी रंजिस को लेकर दो गुटों के बीच हिंसक झड़प हुई थी। जिसमें जमकर धारदार हथियार चले थे। प्री प्लान के तहत हुई हिंसक घटना में कुल्हाड़ी के हमले से एक युवक की मौत हो गई थी। दोनों तरफ से कई लोग घायल हुए थे। जिसमें कुछ का इलाज प्रयागराज व कुछ का जिले के राजा प्रताप बहादुर मेडिकल कालेज में चल रहा है। दोनों तरफ से बाघराय थाने में गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ है। घटना को देखते हुए गॉव में पुलिस फोर्स तैनात की गई है। थाने के दरोगा दिनेश कुमार व देवेन्द्र पाठक की टीम ने घटना में शामिल निशांत तिवारी पुत्र फत्ते तिवरी को सोमवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

प्रेक्षक ने लोकसभा चुनाव तैयारियों का लिया जायजा, प्रमुख स्थलों का किया निरीक्षण, दिए निर्देश

प्रतापगढ़(आरएनएस)। चुनाव आयोग की तरफ से भेजे गये प्रेक्षक आईएएस पवन कुमार मालापति रविवार की दोपहर आते ही अधिकारियों से चुनाव तैयारियों के संबंध में जानकारी ली। सोमवार को डीएम संजीव रंजन, एसपी सतपाल अंतिल, सीडीओ नवनीत सेहरा समेत जिले के प्रमुख अधिकारियों के साथ चुनाव के लिए बनाए गये प्रमुख स्थलों का निरीक्षण किया। प्रेक्षक मालापति ने अधिकारियों के साथ चुनाव सेल का निरीक्षण किया। चुनाव संबंधी कार्यों की समीक्षा की। अभिलेखों को देखा और जरूरी निर्देश दिए। इसके बाद प्रेक्षक ने सदल ब्लाक में बने कंट्रोल रूम एवं मीडिया सर्टिफिकेशन एंड मानीटरिंग सेल का निरीक्षण किया और तैनात कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए। अंत में प्रेक्षक ने डीएम, एसपी, सीडीओ तथा अन्य अधिकारियों के लाव लश्कर के साथ पोलिंग पार्टी रवानगी स्थल कोतवाली देहात के एटीएल ग्राउण्ड का निरीक्षण किया। वहॉ उन्होंने कर्मचारियों आदि की सुविधा के लिए

राष्ट्रनायकों को अपमानित करने की सपा और कांग्रेस की पुरानी नीति है –भूपेन्द्र सिंह चौधरी

लखनऊ(आरएनएस) । भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने रविवार को कहा कि मैनपुरी में सपा प्रमुख अखिलेश द्वारा डिंपल यादव के प्रचार के लिए हुए रोडशो में जिस प्रकार सपा कार्यकर्ताओं द्वारा महाराणा प्रताप जी का अनादर किया गया वह नाकाबिले बर्दाश्त है। उन्होंने यह भी कहा कि सपा प्रमुख की उपस्थिति में जिस प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं उनकी दिवंगत माता के प्रति जो अपमानजनक टिप्पणी की गई उस पर भी अखिलेश यादव को माफी मांगनी चाहिए। सपा कार्यकर्ताओं की यह हरकत उनकी पार्टी की रीति और नीति की परिचायक है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रनायकों को अपमानित करने की सपा और कांग्रेस की पुरानी नीति है। महाराणा प्रताप ने भारत की अस्मिता और मान सम्मान की रक्षा के लिए मुगलों से बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी थीं। उन्होंने घास की रोटियाँ खाना स्वीकार किया लेकिन मुगलों के आगे नहीं झुके। उन्होंने मुगलों की पराधीनता स्वीकार नहीं की, लेकिन अल्पसंख्यक तुष्टिकरण और वोट बैंक के लालच में सपा के नेता और कार्यकर्ता राणा प्रताप को भी अपमानित करने से नहीं चुके वह भी पार्टी मुखिया अखिलेश यादव की मौजूदगी में। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के साथ तुष्टिकरण की अंधी रेस में सपा कार्यकर्ताओं की यह हरकत निंदनीय है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने रोडशो के दौरान इस कृत्य को रोकने का भी प्रयास नहीं किया गया। जो यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रत्येक महाराणा प्रताप के प्रति वे क्या भाव रखते हैं। अपने इस कृत्य के लिए भी सपा प्रमुख को अविलंब माफी माँगनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि रोडशो में उनके समर्थकों द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीके प्रति अमर्यादित शब्दावली का इस्तेमाल किया गया। उनकी दिवंगत मां के प्रति भी अपशब्द कहे गये वह किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं हैं। सपा प्रमुख को अपने कार्यकर्ताओं के आचरण पर संपूर्ण देश से माफी माँगनी चाहिए। यह भी कहा कि महलों में रहने वाले शहजादे की यह नफरत गरीबी और पिछड़े समाज से आने वाले पीएम मोदी जी के प्रति ही नहीं है, बल्कि वे हर उस गरीब और पिछड़े तबके के व्यक्ति के प्रति उनकी घृणा को दर्शाता है जो समाज का नेतृत्व करना चाहता है। गरीबी और पिछड़ेपन से निकलकर मुख्यधारा में आने का सपना संजोये है। उन्होंने कहा कि सपा और उसके नेता पीडीए की बात करते हैं लेकिन पिछड़ों और दलितों के मान सम्मान और स्वाभिमान के संरक्षण के लिए काम करने वाले मोदी जी से नफरत करते हैं। इनके लिए पिछड़ों का कल्याण भी केवल पारिवारिक व्यक्तियों का विकास ही है। कहा कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के नेताओं द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लगातार अपमानित कर रहे हैं। निजी कटाक्ष कर रहे हैं, गालियाँ दे रहे हैं जो उनकी हताशा और निराशा को प्रकट करता है।

क्रिकेटर रिंकू सिंह, दृष्टि सामाजिक संस्थान के विशेष बच्चों से मिले

उत्तर प्रदेश डेस्क लखनऊ । क्रिकेटर रिंकू सिंह ने कहा कि दोस्तों, फिर से एक खुशखबरी साझा कर रहा हूँ। आज, प्रसिद्ध और प्रतिभाशाली भारतीय क्रिकेटर रिंकू सिंह दृष्टि सामाजिक संस्थान के विशेष बच्चों से मिलने आये' और मुलाकात की। हमने रिंकू को इतना सरल, विनम्र और जमीन से जुड़ा हुआ पाया कि वह बच्चों के लिए उपहार लाए और गुप्त दान भी किया और अपने विशेष प्रशंसकों को ऑटोग्राफ भी दिए। उनके साथ कुछ अन्य राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेटर भी थे जिनमें स्पोर्ट्स गैलेक्सी बाय अखिल इंफ्रा के शिवम शर्मा और शुभांश कुमार भी शामिल थे। कार्यक्रम के कुछ वीडियो और तस्वीरें साझा कर रहा हूं।

कागजों के अभाव में नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा से वंचित हो रहे निरक्षर, दलित व वनवासी समुदाय के बच्चे

प्रतापगढ़(आरएनएस)। कागजों के अभाव में निरक्षर, दलित व वनवासी समुदाय के अधिकतर बच्चे निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा से वंचित हो रहे हैं। गॉवों में अभी भी बहुत से ऐसे गरीब हैं कि जिनको छत भी नसीब नहीं हुई है। ऐसे में सरकार की योजना हर बच्चे को निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा कागजी हवा हवाई साबित हो रही है। झुग्गी झोपड़ी में रह रहे ऐसे अभिभावकों के पास प्रवेश के लिए अनिवार्य कागज मसलन आधार कार्ड, बैंक पास बुक आदि अभी भी नहीं हैं। बेसिक शिक्षा परिषद के अधिकारियों का स्पष्ट आदेश है कि यदि बच्चे का आधार नहीं है तो उनके अभिभावक का आधार और बैंक पास बुक के आधार पर प्रवेश दिया जाए। प्रवेश के बाद बच्चों का आधार कार्ड बनवाने की जिम्मेदारी विद्यालय की होगी। जहॉ आज भी बहुतायत संख्या में बच्चों के आधार कार्ड नहीं हैं। इसके अलावा छः साल से नीचे के बच्चों का बेसिक स्कूलों में प्रवेश नहीं लेने का फरमान है। छः साल के नीचे के बच्चों को बालवाड़ी में प्रवेश कर उन्हें कक्षा एक स्तर तक तैयार करना है। जबकि हकीकत है कि स्कूलों में बालवाड़ी अभी संचालित नहीं है। इन परिस्थितियों में जो सक्षम अभिभावक हैं, प्राइवेट स्कूलों की तरफ रूख कर रहे हैं। जहॉ तीन साल के बच्चों का प्रवेश ने लिया जाता है। अध्यापकों के सामने सरकार की गाइड लाइन का पालन करने से स्कूलों में प्रवेश के लाले पड़ रहे हैं। दूसरी तरफ अधिकारियों का शिक्षकों पर नये बच्चों के प्रवेश का दबाव है। आधार कार्ड की अनिवार्यता से बेसिक स्कूलों में गरीबों के बच्चों का प्रवेश नहीं हो पा रहा है। जब दलित, आदिवासी बच्चों के अभिभावक ही शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं हैं या यूँ कहें कि उनके पास स्वयं के नागरिकता के जरूरी कागजात नहीं है तो वह अपने बच्चों के प्रति कितनी सजगता दिखाएंगे। स्कूल चलो अभियान के तहत जरूरी कागजातों के न होने से शिक्षकों के सामने बच्चों के प्रवेश की समस्या आ रही है। विशिष्ट बीटीसी शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष बेलखरनाथ बलाक के कांपा मधुपुर विद्यालय के शिक्षक डा0 विनोद त्रिपाठी अपनी टीम के साथ स्कूल चलो अभियान के तहत दलित व आदिवासी बस्तियों में गये। जहॉ उनके अभिभावकों व बच्चों के पास जरूरी कागजात नहीं मिले। ऐसी परिस्थित में बच्चे अनिवार्य शिक्षा से वंचित हो रहे हैं। डा0 त्रिपाठी ने बताया कि कागजों की अनिवार्यता के चलते अशिक्षित समुदाय के बच्चे बीच ही पढ़ाई छोडकर पलायन कर जाते हैं।

पिछड़ा वर्ग सम्मेलन व नुक्कड़ सभा के जरिये विनोद सोनकर ने मोदी सरकार की गिनाई उपलब्धियां

प्रतापगढ़, कुण्डा (आरएनएस) । कौशाम्बी के लोकसभा प्रत्याशी विनोद सोनकर सोमवार को बाबागंज विधानसभा क्षेत्र के कई इलाके में रैली मिकाली। ताजपुर व कोरैली गांव में पिछड़ा वर्ग सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि मेरे दस वर्षों में किये गए विकास कार्यों का नतीजा है कि जहां पर चार लोग मिलने से कतराते थे आज वही कुण्डा, बाबागंज में आप लोगों ने अपार स्नेह आशीर्वाद देकर मेरा उत्साह बढ़ा रहे है। 2014 व 2019 में कुण्डा बाबागंज विधानसभा से चुनाव हारा। कौशाम्बी के विधानसभा से चुनाव जीत कर सांसद बना। इस दौरान मैंने विकास कार्यों में कोई भेदभाव नही किया। कौशाम्बी जनपद के साथ कुण्डा बाबागंज में विकास कराया। आज आप सबका स्नेह मुझे जिस तरह से मिल रहा है उससे यह साफ हो गया कि इस बार कुण्डा बाबागंज में ऐतिहासिक मतों से कमल खिलने जा रहा

है। उन्होंने कहा कि आज नुक्कड़ सभा जन सभा मे बदल रही है। पिछले लोकसभा चुनाव में सपा प्रत्याशी चुनाव हारने के बाद पूरे पांच साल क्षेत्र में दिखाई नही पड़े। अब हो सकता है पुनः दिखाई पड़े। जनसभा के बाद भाजपा प्रत्याशी कियावा, बरई, सरियावा, कुण्डा में नुक्कड़ सभा को संबोधित किया। बतादें प्रतापगढ़ की दो विधानसभा कुण्डा और बाबागंज कौशाम्बी लोकसभा में आती हैं

दस साल की सरकार में भाजपा ने जनता के साथ सिर्फ भेदभाव किया– अखिलेश यादव

लखनऊ(आरएनएस)।समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि दस साल की सरकार में भाजपा ने जनता के साथ सिर्फ भेदभाव किया है। उद्योगपतियों का 16 लाख करोड़ का कर्ज माफ किया लेकिन किसानों की कोई मदद नहीं की। किसानों का कोई कर्ज माफ नहीं किया। भाजपा सरकार ने ऐसी नीति बनायी जिसमें पांच करोड़ रूपये से ज्यादा कर्ज लेने वाले उद्योगपतियों और व्यवसायियों के कर्ज माफ हो जाय। अखिलेश यादव ने कहा कि इस सरकार में लाखों करोड़ रूपये के कर्ज माफ कर दिए लेकिन हजार और लाख रूपये लोन लेने वाले किसानों को प्रताड़ित किया जाता है। भाजपा सरकार ने तीन काले कानून लाकर किसानों की जमीन और फसल उद्योगपतियों के हाथों में सौपने की साजिश रची। किसानों ने आंदोलन किया। हजारो किसान शहीद हुए। यूपी विधानसभा चुनाव में हार सामने देख भाजपा सरकार ने तीनों काले कानून वापस लिए लेकिन किसानों को फसलों के लिए एमएसपी का अधिकार नहीं दिया। भाजपा ने किसानों को अपमानित किया।रविवार को आगरा लोकसभा क्षेत्र के जलेसर में समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी श्री सुरेश चन्द्र कर्दम के समर्थन में आयोजित विशाल चुनावी जनसभा में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लोकसभा चुनाव में किसान, नौजवान, आम जनता भाजपा के खिलाफ है। जनता भाजपा के विरोध में वोट कर रही है। केन्द्र में इंडिया गठबंधन की सरकार आ रही है। इंडिया गठबंधन की सरकार बनते ही किसानों का सभी कर्ज माफ होगा। किसानों के फसलों को एमएसपी की गारन्टी का कानून बनाया जायेगा।कहा कि पहले, दूसरे चरण के बाद तीसरे चरण में भी भाजपा का सूपड़ा साफ होगा। पीडीए परिवार भाजपा की सरकार पलटने जा रहा है। देश में परिवर्तन होने जा रहा है। भाजपा से संविधान और लोकतंत्र को खतरा है। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा बाबा साहब के संविधान को बदलना चाहती है। बीजेपी सरकार संविधान और जनता के जान के पीछे पड़ी है। पिछड़े, दलितों के आरक्षण को समाप्त करना चाहती है। भाजपा ने बहुत अन्याय, अत्याचार किया है। इस सरकार ने जनता की कभी नहीं सुनी। देश की 140 करोड़ जनता पर अपने मनमाने फैसले थोपे हैं। सरकारी संस्थानों का निजीकरण किया। नोटबंदी की। व्यापारियों पर जीएसटी थोपा। जनता में भाजपा सरकार को लेकर बहुत नाराजगी है। महंगाई, बेरोजगारी चरम पर है। भाजपा सरकार ने हर चीज की महंगाई बढ़ा दी है। डीजल–पेट्रोल, रसोई गैस, रिफाइण्ड तेल, दाल, नमक, सब चीज के दाम बढ़ा दिए। इतनी महंगाई पहले कभी नहीं थी भाजपा ने जनता से वादे किए लेकिन महंगाई कम नहीं की। किसानों के साथ नौजवानों से झूठे वादे किये। हर साल 2 करोड़ नौकरी देने का वादा किया था लेकिन भाजपा सरकार के फैसलों से युवाओं की नौकरियां छिन गयी। बड़ी संख्या में युवा बेरोजगार हुए है। आज गांव–गांव में बड़ी संख्या में पढ़े लिखे युवा बेरोजगार हैंकहा कि इंडिया गठबंधन की सरकार सरकारी विभागों के रिक्त पदों को भरेगी। नौजवानों को तीस लाख नौकरियां देगी। भाजपा सरकार में भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक हुए। नौजवानों ने पढ़ाई में मेहनत की, पैसा खर्च किया, पेपर दिया लेकिन पेपर लीक हो गये। भाजपा ने नौजवानों का भविष्य बर्बाद कर दिया। सरकार ने जानबूझकर पेपर लीक कराये। सरकार नौकरी, आरक्षण नहीं देना चाहती है।

आईसीएसई की दसवीं परीक्षा में प्रखर श्रीवास्तव ने किया टाप

गुरूचरण कौर पब्लिक स्कूल के दसवीं कक्षा का शत–प्रतिशत रहा परीक्षाफल

सुलतानपुर(आरएनएस)। आईसीएसई बोर्ड की दसवीं कक्षा का परीक्षा फल सोमवार 6 मई को घोषित हुआ। शहर के गुरु चरण कौर पब्लिक स्कूल के 57 परीक्षार्थी शामिल हुए थे। जिसमें 32 छात्र व 25 यात्राएं थी। परीक्षाफल शत–प्रतिशत रहा।सभी छात्र – छात्राओं ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रखर श्रीवास्तव ने 98 अंक पाकर टाप किया। दूसरे स्थान पर हर्षी पाठक 96.4 व तीसरे स्थान पर अन्वेषण सिंह 96 अंकों के साथ टॉप 3 में शामिल हुई। स्कूल की प्रधानाचार्य तेजिंदर कौर व शिक्षकों ने बच्चों को मिठाई कराकर बधाई व आशीर्वाद दिया।

तकनीकी खराबी के कारण सीटी स्कैन बंद, अतिशीघ्र सेवाएं होगी बहाल: सीएमएस

सुल्तानपुर। तकनीकी खराबी आ जाने के चलते अमहट स्थित ट्रामा सेंटर के बगल सीटी स्कैन बंद कर दिया गया है। अस्पताल प्रशासन ने अतिशीघ्र सेवा बहाल के लिए सीटी स्कैन मशीन के इंजीनियरों से संपर्क स्थापित करते हुए अविलंब मशीन को दुरूस्त करने के लिए कहा है। मुख्य चिकित्साधिक्षक डॉ.एसके गोयल ने बताया कि मेडिकल कॉलेज के सभी डॉक्टरों को सूचित कर दिया गया है कि अभी मरीजों को सीटी स्कैन सेंटर ना भेजे, उन्होनें कहाकि हमारा प्रयास है कि मरीज सफर ना करे, इसलिए मशीन को पुनः दुरुस्त करवा कर मरीजों की सेवा में बहाल करवाया जा सके। सीएमएस ने बताया कि अतिशीघ्र एक्पर्ट सेंटर पहुंचकर मरीजों को होने वाली असुविधा को दूर करेगें।

वार्षिक परीक्षा पुरस्कार वितरण में बच्चे पुरस्कृत

चांदा सुलतानपुर(आरएनएस)। इंद्रा अकादमी वनहरा शिवपुर में आज बच्चों को वार्षिक परीक्षा पुरस्कार वितरित किया गया। बच्चों का उत्साहवर्धन बढ़ाने के लिए कक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले छात्र एवं छात्राओं को विद्यालय के प्रबंधक जितेंद्र उपाध्याय द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं मेडल प्रदान किया गया। स्कूल के प्रधानाचार्य आलोक जायसवाल ने सभी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सभी लोग अपने जीवन में अच्छे संस्कार के साथ निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ते रहें ,साथ ही उन्होंने बच्चों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं भी दी। इस मौके पर विद्यालय के समस्त अध्यापक अध्यापिका एवं स्थानीय लोग भी मौजूद रहे।

ब्लू बेल्स पब्लिक स्कूल में आम के पौधे का रोपण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया

झांसी! आज दिनांक 22 अप्रैल 2024 को पृथ्वी दिवस के अवसर पर प्रभागीय वनाधिकारी झांसी द्वारा ब्लू बेल्स पब्लिक स्कूल झांसी में आम्रपाली आम के पौधे का रोपण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का संचालन अमित शर्मा वन दरोगा द्वारा किया गया जिसमें स्कूली बच्चों बच्चों को चसंदमज अे चसेंजपबे के संबंध में जागरूक किया। इस मौके पर ब्लू बेल्स पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य नितिन विलियम्स एवं क्षेत्रीय वन अधिकारी झांसी आर0एन0 यादव, उप क्षेत्रीय वन अधिकारी तेज प्रताप सिंह, श्री आयुष रविंद्र भारती डीपीओ जिला गंगा समिति, वन दरोगा महेश कुमार, श्री लक्ष्मण यादव कौशलेंद्र सिंह तोमर, वनरक्षक पुष्पेंद्र, मनीषा, अब्दुल हबीब आदि अन्य वनकर्मी उपस्थित रहे।

शिक्षा के बिना जीवन अधूरा- रोहित सावला

झांसी। शिक्षा मनुष्य के अंग का गहना होता है शिक्षा के बिना हमारा जीवन अधूरा है और ना ही हम शिक्षा के बिना समाज में सम्मान पा सकते हैं आज की दौड़ में प्रत्येक मनुष्य को शिक्षित होना बेहद आवश्यक है क्योंकि जब तक बच्चा शिक्षित नहीं होगा तब तक वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होगा और यदि उसे अपने अधिकार ही नहीं पता होंगे तो वह तरक्की कैसे करेगा और देश कैसे बढ़ेगा इसलिए शिक्षा दीप ही जीवन में उजाला ला सकता है और यह तभी संभव होगा जब हर एक माता–पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजेंगे तभी बच्चा शिष्टाचार और संस्कार की शिक्षा प्राप्त कर सकता है यह बात आज झांसी के वार्ड नंबर 42 सागर गेट में संचालित श्री रामराजा सरकार शिक्षा सेवा समिति झांसी (समाज सेवी संस्था) द्वारा संचालित प्रशिक्षण केंद्र पर करियर सेमिनार के मौके पर संस्था के संस्थापक ध्अध्यक्ष रोहित सावला युवा समाजसेवी ने मौजूद अभिभावकों से कहीं संस्था की ओर से झांसी महानगर के सागर गेट में स्थापित किए गए निरूशुल्क प्रशिक्षण केंद्र में स्कूली छात्राओं और महिलाओं को स्वावलंबी बनाए जाने की पहल में मेहंदी ,सिलाई कढ़ाई, पेंटिंग, संगीत, ब्यूटी पार्लर नृत्य ,कुकिंग ,ज्वेलरी मेकिंग, कंप्यूटर, इंग्लिश स्पीकिंग आदि का निरूशुल्क

प्रशिक्षण दिया जा रहा है उसका आप सभी अपने बच्चों को लाभ दिलाए और खुद भी प्राप्त करें क्योंकि शिक्षा की कोई उम्र नहीं होती है ना ही सीमा होती है हर एक व्यक्ति कभी भी किसी से भी शिक्षा प्राप्त कर सकता है छोटा व्यक्ति भी किसी बड़े व्यक्ति को शिक्षा दे सकता है इसमें किसी भी प्रकार की हमको शर्म नहीं करनी चाहिए यदि कोई छोटा व्यक्ति हमें कुछ सिखा रहा है तो हमें सीख लेनी चाहिए क्योंकि हर एक व्यक्ति में एक विशेष गुण होता है इसलिए हमें कभी भी कोई भी नई चीज सीखने में शर्म नहीं करनी चाहिए और हमें जल्दी ही सीख लेना चाहिए जिससे हम समाज में आगे बढ़ सके इस मौके पर हाई स्कूल व इंटरमीडिएट में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया इस मौके पर गीता राय एक बार निर्मला रायकवार ,जयंती देवी, ज्योति सरगैया, नेहा पाटकर ,पूजा वर्मा कौशिकी राय, कोशिकीय राय ,रामकुमारी कुशवाहा ,डोली कुशवाहा ,सोनाली कुशवाहा ,लता कुशवाहा ,सीमा रजक ,अनीता चौरसिया ,मुस्कान चौरसिया संगीता जोशी ,संध्या पांचाल सुनीता सोनी नेहा सोनी निशा सोनी ,रेखा परिहार ,ज्योति रजक राधा प्रजापति पूनम शर्मा, अनीता सोनी, संगीता प्रभा, संध्या राय ,ललिता लोहिया दीपाली रैकवार ,मंजू रैकवार बबली रैकवार ,नैना राजपूत, प्रभा राजपूत ,लक्ष्मी राजपूत, सुधा प्रजापति, यामिनी प्रजापति आदि मौजूद रहें। संचालन केंद्र प्रभारी विजेता रायकवार ने व आभार प्रकट केंद्र व्यवस्थापक काजल रायकवार ने किया किया।

संविधान को बचाना है तो जाति, धर्म से हट कर इंडिया गठबंधन को वोट और सपोर्ट करे -अनीस मंसूरी

संजीव कुमार शुक्ला फिरोजाबाद ,सिटी पैलेस मैरिज हाल कश्मीरी गेट चौराहा में पसमांदा मुस्लिम समाज की जनपद के पदाधिकारीगणों की विशेष बैठक बुलाई गयी जिस में फिरोजाबाद जनपद के विभिन्न विधानसभा से जिम्मेदार लोगों ने शिरकत की।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री माननीय अनीस मंसूरी जी थे। अनीस मंसूरी इंडिया गठबंधन के फिरोजाबाद लोक सभा के प्रत्याशी अक्षय यादव के समर्थन में प्रेस को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश की जनता वर्तमान केंद्र सरकार से ऊब चुकी है, युवाओ को पिछले 10 वर्षो से निराशा ही का सामना करना पड़ा है,किसान परेशान हैं।अनीस मंसूरी ने इंडिया गठबंधन का जिक्र करते हुए कहा कि बसपा इंडिया गठबंधन को हराने के लिए जहाँ मजबूती के साथ सपा और कॉग्रेस के प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं वहाँ बसपा ने मुस्लिम प्रत्याशी उतार कर क्या सन्देशा देना चाहती है ? पिछले 10 वर्षों में बसपा द्वारा जो किया गाया उससे सभी समाज के लोग भाली भांति जानते हैं बसपा के मुस्लिम प्रत्याशियों को इस्लाम कि दुहाई से काम नहीं चलेगा,अनीस मंसूरी ने कहा कि संविधान को बचाना है तो जाति, धर्म से हट कर इंडिया गठबंधन को वोट और सपोर्ट करना होगा।इधर एक हफ्ते से अनीस मंसूरी साहब मुस्लिम समाज के ग्रामों, कसबों और शहर के मुहल्लों में पसमांदा मुस्लिम समाज के पदाधिकारियो सहित मुस्लिम समाज का वोट इंडिया गठबंधन को दिलाने के लिए पसमांदा मुस्लिम समाज अपनों के बीच जाकर अपील कर रहे है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व विधायक पुत्र आसिफ नसीर, कारी शफीक आलम कादरी, इलियास मंसूरी प्रधान मोहम्मद पुर,मौलाना इलियास मंसूरी कार्यालय सचिव, जुम्मन खां अब्बासी, अजब सिंह जाटव, अशोक कुमार कुशवाहा,टूंडला, आसिफ सिद्दीकी, सभासद, नसीर कादरी,सलीम मंसूरी सपा नेता के आलावा भारी संख्या में लोग मौजूद थे।कार्यक्रम संयोजक सलमान मंसूरी ने आये हुए मेहमानों का शाल और माला पहना कर स्वागत किया।

अंडर करेंट दौडा रहे है बसपा प्रत्याशी, मदमस्त चाल में बढ़ रही है हाथी

सुल्तानपुर। हर घर से बर्तन लड़ने की आवाज आती ही रहती है, फिर चाहे परिवार हो या पार्टी दिख ही जाता है किससे कितना नाता है और कौन कितना किसके लिए कर रहा है, पता चल ही जाता है। बात कर रहे है गोरखपुर की साईकिल और सुल्तानपुर की हाथी मतलब साफ है पीडीए की खीचतान में कौन छिटक रहा है और कौन किसको अटक रहा है। इंडिया गठबंधन से राम भुआल निषाद तो बसपा से उदराज बर्मा मैदान में किस्मत आजमा रहे है। दोनो प्रत्याशी जीत के लिए कसरत करते दिखाई दे रहे है, परंतु बसपा की चाल और दिशा समझ से परे है तो वही इंडिया गठबंधन के कुछ लोग चंद्रकांता के यक्कू की भूमिका में दिख रहे है जो प्रत्याशी को ही गफलत में डालने के लिए काफी है। उधर हाथी मदमस्त चाल में झूमती हुई दिखाई दे रही है, तो दूसरी तरफ साईकिल रफ्तार भरने के लिए आतुर है, परंतु यहां भाजपा ने पूरे लोकसभा क्षेत्र में चौसर की ऐसी बिसात बिछा दी है। जिसे भेदना इंडिया गठबंधन और बसपा के लिए आसान नही है, भाजपा की तिकडीध में सासंद प्रतिनिधि रंजीत सिंह, दोस्तपुर ब्लाक प्रमुख प्रत्येश सिंह 'बंटी' और भाजपा मीडिया प्रभारी विजय रघुवंशी तथा ऐसे ही रणबांकुरों ने मैंदान सभांल रखा है। रंजीत सिंह ने पांच साल में खुद को साबित करने के लिए घर बार छोड़ सुल्तानपुर की जनता की सेवा में रहे, तो बंटी सिंह ने भाजपा को बढाने के लिए लोगों को जोड़ने का काम किया, दूसरी तरफ विजय रघुवंशी भाजपा के कसीदे गढ़ने और उसमें चाशनी भरने के लिए पहचाने जाते है। अब ऐसे में इंडिया गठबंधन और बसपा भाजपा को पिछाड़ने के लिए काफी मेहनत करने की जरूरत है, वर्ना फिर मौका पांच साल बाद ही आएगा। लेकिन फिर सोचने की बात होगी कि पांच साल बाद कौन राजा और कौन जोगी।

खाकी और खादी पत्रकारों का उत्पीड़न रोके नहीं तो ठीक नहीं होगा – कुशवाहा

जालौन ,ललितपुर , झांसी के पत्रकारों की आपात कालीन बैठक आयोजित

झांसी। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक जर्नलिस्ट एसोसिएशन की एक आपातकालीन बैठक होटल में जालौन ,ललितपुर , झांसी के पत्रकारों के तत्वाधान में आयोजित की गई। बैठक में एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरीश चंद्र कुशवाहा ने झांसी मंडल के पत्रकारों के उत्पीड़न को गंभीरता से लेते हुए कहा खाकी और खादी के लोग पत्रकारों के उत्पीड़न को गंभीरता से लें वरना उत्पीड़न को लेकर मुख्यमंत्री से शिकायत की जाएगी श्री कुशवाहा ने एसोसिएशन के 25 वे स्थापना दिवस को हर्षो उल्लास के साथ आयोजित किए जाने के लिए झांसी मुख्यालय पर 1 जून को भव्य आयोजन11 बजे से किए जाने के लिए एसोसिएशन के राष्ट्रीय सचिव एवं झांसी मंडल के संयोजक ज्ञानेश्वर कुशवाहा एवं एसोसिएशन के प्रदेश सचिव एवं झांसी मंडल के प्रभारी बालेंद्र गुप्ता तथा प्रांतीय सदस्य दीपक त्रिपाठी एवं जिला अध्यक्ष रामकृष्ण अकेला आदि के साथ रूपरेखा तय की गई।

प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक जर्नलिस्ट एसोसिएशन झांसी मंडल की अध्यक्षता करते हुए ज्ञानेश्वर कुशवाहा राष्ट्रीय सचिव ने झांसी जालौन ललितपुर के जिला अध्यक्षों को 20 मई तक जिला इकाई गठित करने के निर्देश दिए हैं श्री गुप्ता ने सभी जिला अध्यक्षों एवं एसोसिएशन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारी को अवगत कराया है कि वह झांसी पहुंचकर अपना परिचय पत्र प्राप्त कर ले उपरोक्त अवसर पर एसोसिएशन के प्रांतीय सचिव एवं झांसी मंडल के प्रभारी बालेंद्र गुप्ता ने सभी ज़िला अध्यक्षों से अपने–अपने जनपद से लगभग 25–25 पत्रकारों को 1 जून को एसोसिएशन के 25 वे स्थापना दिवस पर झांसी मुख्यालय पर आयोजित स्थापना दिवस एवं जनरलिस्ट सम्मान समारोह में उपस्थित होने के निर्देश जारी किए हैं श्री गुप्ता ने स्पष्ट कहा जो पदाधिकारी एसोसिएशन के स्थापना दिवस में झांसी नहीं पहुंचेगा और 20 मई तक जिला इकाई नहीं गठित करके देगा ऐसे सभी पदाधिकारी को राजधानी लखनऊ में प्रदेश अध्यक्ष को सूचित कर उनके स्थान पर नए पदाधिकारी का चयन किया जाएगा। झांसी मंडल के सभी पदाधिकारी को एसोसिएशन के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कुशवाहा ने आईडी कार्ड वितरण किया तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं पंडित गणेश शंकर विद्यार्थी अवार्ड से पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

आई.एस.सी. में 99.75 प्रतिशत एवं आई.सी.एस.ई में 99.80 प्रतिशत अंक अर्जित कर सी.एम.एस. छात्रों ने बनाया कीर्तिमान

सी.एम.एस. के 74 छात्रों के 99 प्रतिशत से अधिक अंक

लखनऊ, 6 मई। सिटी मोन्टेसरी स्कूल के सर्वाधिक 74 मेधावी छात्रों ने आई.एस.सी. एवं आई.सी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा में 99 प्रतिशत से लेकर 99.80 प्रतिशत तक अंक अर्जित कर एक बार फिर से नया कीर्तिमान स्थापित किया है। आई.एस.सी. (कक्षा–12) में सी.एम.एस. छात्राओं कनिष्का मित्तल, अर्चिता सिंह एवं सारिया खान ने 99.75 प्रतिशत अंक अर्जित कर इतिहास रचा है तो वहीं दूसरी ओर आई.सी.एस.ई (कक्षा–10) में सी.एम.एस. छात्र चन्द्रांश राय ने 99.80 प्रतिशत अंक अर्जित कर रिकार्ड कायम किया है। इन बोर्ड परीक्षा परिणामों में सी.एम.एस. छात्रों ने अभूतपूर्व प्रदर्शन कर लखनऊ का नाम पूरे देश में गौरवान्वित किया है और साबित कर दिया है कि गुणात्मक शिक्षा के क्षेत्र में सिटी मोन्टेसरी स्कूल सर्वश्रेष्ठ है।

इस वर्ष सी.एम.एस. से कुल 6818 छात्रों ने आई.एस.सी. एवं आई.सी.एस.ई. बोर्ड मे प्रतिभाग किया, जिसमें से 3791 (55.6 प्रतिशत) छात्रों ने 90 प्रतिशत से लेकर 99.80 प्रतिशत तक अंक अर्जित किये हैं जबकि 1409 अर्थात 20.7 प्रतिशत छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किये हैं। आई.एस.सी. (कक्षा–12) बोर्ड परिणाम में 99 प्रतिशत से लेकर 99.75 प्रतिशत तक अंक अर्जित करने वाले 17 मेधावी छात्रों में कनिष्का मित्तल, अर्चिता सिंह, सरिया खान, अन्वी श्रीवास्तव, शौर्य वर्मा, अभिनव रघुवंशी, प्रांजल कुमार गुप्ता, सौम्या शुक्ला, शगुन सिंह, तान्या वर्मा, अग्रिम देव शर्मा, अक्षत अवस्थी, प्रज्ञा दीक्षित, आनन्दिता त्रिपाठी, अबीहा आदिल, अपूर्वा सिंह एवं उत्कर्ष कनौजिया शामिल हैं।

इसी प्रकार, आई.सी.एस.ई (कक्षा–10) बोर्ड परिणाम में 99 प्रतिशत से लेकर 99.80 प्रतिशत अंक अर्जित करने वाले 57 मेधावी छात्रों में चन्द्रांश राय, काव्या विष्ट, भार्गवी सिंह, चिन्मय कृष्णा, ईशान्त अग्रवाल, मो. अयान, आर्या द्विवेदी, अर्जुन कृष्णा, उत्कर्ष सिंह, अमृत पाण्डेय, कृति श्रीवास्तसव, आर्ना वाजपेयी, अनुरुद्ध शर्मा, इबा शाहीन, शिवांश आनन्द, उन्नति वर्मा, यहवी मोहन, शुभ वर्मा, अलीजा सिद्दीकी, देवांशी वर्मा, सिद्धि विक्रम सिंह, आदित्य त्रिपाठी, आदित्य वर्मा, आद्या अग्रवाल, संकल्प मिश्रा, सारांश पाण्डेय, तेजस राज, अंश वर्मा, अन्वेषा मिश्रा, लोहेन्द्र प्रताप सिंह, ओशीन अग्रवाल, प्रशस्ति सिंह, विदिशा सिंह, श्रेयस अग्निहोत्री, आदित्य अग्रवाल, अथर्व शुक्ला, देवांश सिंह, संजीवनी कोमल, अर्चित सिंह, आशुतोष प्रताप सिंह, रिया पटेल, संस्कृति चंदेल, त्रिषा वर्मा, जयकृष्ण गुप्ता, पलक वर्मा, शिखर कुमार सिंह, अक्षत सारस्वत, अतिष्क श्रीवास्तव, रीत मिगलानी, रोही सचान, सैयद मोहम्मद शुभान, यशस्वी ओजस, अनुष्का सिंह, इशिति अरोड़ा, केशवी श्रीवास्तव, प्रणव उपाध्याय एवं कशिश सेवानी शामिल हैं।आई.सी.एस.ई. एवं आई.एस.सी. बोर्ड परीक्षा में 90 प्रतिशत से लेकर 99.80 प्रतिशत तक अंक अर्जित कर विद्यालय का नाम रोशन करने वाले सिटी मोन्टेसरी स्कूल के 3791 मेधावी छात्रों को मुख्य अतिथि श्री दुर्गा शंकर मिश्रा, आई.ए.एस., मुख्य सचिव, उ.प्र. कल 7 मई, मंगलवार को प्रातः

नहीं रहे इस्कॉन भारत के प्रमुख, परम पूज्य गुरु गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज जी

संजीव कुमार शुक्ला लखनऊ रूइस्कॉन मन्दिर अध्यक्ष श्रीमान अपरिमेय श्याम प्रभुजी ने बताया कि परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी जी महाराज का आविर्भाव(जन्म) 14 अगस्त 1944 को अन्नदा एकादशी के दिन हुआ था, महाराज जी श्रील प्रभुपाद जी के शिष्यों मे सबसे वरिष्ठ शिष्य थे, महाराज जी 1966 मे पेप्सीको कंपनी मे एशिया पैसेफिक देखते थे स 01 जून 1968 को महाराज जी की पहली मुलाकात श्रील प्रभुपाद से मॉंट्रीयल कनाडा मे हुयी थी स कनाडा मे मन्दिर अध्यक्ष द्वारा उन्हें श्रील प्रभुपाद जी के कमरे की साफ–सफाई कि सेवा दी गयी थी और वह सेवा महाराज जी ने बहुत अच्छे से की थी

और आगे भी सेवा करने की इच्छा श्रील प्रभुपाद जी से व्यक्त की, उनकी इच्छा और सेवा भाव को देखते हुए प्रभुपाद जी ने उन्हें निरंतर सेवाऐं दी स1974 मे श्रील प्रभुपाद जी महाराज को अपना पर्सनल सेक्रेटरी नियुक्त किया और भारत मे ळठ६ नियुक्त किया स महाराज जी ने प्रभुपाद जी के ग्रंथों का व्यापक रूप से प्रचार करते हुए सफलतापूर्वक वितरण कियास महाराज जी ने रसिया, अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन एवं कई अन्य देशों सहित भारतवर्ष मे कृष्ण भावना का व्यापक प्रचार–प्रसार किया स80 वर्ष की अवस्था मे आपने अंतिम समय तक प्रभुपाद जी के मिशन को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाते रहे समहाराज जी 02 मई 2024 को देहरादून स्नान करते समय फिसल गये थे और हार्ट अटैक भी हुआ, उनकी हालत गंभीर होने पर उन्हें पेस मेकर लगाया गया, स्टेन्ट डाले गये और अंततः सर्जरी की गयी और आज दिनांक 05 मई 2024 द्वादशी को प्रातः 08रू20 पर महाराज जी ने अंतिम श्वास ली और गोलोक धाम प्रस्थान किया सइस्कॉन मंदिर में शहर भर से आए भक्तों ने परम् पूज्य गोपालकृष्ण गोस्वामी महाराज जी को भावभीनी श्रद्धांजलि एवं पुष्पांजलि अर्पित की।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त महाविद्यालय में छात्रों को रोवर्स और रेंजर्स के बारे में जानकारी दी

झांसी! चिरगांव राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त महाविद्यालय चिरगांव में रोवर्स एंड रेंजर्स में प्रतिभागिता एवम् इसकी उपयोगिता पर छात्र–छात्राओं के मार्गदर्शन हेतु एक कार्यक्रम का आयोजन आई.क्यु ए. सी. विभाग द्वारा किया गया जिसमें मुख्य अतिथि स्काउट गाइड मंडल कमिश्नर प्रदीप कुमार गुप्ता ने छात्र–छात्राओं को रोवर्स एंड रेंजर्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं उससे होने वाले फायदे से छात्र–छात्राओं को अवगत कराया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय प्रबंधक डॉ वैभव गुप्ता ने सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामनाएं की अंत में आई क्यू ऐ सी निदेशक डॉक्टर प्रीति जैन ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया इस मौके पर,प्रबंध न्यासी डॉ अंजलि गुप्ता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ सुनील भटनागर डॉ. अशोक मुस्तरिया संजीव कुमार वीरेंद्र कुमार शरद गुप्ता सुनीता कृष्णा आदि उपस्थित रहे। अंत में आई. क्यु. ए. सी. निदेशक डॉ प्रीति जैन ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया

झांसी का लाल सौरभ अनान्द यूरोप दौरे पर दिखायेगा अपनी हॉकी का कमाल

झांसी! यूरोपीय दौरे के लिए हॉकी इंडिया की जूनियर पुरुष हॉकी टीम की घोषणा होते ही नगर के खेल प्रेमियों में खुशी की लहार दौड़ गई, क्योंकि झांसी के लाडले सौरभ आनंद को भारतीय टीम में जगह जो मिली है।सौरभ ने खेल विशेषज्ञ बृजेन्द्र यादव से बातचीत करते हुए कहा कि दूसरे देशों की टीमों के खिलाफ एक साथ खेलना शानदार होगा।यह दौरा एक शानदार अनुभव होगा और यह मूल्यांकन करने में बहुत मददगार होगा कि हम एक टीम और व्यक्तिगत खिलाड़ी के रूप में कहां खड़े हैं। यह हमारी ताकत का पता लगाने और हमें किन क्षेत्रों में सुधार करने की आवश्यकता है, इसका पता लगाने का एक शानदार तरीका होगा भारतीय टीम में चयन पर सौरभ नें माता पिता, झांसी के सभी हॉकी प्रेमियों और शुभचिन्तको के आशिर्वाद का ही परिणाम है कि आज फिर यूरोपीय दौर के लिए टीम इंडिया का हिस्सा बन पाया फोरवर्ड लाइन में सौरभ इससे पूर्व जूनियर विश्व कप और एशिया कप में भी भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व कर चुके है। उन्होंने कहा कि टीम के कोच जनार्दन जर्निलिस्ट और मो. इंतिखाब आलम सर के द्वारा बनाई रणनीति के आधार पर ही इस दौरे के मैचों में हम सब बेहतर प्रदर्शन करेंगे

दिन दहाड़े ट्रांसफार्मर में लगी आग नागरिक सुरक्षा के वार्डेनो ने दमकल की टीम के साथ बुझाई आग

झांसी ! आज उस समय अफरा तफरी मच गई जब दिनदहाड़े कोतवाली की ढाल पर पीसी गुप्ता के बगल में ट्रांसफार्मर में आग लग गई दिन दहाड़े ट्रांसफर में आग लगने के चलते स्थानीय लोगों में हड़कंप मच गया आग की सूचना मिलते ही नागरिक सुरक्षा के डिवीजनल वार्डन अतुल किल्पन एवं पोस्ट वार्डन जुगल किशोर कुशवाहा, राशिद पठान, विनय सोनी,आशुतोष अग्रवाल तुरंत मौके पर पहुंचकर कड़ी मशक्कत कर आग पर दमकल की टीम के साथ रेत और पानी डालकर काबू पा लिया गया वह मौजूद स्थानी लोगों ने दमकल की टीम के साथ सिविल डिफेंस की भूरी भूरी प्रशंसा की

संपादकीय

सांप्रदायिक विचारों की लामबंदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कांग्रेस पर हमले के अभियान में पाकिस्तान एक नया कनेक्शन है। हालांकि शुरु आती चुनाव से ही पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध खतरे के रूप में चिह्नित किया जाता रहा है। ताजा आरोप है कि पाकिस्तान 'शहजादे' यानी राहुल गांधी की ताजपोशी के लिए बहुत उछल रहा है। यह 'चुनाव को प्रभावित करने' का एकरेखीय आरोप नहीं है, जैसा कि चीन–रूस के बारे में अमेरिका का होता है।प्रधानमंत्री मोदी पाकिस्तान की राहुल में दिलचस्पी के दुष्परिणामों को आंतरिक और बाह्य, दोनों स्तरों पर दिखाते हैं। इससे देश में इस्लामिक जेहाद–आतंकवाद जोर पकड़ेगा, राष्ट्रीय एकता–अखंडता खंडित होगी, सुरक्षा–व्यवस्था कमजोर पड़ेगी और नागरिकों को भुगतना पड़ेगा। यह कांग्रेसी राज का दुर्भाग्यपूर्ण फिनोमिना रहा है। इससे भारत की चहुंदिस जारी वैश्विक प्रगति भी थम जाएगी। रिकॉर्ड्स पर टिके मोदी के इस आकलन से शायद हीअसहमति होगी। पाकिस्तान से दो–दो लड़ाइयां जीतने के बावजूद कांग्रेसी हुकूमत के बनिस्बत मोदी की सुरक्षा व्यवस्था निस्संदेह पुख्ता है–कश्मीर में आतंकवाद की छिटपुट वारदात के बावजूद। 'घर में घुस कर मारने' की बात अब चेतावनी नहीं होती। इसलिए दुश्मन में दहशत पैदा करती हैं। पर क्या पाकिस्तान वास्तव में इस हालत में रह गया है कि वह आज के भारत को नुकसान पहुंचा सके? आतंक के मोर्चे पर यह आज भी सही है।इसलिए ही, पाकिस्तान आम भारतीयों में अलगाववाद और खून–खराबे के जेहाद का नाम है। इसका केवल चुनाव के समय ही नहीं, बाकी दिनों में भी किया गया उल्लेख अधिकतर भारतीयों के विचारों को ध्रुवीकृत कर देता है। ऐसे में इंडिया गठबंधन की सपा प्रत्याशी की वोट जेहाद की अपील, जो एक सांप्रदायिक विचारों की लामबंदी से है, बहुसंख्यक मतों का ध्रुवीकरण कर सकती है। मोदी इन मुद्दों का फायदा उठाना चाहते हैं।आरक्षण और संविधान, जो चुनाव में अंडरकरंट मुद्दे हैं, उनमें भी मत–विभाजन का लाभ चाहते हैं। इस मामले में बैकफुट पर चल रहे मोदी को कांग्रेस पर हमले के नये तर्क मिल गए हैं। वे उसके अल्पसंख्यक–प्रेम को ओबीसी कोटे की हकमारी बताते हैं।अब ऐसा नहीं होगा, इसकी वे कांग्रेस से लिखित गारंटी चाहते हैं। यह भय का वैसा ही तर्क है, जैसा कांग्रेस जनमानस में बिठा रही है कि 'मोदी आए तो लोकतंत्र, संविधान और आरक्षण कुछ भी नहीं बचेगा।'

किसी भी दल के साथ पक्षपात नहीं करेगा

पिछले दिनों सोशल मीडिया पर एक क्लिप काफी चर्चा में थी। क्लिप में दिखाया गया कि तेलंगाना राज्य में एक गरीब सब्जी विक्रेता सडक के किनारे अपनी छोटी सी दुकान लगाए बैठी थी। तभी एक रईसजादे ने उसके पीछे अपनी महंगी गाड़ी को कुछ इस तरह से पार्क कर दिया कि महिला की साड़ी का पल्लू गाड़ी के पिछले पहिये के नीचे दब गया। कुछ ही क्षण बाद जैसे ही महिला को इस बात का पता चला, तो वो गाड़ी मालिक से दुहाई करने लगी पर उसने एक न सुनी और एक भवन के अंदर चला गया। मजबूरी में उस महिला ने पुलिस से मदद मांगी। पुलिस ने भी काफी प्रयास किया कि उसकी साड़ी का पल्लू किसी तरह से पहिये से मुक्त हो जाए। लेकिन पुलिस जो उपाय खोजा वह काफी सराहनीय है।पुलिस ने एक मिस्त्री बुलाया और गाड़ी में जैक लगा कर महिला के पल्लू को मुक्त करवा दिया। परंतु तेलंगाना की पुलिस ने इस मनचले को सबक सिखाने की भी सोची। पुलिस वाले उस गाड़ी के पहिये को उतरवा कर अपने साथ पुलिस थाने ले जाने लगे। जैसे ही गाड़ी का पहिया उतारा जा रहा था तभी वो मनचला हड़बड़ाता हुआ बाहर आया। पुलिस के इस एक्शन पर घबराहट में उनके पैरों में गिरने लगा। माफी मांगने लगा। परंतु पुलिस ने उसकी एक न सुनी और पहिया उतार कर अपने साथ थाने ले गई।इस बिगड़े मनचले के पास सिवाय अपना सर खुाने के और कोई उपाय न था। शायद वो इस तरह से गाड़ी पार्क करने से पहले इंसानों की तरह सोचता तो ऐसा न होता। परंतु पैसे के घमंड में चूर इसे कुछ दिखाई नहीं दिया। यदि यहां पुलिस उस व्यक्ति से उलझती तो वो अवश्य अपने पैसे और रु तबे की धौंस दिखाता। गौरतलब है कि इस पूरे वीडियो को सोशल मीडिया पर 'स्क्रिप्टेड वीडियो' या नाटकीय वीडियो कहा जा रहा है। परंतु जो भी हो वीडियो डालने वाले ने जो संदेश देना चाहा वह देश के अन्य राज्यों की पुलिस के लिए एक अच्छा उदाहरण बना।चुनावों के मौसम में तेलंगाना के इस वीडियो क्लिप से भारत निर्वाचन आयोग को भी प्रेरणा लेनी चाहिए। सोशल मीडिया पर शायद ही कोई राजनैतिक पार्टी होगी जिसने अपने चुनावी भाषण में किसी न किसी तरह से आचार संहिता और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के नियमों का उल्लंघन न किया हो। परंतु जिस तरह चुनाव आयोग एकतरफा कार्रवाई करते हुए दिखाई दे रहा है, उससे तो यही लगता है कि दोहरे मापदंड अपना रहा है। ईवीएम और वीवीपैट को लेकर चुनाव आयोग पहले से ही विवादों में है।चुनावी भाषणों को लेकर आयोग की एकतरफा कार्रवाई एक बार फिर से पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टी एन शेषण और उनके बाद नियुक्त हुए कुछ चुनाव आयुक्तों की याद दिलाती है, जो नियम–कायदों के पक्के माने जाते थे। चुनावों के मौसम में कोई राजनैतिक दल, चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, चुनाव आयोग से कभी नहीं उलझता था। परंतु बीते कुछ वर्षो में जिस तरह चुनाव आयोग की जगहंसाई हुई है उससे प्रतीत होता है कि चुनाव आयोग निष्पक्ष नहीं रहा। फिर वो चाहे चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को लेकर सर्वोच्च न्यायालय के सुझावों की अनसुनी हो या किसी बड़े राजनैतिक दल द्वारा किए गए उल्लंघन की अनदेखी हो। चुनाव आयोग विवादों में बना ही रहा।जब भी कभी कोई प्रतियोगिता आयोजित की जाती है, तो उसका संचालन करने वाले शक के घेरे में न आएं इसलिए प्रतियोगिता के हर कृत्य को सार्वजनिक किया जाता है। आयोजक इस बात पर खास ध्यान देते हैं कि उन पर पक्षपात का आरोप न लगे। इसीलिए जब भी कभी आयोजकों को किसी कमी की शिकायत की जाती है या उन्हें कोई सकारात्मक सुझाव दिए जाते हैं तो यदि वे उन्हें सही लगें तो वे उन्हें स्वीकार लेते हैं। उन पर पक्षपात का आरोप भी नहीं लगता। ठीक उसी तरह स्वस्थ लोकतंत्र में होने वाली सबसे बड़ी प्रतियोगिता चुनाव हैं। उसके आयोजक यानी चुनाव आयोग को उन सभी सुझावों और शिकायतों को खुले दिमाग से और निष्पक्षता से लेना चाहिए। चुनाव आयोग संविधानिक संस्था है, इसे किसी भी दल या सरकार के प्रति पक्षपाती दिखाई नहीं देना चाहिए। यदि चुनाव आयोग ऐसे सुझावों और शिकायतों को जनहित में लेता है तो मतदाताओं के बीच भी सही संदेश जाएगा, कि चाहे ईवीएम पर गड़बडियों के आरोप लगें या आचार संहिता के नियमों का उल्लंघन की शिकायत हो, आयोग किसी भी दल के साथ पक्षपात नहीं करेगा। जिस तरह पहले चरण के चुनावों में मतदान के प्रतिशत कम होने के बाद कुछ राजनैतिक दल घबराहट में गलतबयानी कर रहे हैं, चुनाव आयोग को इन सभी का स्वतरू संज्ञान लेना चाहिए और नियम अनुसार उचित कार्रवाई करनी चाहिए। यदि चुनाव आयोग किसी भी राजनैतिक दल को उसके कद और आकार को नजरअंदाज कर नियम–कायदे के अनुसार उस पर कार्रवाई करेगा

मुम्बई लोकसभा की छह लोकसभा सीटों पर क्या सत्तारुढ़ शिवसेना बीजेपी–एनसीपी के लिए इस बार फँस गया है मामला ?

मुंबई दक्षिण, मुंबई दक्षिण–मध्य और मुंबई उत्तर–पश्चिम में दोनों शिव सेनाओं के बीच मुकाबला होगा, जबकि मुंबई उत्तर–पूर्व में भाजपा बनाम शिवसेना (यूबीटी) का आमना–सामना होगा। मुंबई दक्षिण में उद्धव ठाकरे के मौजूदा सांसद अरविंद सावंत शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना की यामिनी जाधव से मुकाबला करेंगे। मुंबई में छह संसदीय क्षेत्रों में राजनीतिक लड़ाई का मैदान सज चुका है और दोनों तरफ से आरोप–प्रत्यारोप के तीर एक दूसरे पर चलाये जा रहे हैं। छह में से तीन सीटों पर एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना आमने सामने हैं तो बाकी की तीन सीटों में से दो पर भाजपा का मुकाबला कांग्रेस से होगा और एक सीट पर भगवा पार्टी शिवसेना (यूबीटी) से भिड़ेगी। हम आपको बता दें कि मुंबई में छह निर्वाचन क्षेत्र हैं– मुंबई दक्षिण, मुंबई दक्षिण–मध्य, मुंबई उत्तर, मुंबई उत्तर–मध्य, मुंबई उत्तर–पूर्व और मुंबई उत्तर–पश्चिम। मुंबई की छह सीटें महाराष्ट्र की उन 13 सीटों में से हैं जिन पर 20 मई को पांचवें और अंतिम चरण में मतदान होगा। मुंबई दक्षिण, मुंबई दक्षिण–मध्य और मुंबई उत्तर–पश्चिम में दोनों शिव सेनाओं के बीच मुकाबला होगा, जबकि मुंबई उत्तर–पूर्व में भाजपा बनाम शिवसेना (यूबीटी) का आमना–सामना होगा। मुंबई दक्षिण में उद्धव ठाकरे के मौजूदा सांसद अरविंद सावंत शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना की यामिनी जाधव से मुकाबला करेंगे। यामिनी जाधव मुंबई के बायकुला विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। शिवसेना (यूबीटी) के नेता अनिल देसाई का मुकाबला मुंबई दक्षिण–मध्य में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के राहुल शेवाले से है। हम आपको बता दें कि अनिल देसाई हाल तक राज्यसभा सदस्य थे, वहीं राहुल शेवाले मौजूदा लोकसभा सदस्य हैं। इसके अलावा, मुंबई उत्तर–पश्चिम में उद्धव ठाकरे खेमे के अमोल कीर्तिकर का मुकाबला सत्तारुढ़ शिवसेना के रवींद्र वायकर से होगा। रवींद्र वायकर पहले शिवसेना (यूबीटी) में थे, वह हाल ही में शिंदे खेमे में शामिल हुए हैं। वह वर्तमान में मुंबई में जोगेश्वरी पूर्व विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अलावा, कांग्रेस विधायक वर्षा गायकवाड़, जो पार्टी की मुंबई इकाई की अध्यक्ष भी हैं वह मुंबई उत्तर–मध्य में भाजपा द्वारा मैदान में उतारे गए प्रसिद्ध वकील उज्ज्वल निकम के खिलाफ लड़ रही हैं, जबकि केंद्रीय मंत्री और भाजपा के दिग्गज नेता पीयूष गोयल मुंबई उत्तर में कांग्रेस के भूषण पाटिल से मुकाबला करेंगे। हम आपको बता दें कि वर्षा गायकवाड़ जहां मुंबई में धारावी विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं, वहीं पीयूष गोयल राज्यसभा सदस्य हैं। इसके अलावा, मुंबई नॉर्थ–ईस्ट में भाजपा के मिहिर कोटेचा का मुकाबला शिवसेना यूबीटी के संजय दीना पाटिल से होगा। हम आपको बता दें कि मिहिर कोटेचा मुंबई के मुलुंड विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं। हम आपको बता दें कि मुंबई उत्तर–मध्य से अपना नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद, वर्षा गायकवाड़ ने उद्धव ठाकरे से मुलाकात की थी। इस दौरान उद्धव ने उन्हें अपना समर्थन देने का वादा किया और कहा कि उन्हें एक सांसद के रूप में दिल्ली भेजा जाएगा। यहां एक रोचक बात यह है कि यह पहली बार होगा कि ठाकरे किसी कांग्रेस उम्मीदवार को वोट देंगे क्योंकि बांद्रा स्थित उनका आवास मुंबई उत्तर–मध्य निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत आता है। गौरतलब है कि कांग्रेस और शिवसेना 2019 तक मुंबई में पारंपरिक रूप से राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी रहे हैं। वैसे प्रतिद्वंद्वी होने के बावजूद, दोनों पार्टियां सत्ता में पद पाने के लिए कई मौकों पर रणनीतिक साझेदारी करती रही हैं खासकर मुंबई नगर निकाय में। 2019 में उद्धव ठाकरे के पाला बदलने के बाद से तो दोनों दलों के बीच अच्छी दोस्ती देखने को मिल रही है। मुंबई में विभिन्न राजनीतिक दलों की जमीनी स्थिति की बात करें तो 2014 के बाद से कांग्रेस मुंबई की सभी लोकसभा सीटें हारी है जबकि 2019 के विधानसभा चुनाव में वह यहां की 36 में से केवल पांच सीटें ही जीत सकी थी। मुंबई दक्षिण के पूर्व सांसद मिलिंद देवड़ा के शिवसेना में चले जाने और मुंबई उत्तर–मध्य की पूर्व सांसद प्रिया दत्त के दोबारा चुनाव लड़ने से इंकार करने के कारण, कांग्रेस के पास मैदान में उतारने के लिए कोई उम्मीदवार नहीं था। पार्टी नेता संजय निरुपम वहां से लड़ना चाहते थे लेकिन महा विकास अघाड़ी (एमवीए) में समान सीट–बंटवारा करा पाने में असमर्थ रहे कांग्रेस नेतृत्व की आलोचना के लिए उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया था। भाजपा ने सभी तीन मौजूदा सांसदों को बदल दिया है, जबकि शिंदे की शिवसेना ने केवल राहुल शेवाले (मुंबई दक्षिण–मध्य) को फिर से नामांकित किया है। मुंबई उत्तर–पश्चिम के चुनावों में अजीब स्थिति देखने को मिल रही है क्योंकि शिवसेना ने यहां से गजानन कीर्तिकर की जगह रवींद्र वायकर को उतारा है। खास बात यह है कि गजानन कीर्तिकर के बेटे अमोल कीर्तिकर को इस सीट से शिवसेना यूबीटी ने टिकट दिया है लेकिन गजानन कीर्तिकर का कहना है कि वह राजधर्म का पालन करते हुए अपने बेटे के खिलाफ चुनाव प्रचार करेंगे। दूसरी ओर, हमने अपनी चुनाव यात्रा के दौरान महसूस किया कि जमीनी स्तर पर जो तस्वीर उभर रही है, उसके अनुसार, शिव सेना (यूबीटी) और कांग्रेस कैडर के बीच जमीनी स्तर पर अच्छी पकड़ हो गई है और इनके कार्यकर्ता मिल कर काम करते दिख रहे हैं लेकिन चुनाव प्रबंधन के मामले में यह भाजपा के नेतृत्व वाला महायुति से पीछे हैं। महायुति में शामिल भाजपा, शिवसेना और एनसीपी जिस तरह से हुए अंदाज में चुनाव प्रचार चला रहे हैं उसका असर हर जगह दिख रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभा भी मुंबई में रखवाई जा रही है जिससे चुनाव प्रचार की दशा और दिशा ही बदल जायेगी। इसके अलावा भाजपा के केंद्रीय नेताओं मुंबई आकर बुद्धिजीवियों प्रोफेशनल्स और समाज के विभिन्न वर्गों की अलग–अलग बैठकें कर उनको यह समझाना शुरू कर दिया है कि कैसे देश के लिए तीसरी बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व जरूरी है। हमने सभी संसदीय क्षेत्रों में लोगों से बात की।

अस्तित्व बचाने के संकट से जूझती कम्युनिस्ट पार्टियां

वामदलों की चुनावों में सूखा 2009 के चुनावों से लगातार बढ़ता गया है। 2004 में जहां 59 सीटे थी जो 2009 में कम होकर 24 रह गई, 2014 के चुनावों में उसकी भी आधी यानी 12 और 2019 के चुनावों में उसकी आधी यानी कि 6 रह गई। देश की कम्युनिस्ट पार्टियों के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। साल 2004 कम्युनिस्ट पार्टियों के उम्थान का काल कहा जाए तो उसके बाद वाम दलों का लोकसभा में प्रतिनिधित्व लगातार कम ही होता जा रहा है। अब 18 वीं लोकसभा के चुनावों में वामदलों के सामने अपने अस्तित्व को बचायें रखने का संकट खड़ा हो गया है। आजादी से पहले और उसके बाद के दौर में एक समय था जब वामदलों की पूरे देष में तूती बोलती थी। सरकार भले ही कम ही राज्यों में रही हो पर वामदल और उसके अनुसंघी संगठन चाहे वह स्टूडेंट फैडरेशन हो या मजदूर संगठन या लेखक संघ सभी की अपनी पहचान और फोलोवर्स रहे हैं। पर समय का बदलाव देखिये कि आज वामदलों के सामने पहचान बनाये रखने का संकट खड़ा हो गया है। प. बंगाल में तो वामदलों तीन दशक से भी अधिक समय तक एक सत्र राज किया, वहीं त्रिपुरा, केरल में भी वामदलों की सरकार रही है। पर 2019 के लोकसभा के चुनाव आते–आते तो हालात यह हो गई कि वामदलों के गढ़ प. बंगाल में तो वामदलों को एक भी सीट नहीं मिली, वहीं त्रिपुरा में भी खाता खोलने में विफल रही। दरअसल समय की मांग को समझना और उसके अनुसार समयानुकूल बदलाव करना अपने आप में बड़ी बात होती है। जनभावना को भी समझना जरुरी हो जाता है। केवल विचारधारा और एग्रेसिव होने से काम नहीं चल सकता। फिर अपने अपने अहम् के चलते समय पर सही निर्णय नहीं लेने का परिणाम देर सबेर भुगतना पड़ता है। ज्योति बसु के पास तीन बार प्रधानमंत्री बनने के अवसर आये पर पोलिट ब्यूरों ने उन्हें प्रधानमंत्री बनाने पर सहमति नहीं दी। कल्पना कीजिए कि ज्योति बसु तीन में से किसी एक अवसर पर प्रधानमंत्री बनते तो उसका लाभ अंततोगत्वा वामदलों को ही मिलता पर आपसी मतभेदों या मनभेदों के चलते सही विकल्प नहीं चुनने का परिणाम आज सामने हैं। गत 2019 के लोकसभा चुनावों की ही बात की जाएं तो वामदलों को लोकसभा के लिए छह सीटे मिली हैं। इसमें भी एक समय कम्युनिस्टों के गढ़ रहे प. बंगाल और त्रिपुरा में तो वामदलों का खाता भी नहीं खुल सका। तमिलनाडु में गठबंधन के सहारे माकपा और भाकपा को दो–दो सीटे मिल गई वहीं केरल में माकपा और आरएसपी एक–एक सीटें जीतने में सफल हो सकी। जैसे तैसे केवल माकपा राष्ट्रीय दल के रुप में अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। यह भी कोई ज्यादा पुरानी बात नहीं है कि लोकसभा के इससे पहले के तीन चुनावों के पहले 2004 के चुनावों में वामदलों के पास 59 सीटें थी। हालात यह थे कि कांग्रेस–भाजपा के बाद लोकसभा की तीसरी बड़ी ताकत वामदल थे। कांग्रेस के साथ गठबंधन कर वामदल सरकार में भी शामिल हुए। लोकसभा स्पीकर का पद भी वामदलों के पास ही गया। देखा जाए तो न्यूनतम साझा कार्यक्रम के तहत सरकार भी ठीक ही चली पर परमाणु समझौते के चलते बाद में वामदल सरकार से बाहर हो गए। ममता के चलते प. बंगाल में वामदल लगभग अप्रासंगिक होता जा रहा है और प. बंगाल में वामदल के स्थान पर भारतीय जनता पार्टी उभर रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि वायनाड़ से राहुल गांधी का चुनाव लडना भी वामदल को हानि पहुंचाने वाला ही रहा है। खैर यह अलग विचारणीय प्रश्न हो जाता है। एक समय था जब ज्योति बसु को केन्द्र की राजनीति में लाने के प्रयास हुए पर आपसी मतभेदों के चलते वामदलों ने इसे सिरे से चढ़ने ही नहीं दिया। वामदलों की अस्तित्व के संकट को यों भी समझा जा सकता है कि किसी समय विपक्षी दलों में वामदलों की तूती बोलती थी आज कोई बड़ा नाम सामने नहीं आ पा रहा है। प्रकाश करात या सीताराम येचुरी आदि के नाम यदा कदा ही सामने आ पाते हैं। एक समय था जब सोम दा, इन्द्र जीत गुप्त, एबी वर्द्धन, ज्योति बसु और उससे पहले की भारतीय राजनीति पर दृष्टिगोचर किया जाए तो पी. सुन्दरैया, सी. राजेश्वर राव, ईएमएस नंबुदरीपाद, एके गोपालन, बीटी रणदीव जैसे अनेक नाम थे जिनका भारतीय राजनीति में अपनी अलग हैसियत और पहचान रही।वामदलों की चुनावों में सूखा 2009 के चुनावों से लगातार बढ़ता गया है। 2004 में जहां 59 सीटे थी जो 2009 में कम होकर 24 रह गई, 2014 के चुनावों में उसकी भी आधी यानी 12 और 2019 के चुनावों में उसकी आधी यानी कि 6 रह गई। अब 2024 के लोकसभा के चुनावों में वामदलों के सामने अपनी पहचान बनाये रखने का संकट आ गया है। प. बंगाल, त्रिपुरा से कोई खास लगता नहीं हैं, केरल में भी हालात ज्यादा नहीं बदले हैं।दरअसल वामदलों के हाशिये में जाने के अन्य कारणों के साथ ही ममता का प. बंगाल में पकड़ बनाये रखना है तो बीजेपी वहां अपनी पैठ लगातार बढ़ाने के प्रयास कर रही है। दूसरी और कहने को कुछ भी कहा जाएं पर भाजपा या मोदी को सत्ता से हटाने के लिए विपक्षी दलों द्वारा आपसी सहमति या यों कहें कि इंडी का कंसेप्ट भी चल नहीं पाया है। तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि वामदल जिसे अपना वोट बैंक मान कर चलता रहा है उस वोट बैंक पर सैंध भी उन्हीं के साथ समझौता कर रही कांग्रेस पार्टी है। केरल में अल्पसंख्यकों के साथ ही हिन्दुओं के वामदलों के वोट कांग्रेस अपनी और करने में सफल रही है। फिर वामदलों के नेताओं की जो यूएसपी अच्छे वक्ता के रुप में होती थी वह आज दिखाई नहीं देती। समय के साथ बदलाव को आत्मसात् नहीं करने के कारण ही सोशल मीडिया जो आज प्रमुख माध्यम बन गया है, उस क्षेत्र में वामदल कहीं पिछड़ गए हैं। दरअसल गठबंधन की राजनीति के अपनी लाभ हानि है और एक कारण यह भी है कि यह गठबंधन एक चुनाव के लिए होता है तो राज्य स्तर पर होने वाले चुनाव में प्रतिस्पर्धी बन जाते हैं। इससे जनता में भी मैसेज अलग तरह का जाता है। ऐसे में वामदलों को 18 वीं लोकसभा में अपनी पहचान बनाये रखने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। वामदलों के सामने दरअसल अभी विकल्प कम ही है। वामदल के कमिटेड वोटर्स छिटक गए हैं तो नेतृत्व द्वारा ना तो दूसरी लाईन के नेता तैयार किये गया हैं और ना ही केडर को मजबूत करने के प्रयास किये गये हैं। जन आंदोलन जो कभी वामदल की पहचान होती थी वह कहीं नेपथ्य में चली गई है। एक समय था जब छोटी सी छोटी जगह भी कोई ना कोई कामरेड मिल जाता था जिसकी अपनी पहचान होती थी, उस तरह के नाम आज तलाशने पड़ते हैं। 2024 के चुनावों के नतीजें जो भी हो पर आगे के लिए वामदलों को भारतीय राजनीति में प्रासंगिक बने रहने के लिए ठोस रणनीति बनाकर एग्रेसिव रुप से आगे आना होगा।

आज का राशिफल

मेष राशि–आज का दिन आपके लिए खुशियां भरा रहने वाला है। आज किसी नए वाहन को खरीदने की इच्छा पूरी होगी। आपके आस–पास के कुछ लोग आपके विरोधी भी बन सकते हैं जिनसे आपको बचना होगा। आज आपको योजना अनुसार ही कार्य करना चाहिए।

वृष राशि–आज का दिन अच्छा रहने वाला है। आज किसी खास व्यक्ति से आपकी मुलाकात होगी। आज आपको अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखने की जरूरत है। विदेश जाने की इच्छा रख रहे लोगों को कोई अच्छा मौका मिल सकता है। आज आप अपने धन का सही इस्तेमाल करें। अपनी आय और व्यय के लिए एक बजट बनाकर चलें, तभी आप भविष्य के लिए कुछ धन संचय करने पर विचार कर सकते हैं।

मिथुन राशि–आज का दिन आपके लिए खुशहाल रहने वाला है। आज प्रैक्टिकल सोच रखेंगे तो आपको लाभ होगा। आज थोड़ा समय एकांत में या किसी धार्मिक स्थान पर बीताएंगे। आज शाम को माता जी से अपने भविष्य को लेकर विचार–विमर्श करेंगे। आपको माता जी का साथ मिलने से खुशी होगी। आज आपके मन में कोई बात चलेगी, जिससे उलझन महसूस हो सकती है।

कर्क राशि–आज के दिन आपको इच्छित फल प्राप्त होंगे। सरकारी कार्यों में आपको बड़े लाभ की संभावना है। आज आप अपनी संतान के साथ कहीं घूमने के लिए जा सकते हैं। उनके साथ आप अच्छा समय बिताएंगे। घर के अन्य सदस्यों के साथ भी आपकी अच्छी बॉन्डिंग बनेगी। व्यापारी वर्ग को नए आर्डर मिलेंगे, काम बढिया चलेगा, जिससे अधिक लाभ होगा।

सिंह राशि–आज का दिन आपके लिए बेहतर रहने वाला है। आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी आएंगी, जिसे आप पूर करेंगे। माता–पिता से आप अपने मन की बातों को साझा करेंगे। जो लोग घर से दूर रहकर पढ़ाई कर रहे हैं, वो आज अपने परिवार से मिल सकते हैं। परिवार वालों के साथ धार्मिक कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। भाई, बहनों का सहयोग मिलेगा। किसी दूर के रिश्तेदार के द्वारा शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

कन्या राशि–आज का दिन आपके लिए आनंदायक रहने वाला है। आज आपका पुराना मित्र आपसे मिलने आयेंगे, जिनसे मिलकर अपकी पुरानी यादें ताजा होंगी। छात्र खूब मन लगाकर पढ़ाई करते हुए नजर आएंगे7 जो लोग घर से दूर रहकर नौकरी कर रहे हैं, उन्हें अपने परिवार से मिलने का मौका मिलेगा।

तुला राशि–आज का दिन आपके लिए सुनहरा रहने वाला है। आपका विनम्र स्वभाव सराहा जाएगा। आपका धन कहां खर्च हो रहा है। इस पर आपको नजर बनाए रखने की जरूरत है। आज आपको बेकार की उलझन में पडने से बचने की जरूरत है।

वृश्चिक राशि–आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। जीवनसाथी से किसी काम को लेकर विचार विमर्श करेंगे। आप अपने मित्रों के साथ किसी मनोरंजन के कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। पिता का आशिर्वाद आप पर बना रहेगा। अपनी उर्जा से आप बहुत कुछ हासिल करेंगे बस अपनी काबिलियत पर भरोसा करें।

धनु राशि–आज का दिन आपके लिए बेहतर रहने वाला है। काम करने के तरीकों में बदलाव करेंगे और व्यवस्थित रहेंगे तो आपके काम जल्दी निपटेंगे। आज आप संतान के करियर की समस्याओं को किसी अनुभवी और जानकार की मदद से सुलझा लेंगे। आज किसी काम में जल्दबाजी और गुस्सा नहीं करेंगे तो आपका काम आसानी से हो जायेगा।

मकर राशि–आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। दिनचर्या में टहलना शामिल करेंगे, जिससे आप अपने आप को काफी ऊर्जावान महसूस करेंगे। कोई पुराना मित्र आपसे आर्थिक मदद मांग सकता है आप उसे निराश नहीं करेंगे अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता करेंगे।

कुंभ राशि–आज आपका दिन अच्छा रहेगा। ऑफिस में कार्यरत लोगों को तरक्की मिलने से उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। किसी नए काम की शुरुआत जीवनसाथी से करा सकते हैं। आज कोई बड़ा और अलग काम करने की सोच सकते हैं। संतान के बेहतर भविष्य के लिये आज आप किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेंगे। इस राशि की जो महिलाएं बिजनेस कर रही हैं उनका दिन व्यस्तता से भरा होगा।

मीन राशि–आज का दिन आपके अनुकूल रहेगा। आज परिवार के साथ घर पर मूवी देखने की प्लानिंग करेंगे। किसी बचपन के मित्र से बहुत दिनों बाद मुलाकात होगी, जिनसे मिलकर आपको खुशी होगी।

भारत के खिलाफ बयानबाजी करने वालों को अपने परिसरों की तस्वीरें देखनी भी टीवी पर देखनी चाहिए, पश्चिमी देशों को एस जयशंकर ने कायदे से तमीज सिखाई

इजराइल विरोधी प्रदर्शनों की लहर के बाद कई अमेरिकी परिसरों पर कब्जा हो गया, प्रदर्शनकारियों को हटाने के लिए कुछ परिसरों में पुलिस तैनात की गई। कई मौकों पर, पुलिस कर्मियों की उनकी सख्ती के लिए आलोचना की गई क्योंकि प्रदर्शनकारियों की पुलिस के साथ झड़प के दृश्य सामने आए। अमेरिका पिछले कुछ वक्त से भारत के खिलाफ बयानबाजी करता आ रहा है। कुछ वक्त पहले उसने नागरिकता संशोधन कानून को लेकर भी सवाल खड़े किए थे। अब जवाब देने की बारी भारत की थी। विरोध प्रदर्शनों के संबंध में भारत की पश्चिमी आलोचना के पिछले उदाहरणों पर कटाक्ष करते हुए विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि किसी को अपने टेलीविजन स्क्रीन पर अमेरिकी परिसरों की तस्वीरें देखनी चाहिए। जयशंकर हाल के दिनों में अमेरिकी परिसरों में इजरायल विरोधी प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की कार्रवाई का जिक्र कर रहे थे। इजराइल विरोधी प्रदर्शनों की लहर के बाद कई अमेरिकी परिसरों पर कब्जा हो गया, प्रदर्शनकारियों को हटाने के लिए कुछ परिसरों में पुलिस तैनात की गई। कई मौकों पर, पुलिस कर्मियों की उनकी सख्ती के लिए आलोचना की गई क्योंकि प्रदर्शनकारियों की पुलिस के साथ झड़प के दृश्य सामने आए। जयशंकर ने द इकोनॉमिक टाइम्स के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि भारत को लेकर पश्चिम देश उपदेश देते हैं वो खुद को नहीं देखते। ऐसे लोग हैं जिन्होंने कहा कि आपको प्रदर्शनों में खलल डालने के लिए कुछ भी नहीं करना चाहिए, भले ही इससे जनता को असुविधा हो, सड़कें अवरुद्ध हों। जब बात उनकी अपनी हो तो वे इसे कैसे संभाल रहे हैं? जयशंकर ने आगे कहा कि भारत में जब भी कोई आंदोलन होता है तो जनता से कैसे निपटना है, इस पर हमें बहुत सारे व्याख्यान मिले। मैं आपको आज टेलीविजन स्क्रीन पर तस्वीरें देखने के लिए आमंत्रित करता हूं। वे क्या उपदेश देते हैं, क्या व्यवहार करते हैं, उनका एजेंडा क्या है, उनकी निष्पक्षता क्या है, या उसका अभाव है? भारतीय चुनावों में विदेशी हस्तक्षेप के बारे में पूछे जाने पर जयशंकर ने कहा कि विभिन्न हितों वाले स्वयंभू लोग हैं। प्रेस की स्वतंत्रता और नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) जैसे मुद्दों पर पश्चिमी हलकों में भारत की आलोचना का उल्लेख करते हुए जयशंकर ने पूछा कि इन लोगों को जिम्मेदार क्यों नहीं ठहराया जा रहा है। उन्होंने इस तरह की आलोचना को ष्राजनीतिक हिटजॉबष करार दिया। ऐसे लोग हैं जिन्होंने सार्वजनिक रूप से कहा कि सीएए के कारण लाखों मुसलमान अपनी नागरिकता खो देंगे।

कुएं से मिले तीन शवों की पहचान की गई, दो आस्ट्रेलियाई नागरिक

संदेह व्यक्त किया जा रहा है कि चोरों ने मेक्सिको के बाजा प्रायद्वीप में सर्फिंग कर रहे तीन लोगों के ट्रक चुराने के लिए उनकी हत्या कर दी और शवों को कथित रूप से तट के पास एक कुएं में फेंक दिया।मेक्सिको के बाजा प्रायद्वीप में 'सर्फिंग' करने निकले तीन लोगों के शव एक कुएं से मिले हैं और उनकी पहचान परिजनों के द्वारा कर ली गई है। इनमें दो ऑस्ट्रेलियाई नागरिक और एक अमेरिकी व्यक्ति था। मेक्सिको के अधिकारियों ने रविवार को बताया कि वे पिछले सप्ताहांत में लापता हो गए थे। बाजा कैलिफोर्निया राज्य के अभियोजकों ने कहा कि रिश्तेदारों ने लगभग 50 फीट (15 मीटर) गहरे एक कुएं से बरामद लाशों को देखा और उन्हें अपने परिजनों के रूप में पहचाना। संदेह व्यक्त किया जा रहा है कि चोरों ने मेक्सिको के बाजा प्रायद्वीप में सर्फिंग कर रहे तीन लोगों के ट्रक चुराने के लिए उनकी हत्या कर दी और शवों को कथित रूप से तट के पास एक कुएं में फेंक दिया। कुआं उस स्थान से लगभग चार मील (छह किलोमीटर) की दूरी पर स्थित था जहां इन लोगों की हत्या की गई।

पाकिस्तान की सत्ता से दूर नहीं रह पाए जहरीले बिलावल भुट्टो, इशाक डार की जगह बनाए जा सकते हैं विदेश मंत्री

एक्सप्रेस ट्रिब्यून अखबार ने रविवार को बताया कि अगर अंदरूनी सूत्रों पर विश्वास किया जाए, तो बिलावल विदेश मंत्री के रूप में प्रधान मंत्री शहबाज शरीफ की कैबिनेट में शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि हाल ही में उनकी बातचीत के दौरान पार्टी के दिग्गजों के बीच सहमति बनी है।पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो–जरदारी के एक और कार्यकाल के लिए वापसी करने की संभावना है क्योंकि उनकी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी और पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज (पीएमएल–एन) सत्ता–साझाकरण समझौते को अंतिम रूप देने के करीब थे। एक्सप्रेस ट्रिब्यून अखबार ने रविवार को बताया कि अगर अंदरूनी सूत्रों पर विश्वास किया जाए, तो बिलावल विदेश मंत्री के रूप में प्रधान मंत्री शहबाज शरीफ की कैबिनेट में शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि हाल ही में उनकी बातचीत के दौरान पार्टी के दिग्गजों के बीच सहमति बनी है। उन्होंने दावा किया कि बिलावल, जो शुरू में कैबिनेट में शामिल होने के लिए अनिच्छुक थे, एक बार फिर विदेश मंत्री बनने के लिए सहमत हो गए। अखबार में कहा गया है कि दोनों पक्ष अब पीपीपी के औपचारिक रूप से कैबिनेट में शामिल होने के विवरण और समय पर काम कर रहे हैं। सूत्रों का हवाला देते हुए कहा गया कि शहबाज चाहते हैं कि पीपीपी जून के पहले सप्ताह में पेश होने वाले अगले बजट से पहले कैबिनेट में शामिल हो। हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं है कि पीपीपी बजट से पहले कैबिनेट में शामिल होगी या बाद में। सूत्रों के मुताबिक एक बात तय है। पीपीपी जून में कैबिनेट का हिस्सा होगी। मौजूदा विदेश मंत्री इशाक डार को बिलावल को शीर्ष राजनयिक बनने की अनुमति देने के लिए उप प्रधान मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था। सूत्रों ने कहा कि डार का कार्यालय प्रधानमंत्री कार्यालय में स्थापित किया जा रहा है और बिलावल के लिए विदेश कार्यालय खाली करने के बाद वह वहीं से काम करेंगे। सूत्रों के मुताबिक, डार कभी भी विदेश मंत्री के रूप में सहज नहीं रहे क्योंकि वह हमेशा अपने पसंदीदा वित्त मंत्रालय को देखना चाहते थे। लेकिन शहबाज और पीएमएल–एन के अन्य लोग उन्हें दूर रखना चाहते थे। फिर भी, वह प्रधान मंत्री को उन्हें अपना डिप्टी नियुक्त करने के लिए मनाने में कामयाब रहे। डिप्टी पीएम के रूप में, वह संभावित रूप से एक बार फिर सरकार की आर्थिक नीतियों की देखरेख कर सकते हैं।

इजराइली सेना ने फलस्तीनियों को पूर्वी रफाह अस्थायी रूप से खाली करने को कहा

इजराइल बचे हुए हमास आतंकवादियों को खत्म करने का संकल्प जता चुका है। रविवार को इजराइली रक्षा मंत्री योआव गैलेंट ने दावा किया कि हमास किसी समझौते को लेकर गंभीर नहीं है। इजराइली सेना ने फलस्तीनियों को पूर्वी रफाह को खाली करने के लिए कहा है जिससे संकेत मिलते हैं कि वहां जल्द ही जमीनी हमला हो सकता है। इजराइली रक्षा बल के एक बयान के अनुसार, लोगों से कहा गया है कि वे तट के पास इजराइल द्वारा घोषित मानवीय क्षेत्र मुवासी में चले जाएं। सेना ने कहा कि उसने क्षेत्र में अस्पताल, तंबू, भोजन और पानी सहित सहायता का विस्तार किया है। यह घोषणा नाजुक दौर से गुजर रही संघर्ष विराम वार्ता के बीच की गई है। आशंका है कि इजराइल जल्द ही जमीनी हमला करेगा।इजराइल बचे हुए हमास आतंकवादियों को खत्म करने का संकल्प जता चुका है। रविवार को इजराइली रक्षा मंत्री योआव गैलेंट ने दावा किया कि हमास किसी समझौते को लेकर गंभीर नहीं है। उन्होंने निकट भविष्य में रफाह में एक शक्तिशाली अभियान चलाए जाने की चेतावनी दी। उनकी यह टिप्पणी तब आई है जब हमास ने रविवार को इजराइल के मुख्य क्रॉसिंग पॉइंट पर हमला किया था, जिसमें तीन सैनिक मारे गए थे।

राष्ट्रपति चुनाव में अंतिम समय में उतारे गए प्रत्याशी मार्टिनेली जीत की ओर अग्रसर

अधिकारियों ने रविवार रात तक 88 प्रतिशत मतों की गिनती के साथ अनौपचारिक रूप से नतीजों की घोषणा की। पूर्व सुरक्षा मंत्री मुलीनो (64) को करीब 35 प्रतिशत वोट मिले हैं जिससे उन्हें अन्य प्रत्याशियों पर नौ अंकों की बढ़त मिल गयी है। पनामा में जिस उम्मीदवार को सबसे अधिक मत मिलते हैं, वह चुनावों में विजेता होता है। पनामा सिटी। पनामा के राष्ट्रपति पद के चुनाव में पूर्व राष्ट्रपति रिकार्डो मार्टिनेली के स्थान पर अंतिम समय में उतारे गए उम्मीदवार जोस राउल मुलीनो का इस मध्य अमेरिकी देश का नया नेता बनना तय है। अधिकारियों ने रविवार रात तक 88 प्रतिशत मतों की गिनती के साथ अनौपचारिक रूप से नतीजों की घोषणा की। पूर्व सुरक्षा मंत्री मुलीनो (64) को करीब 35 प्रतिशत वोट मिले हैं जिससे उन्हें अन्य प्रत्याशियों पर नौ अंकों की बढ़त मिल गयी है। पनामा में जिस उम्मीदवार को सबसे अधिक मत मिलते हैं, वह चुनावों में विजेता होता है। तेजतर्रार पूर्व नेता मार्टिनेली को धन शोधन के मामले में 10 साल की जेल की सजा सुनाए जाने के बाद चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया था जिसके बाद मुलीनो को उतारा गया। पनामा के हाल के इतिहास में अब तक के सर्वाधिक उथल–पुथल वाले चुनाव के बाद मुलीनो का देश का नया नेता बनना तय माना जा रहा है। उनके सामने अर्थव्यवस्था में मंदी, ऐतिहासिक स्तर पर विस्थापन, पनामा नहर में परिवहन को बाधित कर रहा सूखा और पिछले साल बड़े पैमाने पर हुए खनन विरोधी प्रदर्शनों के बाद आर्थिक परिणामों की चुनौती होगी।

रूसी हमले में यूक्रेन का गांव बुरी तरह क्षतिग्रस्त, भागने को मजबूर हुए ग्रामीण

यूक्रेन की सेना ने कहा कि अभी क्षेत्र में लड़ाई जारी है। ड्रोन की फुटेज में कोई एक भी व्यक्ति नजर नहीं आता लेकिन गांव की ऐसी कोई इमारत नहीं है, जो रूसी हमले का शिकार नहीं बनी हो। कई घर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुए देखे जा सकते हैं। यूक्रेन के दोनेत्स्क प्रांत का ओचेरेटीन गांव रूसी बलों के हमले में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और निवासियों को भागने को मजबूर होना पड़ा। ड्रोन से ली गई फुटेज में यह जानकारी सामने आई है। रूसी सैनिक क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं और गोला–बारूद की कमी का सामना कर रही कीव की सेना पर लगातार हमले कर रहे हैं। यूक्रेन की सेना ने इस बात को स्वीकार किया कि रूसी सेना ओचेरेटीन गांव घुस चुकी है, जहां युद्ध से पहले तक करीब 3,000 लोग रह रहे थे।यूक्रेन की सेना ने कहा कि अभी क्षेत्र में लड़ाई जारी है। ड्रोन की फुटेज में कोई एक भी व्यक्ति नजर नहीं आता लेकिन गांव की ऐसी कोई इमारत नहीं है, जो रूसी हमले का शिकार नहीं बनी हो। कई घर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुए देखे जा सकते हैं।

नशीला पदार्थ देकर किया गया यौन उत्पीड़न, आस्ट्रेलियाई सांसद ब्रिटनी लूगां ने लगाए गंभीर आरोप, फेसबुक पर लिखा लंबा–चौड़ा नोट

लौगा ने फेसबुक पर एक लंबी पोस्ट में कहा, श्रविवार की सुबह के शुरुआती घंटों में, नशीली दवा दिए जाने और यौन उत्पीड़न के बाद मैं येप्पून पुलिस स्टेशन और येप्पून अस्पताल गई। अस्पताल में परीक्षणों से मेरे शरीर में दवाओं की मौजूदगी की पुष्टि हुई, जो मैंने नहीं ली। इस पदार्थ ने मुझ पर काफी प्रभाव डाला। पुलिस जांच चल रही है। ऑस्ट्रेलिया की 37 वर्षीय लेबर सांसद ब्रिटनी लौगा ने आरोप लगाया है कि पिछले हफ्ते मध्य क्वींसलैंड के शहर येपून में नशीला पदार्थ देकर उनका यौन उत्पीड़न किया गया। सांसद ने शनिवार को अपने फेसबुक अकाउंट पर एक पोस्ट के जरिये इस बात की जानकारी दी। फेसबुक पोस्ट में उन्होंने बताया कि कई अन्य महिलाओं ने उनसे संपर्क किया है, जिन्हें शनिवार की रात को येप्पून में नशीला पदार्थ दिया गया होगा।लौगा ने फेसबुक पर एक लंबी पोस्ट में कहा, श्रविवार की सुबह के शुरुआती घंटों में, नशीली दवा दिए जाने और यौन उत्पीड़न के बाद मैं येप्पून पुलिस स्टेशन और येप्पून अस्पताल गई। अस्पताल में परीक्षणों से मेरे शरीर में दवाओं की मौजूदगी की पुष्टि हुई, जो मैंने नहीं ली। इस पदार्थ ने मुझ पर काफी प्रभाव डाला। पुलिस जांच चल रही है। उन्होंने आगे लिखा, श्मुझसे अन्य महिलाओं ने संपर्क किया है जिन्हें शनिवार की रात को येप्पून में नशीला पदार्थ दिया गया होगा। ऐसा किसी के साथ भी हो सकता है और दुखद बात यह है कि यह हममें से कई लोगों के साथ होता है। मेरे पास कई महिलाएं हैं जिन्होंने मुझसे संपर्क किया है जिन्होंने हमारे शहर में इसी तरह का अनुभव किया है। यह ठीक नहीं है। हमें नशे या हमले के जोखिम के बिना अपने शहर में सामाजिक मेलजोल का आनंद लेने में सक्षम होना चाहिए। लौगा ने लोगों से इस समय में उनकी निजता का सम्मान करने का अनुरोध किया। उन्होंने लिखा, श्जो कुछ हुआ उसके बाद मुझे शारीरिक और भावनात्मक रूप से ठीक होने के लिए समय चाहिए, इसलिए मैं आपसे मेरी निजता का सम्मान करने के लिए कहती हूँ क्योंकि मुझे वह समर्थन मिलता है जिसकी मुझे आवश्यकता है। मेरे समर्थन में आगे आने वाले सभी लोगों को धन्यवाद। मैं वास्तव में आपके विचारशील संदेशों, इशारों और दयालुता को महत्व देती हूं।श उन्होंने फेसबुक पोस्ट में कहा, श्अगर आपके पास कोई जानकारी है जो जांच में मदद कर सकती है, तो कृपया पुलिस को बताएं।श जानकारी के लिए बता दें, लौगा पर कथित हमले का एक कथित वीडियो, जिसे सड़क के पार से फिल्माया गया था, सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। क्वींसलैंड पुलिस ने लेबर पार्टी के सांसद द्वारा लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोप की जांच शुरू कर दी है। क्वींसलैंड के प्रमुख स्टीवन माइल्स ने कहा, श्इस मामले की जांच जारी है। सरकार लौगा का समर्थन कर रही है।श उन्होंने कहा, ब्रिटनी जिस दौर से गुजर रही है, उससे किसी को भी नहीं गुजरना चाहिए।

इजराइली हमले में चार नागरिकों की मौतरू मीडिया

लेबनान की समाचार एजेंसी ने बताया कि जब शहर के लोग पिछले हमले के कारण अपनी दुकानों और घरों में हुए नुकसान का जायजा ले रहे थे तो उसी दौरान इजराइल ने हवाई हमला किया।दक्षिण लेबनान के माएस अल जबल शहर में रविवार को इजराइली हवाई हमले में चार नागरिकों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। लेबनान की सरकारी मीडिया और शहर की नगर पालिका ने यह जानकारी दी।लेबनान की समाचार एजेंसी ने बताया कि जब शहर के लोग पिछले हमले के कारण अपनी दुकानों और घरों में हुए नुकसान का जायजा ले रहे थे तो उसी दौरान इजराइल ने हवाई हमला किया। इजराइली सेना ने कहा कि उसके लड़ाकू विमान ने हिजबुल्लाह के कब्जे वाले दक्षिणी लेबनानी शहर में सैन्य बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया। हिजबुल्लाह ने रविवार को दावा किया कि उसने लेबनान–इजराइल सीमा के पास इजराइली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाते हुए कम से कम 10 हमले किए, जबकि इजराइली सेना ने कहा कि उस पर लगभग 40 मिसाइले दागी गई, हालांकि इसमें किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

नेतन्याहू के मंत्रिमंडल ने इजराइल में `अल जजीरा के कार्यालयों को बंद करने का फैसला किया

इजराइल–हमास के युद्ध के दौरान इजराइल और चौनल के बीच संबंध में और ज्यादा तल्खी पैदा हुई है। यह फैसला ऐसे वक्त भी हुआ है, जब कतर गाजा में युद्ध को लेकर इजराइल और हमास के बीच संघर्ष विराम समझौते में मदद कर रहा है। तेल अवीव। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने रविवार को कहा कि उनकी सरकार ने इजराइल में कतर के स्वामित्व वाले प्रसारक 'अल जजीरा' के कार्यालयों को बंद करने का फैसला किया है। नेतन्याहू ने 'एक्स' पर इस फैसले की घोषणा की। यह फैसला कब प्रभावी होगा इस बारे में पता नहीं चल पाया है। इजराइल–हमास के युद्ध के दौरान इजराइल और चौनल के बीच संबंध में और ज्यादा तल्खी पैदा हुई है। यह फैसला ऐसे वक्त भी हुआ है, जब कतर गाजा में युद्ध को लेकर इजराइल और हमास के बीच संघर्ष विराम समझौते में मदद कर रहा है।

प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने नेपाल के प्रधान न्यायाधीश बिश्वम्भर प्रसाद श्रेष्ठ से मुलाकात की

काठमांडू। उच्चतम न्यायालय के प्रवक्ता वेदप्रसाद उप्रेती ने बताया कि दोनों प्रधान न्यायाधीशों ने नेपाल एवं भारत के शीर्ष न्यायालयों के बीच संभावित सहयोग एवं आदान– प्रदान के बारे में चर्चा की। न्यायमूर्ति श्रेष्ठ ने प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ के सम्मान में रात्रि भोज की मेजबानी की। इससे पहले प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने यहां पशुपतिनाथ मंदिर के दर्शन किए काठमांडू। भारत के प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने शनिवार को यहां नेपाल के अपने समकक्ष बिश्वम्भर प्रसाद श्रेष्ठ से मुलाकात की और दोनों पड़ोसी देशों के शीर्ष न्यायालयों के बीच सहयोग के तरीकों पर विचार विमर्श किया। उच्चतम न्यायालय के प्रवक्ता वेदप्रसाद उप्रेती ने बताया कि दोनों प्रधान न्यायाधीशों ने नेपाल एवं भारत के शीर्ष न्यायालयों के बीच संभावित सहयोग एवं आदान– प्रदान के बारे में चर्चा की। की मेजबानी की।

रूसी हमले में यूक्रेन का गांव बुरी तरह क्षतिग्रस्त, भागने को मजबूर हुए ग्रामीण

यूक्रेन की सेना ने कहा कि अभी क्षेत्र में लड़ाई जारी है। ड्रोन की फुटेज में कोई एक भी व्यक्ति नजर नहीं आता लेकिन गांव की ऐसी कोई इमारत नहीं है, जो रूसी हमले का शिकार नहीं बनी हो। कई घर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुए देखे जा सकते हैं। यूक्रेन के दोनेत्स्क प्रांत का ओचेरेटीन गांव रूसी बलों के हमले में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और निवासियों को भागने को मजबूर होना पड़ा। ड्रोन से ली गई फुटेज में यह जानकारी सामने आई है। रूसी सैनिक क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं और गोला–बारूद की कमी का सामना कर रही कीव की सेना पर लगातार हमले कर रहे हैं। यूक्रेन की सेना ने इस बात को स्वीकार किया कि रूसी सेना ओचेरेटीन गांव घुस चुकी है, जहां युद्ध से पहले तक करीब 3,000 लोग रह रहे थे। यूक्रेन की सेना ने कहा कि अभी क्षेत्र में लड़ाई जारी है। ड्रोन की फुटेज में कोई एक भी व्यक्ति नजर नहीं आता लेकिन गांव की ऐसी कोई इमारत नहीं है, जो रूसी हमले का शिकार नहीं बनी हो। कई घर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुए देखे जा सकते हैं।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, मंगलवार 07 मई 2024
sheelshukla100@gmail.com

हैमस्ट्रिंग चोट के कारण श्रीलंका लौटेंगे सीएसके के तेज गेंदबाज पाथिराना

पाथिराना सीएसके के लिए अंतिम मैच सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेला था जिसमें टीम 78 रन से जीती थी। इस मैच में उन्होंने दो ओवर डाले थे तथा ऐडन मार्कराम और हेनरिक क्लासेन का विकेट लिया था। पाथिराना का बाहर होना सीएसके के लिए बड़ा झटका है क्योंकि इससे उसकी गेंदबाजी पर असर पड़ेगा। चेन्नई। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के तेज गेंदबाज मथीशा पाथिराना हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के बचे हुए इस चरण से बाहर हो गये और वह जल्द ही चोट से उबरने के लिए श्रीलंका लौटेंगे। पाथिराना ने अभी तक आईपीएल के इस चरण में छह मैच खेलकर 13 विकेट झटके हैं। सीएसके ने रविवार को मीडिया विज्ञप्ति में कहा, ''चेन्नई सुपर किंग्स पाथिराना के जल्द ठीक होने की कामना करती है। पाथिराना सीएसके के लिए अंतिम मैच सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेला था जिसमें टीम 78 रन से जीती थी। इस मैच में उन्होंने दो ओवर डाले थे तथा ऐडन मार्कराम और हेनरिक क्लासेन का विकेट लिया था। पाथिराना का बाहर होना सीएसके के लिए बड़ा झटका है क्योंकि इससे उसकी गेंदबाजी पर असर पड़ेगा। तेज गेंदबाज आल राउंडर दीपक चाहर भी पंजाब किंग्स के मैच में लगी हल्की चोट के कारण आईपीएल के बाकी मैचों में नहीं खेल पायेंगे। चाहर सिर्फ दो गेंदें फेंकने के बाद मैदान से बाहर चले गये थे और शार्दुल ठाकुर ने उनका ओवर पूरा किया था। सीएसके के कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने मैच के बाद कहा था, ''दीपक चाहर ठीक नहीं दिख रहे थे। फिजियो और डाक्टर के देखने के बाद मैं सकारात्मक रिपोर्ट की उम्मीद कर रहा हूं। '' सीएसके के श्रीलंकाई स्पिनर महेश तीक्ष्णा कम से दो और मैच में नहीं खेल पायेंगे क्योंकि उनके अमेरिका में अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप की वीजा प्रक्रिया पूरी करने के लिए श्रीलंका जाने की उम्मीद है। बांग्लादेश के तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान भी अब आईपीएल में आगे के मैच में नहीं खेल पायेंगे क्योंकि वह पंजाब किंग्स के खिलाफ पिछले मैच के बाद जिम्बाब्वे के खिलाफ घरेलू टी20 अंतरराष्ट्रीय शृंखला खेलने के लिए राष्ट्रीय टीम में शामिल हो गये।

भारत और आस्ट्रेलिया बांग्लादेश में महिला टी 20 विश्व कप के ग्रुपए में

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद द्वारा घोषित नौवें महिला टी20 विश्व कप के कार्यक्रम के अनुसार भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत चार अक्टूबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ करेगी जबकि छह अक्टूबर को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगी। भारतीय टीम तीसरा मैच नौ अक्टूबर को पहले क्वालीफायर से खेलेगी जिसका अभी फैसला नहीं हुआ है। दुबई। भारत को इस साल तीन से 20 अक्टूबर तक बांग्लादेश में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए रविवार को गत चौंपियन ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के साथ ग्रुप ए में जगह मिली। भारत के सभी ग्रुप मैच सिलहट में खेले जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा घोषित नौवें महिला टी20 विश्व कप के कार्यक्रम के अनुसार भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत चार अक्टूबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ करेगी जबकि छह अक्टूबर को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगी। भारतीय टीम तीसरा मैच नौ अक्टूबर को पहले क्वालीफायर से खेलेगी जिसका अभी फैसला नहीं हुआ है। टीम को अपना अंतिम ग्रुप मैच 13 अक्टूबर को छह बार के विश्व चौंपियन ऑस्ट्रेलिया से खेलना है। आईसीसी ने अपनी वेबसाइट पर लिखा, ''टूर्नामेंट में प्रत्येक टीम चार ग्रुप मैच खेलेगी और प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष दो टीमें 20 अक्टूबर को ढाका में होने वाले फाइनल से पहले 17 और 18 अक्टूबर को होने वाले सेमीफाइनल मुकाबलों में जगह बनाएंगी।'' आईसीसी ने बताया, ''ढाका और सिलहट में 19 दिन में कुल मिलाकर 23 मैच खेले जाएंगे, जरूरत पड़ने पर सेमीफाइनल और फाइनल दोनों के लिए रिजर्व दिन रखे गए हैं।'' मेजबान बांग्लादेश को ग्रुप बी में दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, वेस्टइंडीज और दूसरे क्वालीफायर के साथ रखा गया है। आज क्वालीफाइंग टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाने वाली दो टीम तय होने के साथ मुख्य टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई करने वाली दो टीम का फैसला होगा। आयरलैंड, यूएई, श्रीलंका और स्कॉटलैंड मुख्य टूर्नामेंट में जगह बनाने की दौड़ में हैं। आयरलैंड की टीम आज पहले सेमीफाइनल में स्कॉटलैंड से खेलेगी जबकि दूसरा सेमीफाइनल भी आज ही होगा जिसमें यूएई की भिड़ंत श्रीलंका से होगी। दोनों सेमीफाइनल अबु धाबी के सेख जायेद स्टेडियम में खेले जाएंगे।

आत्मविश्वास और कभी हार नहीं मानने का रवैया सिराज की असली ताकत, गावस्कर ने कहा

स्टीव स्मिथ जैसे खिलाड़ी को आउट करना, जब वह 55 रन पर था... तो यह मोहम्मद सिराज की असली ताकत है, आत्मविश्वास और मैदान पर कभी हार नहीं मानने वाला रवैया।महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने यहां इंडियन प्रीमियर लीग में गुजरात टाइटंस पर रॉयल चौलेंजर्स बेंगलोर की चार विकेट से जीत के बाद कहा कि मोहम्मद सिराज का आत्मविश्वास और कभी हार नहीं मानने वाला रवैया उनकी असली ताकत है।पावरप्ले में सिराज ने दो विकेट चटकाते हुए शुभमन गिल और रिद्धिमान साहा को पवेलियन भेजा जिससे टाइटंस की टीम शनिवार को 19.3 ओवर में सिर्फ 147 रन ढेर हो गई।गावस्कर ने 'स्टार स्पोर्ट्स क्रिकेट लाइव' पर कहा, ''हर बार जब आप मोहम्मद सिराज को देखते हैं, तो आप जानते हैं कि वह अपनी जान लगा देगा। उस समय को याद करें जब उसके पिता का निधन हो गया था, जब वह ऑस्ट्रेलिया में था। वह खेलता रहा।''उन्होंने कहा, ''बहुत से लोग वापस जाना चाहेंगे क्योंकि आपके माता–पिता आपको बहुत प्यारे होते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि उसे अहसास हुआ कि भारत के लिए खेलना महत्वपूर्ण था। इसके अलावा, उस स्तर पर उसकी जगह पक्की नहीं थी। एक स्थापित खिलाड़ी शत प्रतिशत चला गया होता।''गावस्कर ने कहा, ''और याद रखें कि उन्होंने उस गाबा टेस्ट मैच में कितनी शानदार गेंदबाजी की थी। स्टीव स्मिथ जैसे खिलाड़ी को आउट करना, जब वह 55 रन पर था... तो यह मोहम्मद सिराज की असली ताकत है, आत्मविश्वास और मैदान पर कभी हार नहीं मानने वाला रवैया।

पिछले कुछ दिन से बीमार था, लगा कि आज खेल नहीं सकूंगा

गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि उनकी टीम अब बाकी मैच जीतने पर फोकस करेगी। उन्होंने कहा ,'' विकेट पर बहुत कुछ निर्भर करता है। पहले कुछ ओवर में ही पता चल जाता है और उसके हिसाब से खेलना होता है। गुजरात टाइटंस पर इंडियन प्रीमियर लीग के मैच में चार विकेट से मिली जीत के नायक रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरू के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने कहा कि पिछले कुछ दिन से बीमार होने के कारण उन्हें लगा था कि वह इस मैच में खेल नहीं सकेंगे।सिराज ने पहले स्पैल में ही रिधिमान साहा और शुभमन गिल को आउट करके गुजरात को दबाव में ला दिया था। उन्होंने कहा ,'' मैं पिछले कुछ दिन से बीमार था। लगा था कि आज खेल नहीं सकूंगा लेकिन मैं खेलना चाहता था और बहुत खुश हूं कि खेल सका।''उन्होंने कहा ,' सुबह उठा तो लगा कि आराम करना चाहिये , आज नहीं खेल सकूंगा। लेकिन फिर मैने सोचा कि नहीं मुझे खेलना ही है।'' आरसीबी के कप्तान फाफ डु प्लेसी ने कहा ,'' पिछले दोनों मैचों में प्रदर्शन शानदार रहा। बल्ले और गेंद दोनों से। यहां 180 . 90 का स्कोर अच्छा रहता।''गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि उनकी टीम अब बाकी मैच जीतने पर फोकस करेगी। उन्होंने कहा ,'' विकेट पर बहुत कुछ निर्भर करता है। पहले कुछ ओवर में ही पता चल जाता है और उसके हिसाब से खेलना होता है। इस विकेट पर 170 . 80 रन अच्छा स्कोर होता। पावरप्ले में हमारी बल्लेबाजी और उनकी गेंदबाजी निर्णायक रही। हम गलतियों से सबक लेकर आने वाले मैच जीतने की कोशिश करेंगे।

रायल चौलेंजर्स बेंगलु ने गुजरात टाइटंस को 4 विकेट से हराया, प्लेआफ की उम्मीदें बरकरार

आरसीबी और गुजरात के बीच मुकाबला खेला गया। अपने गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरू ने गुजरात टाइटंस को चार विकेट से हरा दिया। डु प्लेसी ने 23 गेंद में द चौकों और तीन छक्कों की मदद से 64 रन बनाए जबकि विराट कोहली ने 27 गेंद में दो चौकों और चार छक्कों के साथ 42 रन की पारी खेली। आईपीएल में शनिवार को आरसीबी और गुजरात के बीच मुकाबला खेला गया। अपने गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरू ने गुजरात टाइटंस को चार विकेट से हरा दिया। डु प्लेसी ने 23 गेंद में द चौकों और तीन छक्कों की मदद से 64 रन बनाए जबकि विराट कोहली ने 27 गेंद में दो चौकों और चार छक्कों के साथ 42 रन की पारी खेली। दोनों ने पहले विकेट के लिए 35 गेंद में 92 रन जोड़े। अपनी गलतियों के कारण हालांकि, एक बार आरसीबी 148 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए लड़खड़ा गई थी।इस जीत से आरसीबी 11 मैचों में आठ अंक के साथ सातवें स्थान पर है और तकनीकी तौर पर प्लेआफ की दौड़ से बाहर नहीं हुई है। डुप्लेसी और कोहली ने पावरप्ले में 92 रन जोड़े जिसमें 10 चौके और सात छक्के शामिल थे। कोहली ने तेज गेंदबाज मोहित शर्मा को पहले ही ओवर में दो छक्के लगाये। डुप्लेसी ने बायें हाथ के तेज गेंदबाज जोश लिटिल को दूसरे ओवर में तीन चौके और एक छक्के समेत 20 रन निकाले। अपना पहला आईपीएल मैच खेल रहे स्पिनर मानव सुतार भी कुछ नहीं कर सके। कोहली ने सुतार को लगातार दो छक्के लगाये।डुप्लेसी ने मोहित को पांचवें ओवर में चार चौके जड़कर 18 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया। आरसीबी ने छठे से 10वें ओवर के बीच में विल जैक्स, रजत पाटीदार, ग्लेन मैक्सवेल और कैमरन ग्रीन के विकेट गंवा दिये। लिटिल ने 45 रन देकर चार विकेट लिये जबकि नूर अहमद को दो विकेट मिले। अहमद ने कोहली को पवेलियन भेजा लेकिन दिनेश कार्तिक ने 12 गेंद में 21 रन बनाकर टीम को जीत तक पहुंचाया। इससे पहले आरसीबी के गेंदबाजों के अनुशासित प्रदर्शन और अपनी गलतियों के कारण गुजरात टाइटंस के बल्लेबाज19 . 3 ओवर में 147 रन पर पवेलियन लौट गए।गुजरात के लिये डेविड मिलर और शाहरूख खान ने 61 रन और राहुल तेवतिया तथा राशिद खान ने 44 रन की साझेदारी की। टीम को शीर्षक्रम पर एक अच्छी साझेदारी की कमी खली। आरसीबी के तेज गेंदबाजों के सामने गुजरात के शीर्षक्रम के बल्लेबाज संघर्ष करते नजर आये। मोहम्मद सिराज ने 29 रन देकर और यश दयाल ने 21 रन देकर दो दो विकेट लिये। गुजरात की टीम पावरप्ले में दो चौके ही लगा सकी जिससे साबित होता है कि बल्लेबाज किस कदर दबाव में थे। गुजरात का पावरप्ले में स्कोर तीन विकेट पर 23 रन था जो इस सत्र का न्यूनतम स्कोर है। सिराज ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए रिधिमान साहा को विकेट के पीछे दिनेश कार्तिक के हाथों लपकवाया।वहीं शुभमन गिल डीप प्वाइंट में विजयकुमार विशाक को कैच देकर लौटे। कैमरन ग्रीन ने पावरप्ले में तीसरा विकेट फॉर्म में चल रहे बी साई सुदर्शन के रूप में लिया जिन्होंने मिड आफ में विराट कोहली को कैच थमाया। मिलर ने 20 गेंद में 30 और शाहरूख ने 24 गेंद में 37 रन बनाकर गुजरात को सम्मानजनक स्कोर तक ले जाने की कोशिश की। दोनों ने चौथे विकेट के लिये 37 गेंद में 61 रन जोड़े। मिलर को 23 के स्कोर पर कर्ण शर्मा

सिराज की स्विंग, आक्रामकता से रायल चौलेंजर्स बेंगलोर और भारत की उम्मीदें बढ़ीं

शुरुआती दो ओवर में नौ रन देकर दो विकेट चटकाए जिससे निश्चित तौर पर राष्ट्रीय टीम को मजबूती मिलेगी क्योंकि आईसीसी की प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में उनके जसप्रीत बुमराह के साथ नई गेंद साझा करने की उम्मीद है। मोहम्मद सिराज की फॉर्म में वापसी ने इस आईपीएल में रॉयल चौलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) की वापसी में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इस तेज गेंदबाज के अच्छे प्रदर्शन ने अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप से पहले भारतीय टीम प्रबंधन को भी राहत दी होगी। सिराज ने आईपीएल में गुजरात टाइटंस के खिलाफ पावर प्ले में शानदार प्रदर्शन करते हुए शुभमन गिल और रिद्धिमान साहा के विकेट लिए। उन्होंने अपने शुरुआती दो ओवर में नौ रन देकर दो विकेट चटकाए जिससे निश्चित तौर पर राष्ट्रीय टीम को मजबूती मिलेगी क्योंकि आईसीसी की प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में उनके जसप्रीत बुमराह के साथ नई गेंद साझा करने की उम्मीद है। पिछले पांच वर्षों से सिराज के साथ काम कर रहे आरसीबी के सहायक कोच एडम ग्रिफिथ ने इस बदलाव का कारण 'गेंद को फिर से स्विंग कराने' को बताया। ग्रिफिथ ने टाइटंस के खिलाफ आरसीबी की चार विकेट की जीत के बाद कहा, ''वह हमारे समूह का अगुआ है। वह पिछले कुछ वर्षों में भारत के लिए काफी मैच खेला है और काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। यह सिर्फ उसकी अच्छी गेंदबाजी नहीं है, यह उसकी आक्रामकता है, उसकी बॉडी लैंग्वेज है, बल्लेबाजों का विकेट लेने की कोशिश करना है। हम जो करने का प्रयास कर रहे हैं, उसका यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।'' उन्होंने कहा, ''उसका गेंद को फिर से स्विंग कराना, अच्छी गति से गेंदबाजी करना और आक्रामक होना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

त्वचा को हाइड्रेट रखने में कारगर है यह जूस, रोजाना सेवन करने से होंगे अनेक फायदे

गर्मी के मौसम में त्वचा का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है. खरबूजा खाने में स्वादिष्ट होने के साथ–साथ सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना गया है. यही नहीं इसका जूस त्वचा को हाइड्रेट रखने में मदद करता है और चेहरे की गंदगी को साफ करता है. यह त्वचा के लिए नेचुरल मॉइश्चराइजर का काम करता है. इसमें पानी और विटामिन भरपूर होता है, जो चेहरे को खूबसूरत बनाने में मदद करता है.खरबूजे का जूसगर्मी के दिनों में अगर आप रोजाना खरबूजे का जूस पीते हैं, तो इसमें मौजूद एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटीबैक्टीरियल गुण त्वचा के चिपचिपे पन को दूर कर पिंपल्स को कम करने में मदद करते हैं. इसके जूस में विटामिन सी भरपूर होता है, जो त्वचा को मुलायम बनाता है. यही नहीं खरबूजे का जूस झुर्रियों को कम करने में भी काफी कारगर माना गया है. इसके अलावा खरबूजा सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद माना गया है. आप इसका रोजाना सेवन कर अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं.ऐसे करें सेवनखरबूजे का जूस आप घर पर बनाकर पी सकते हैं. इसके अलावा आप किसी स्टोर से खरीद कर उसका उपयोग करें. इसे आप दिन में दो बार पी सकते हैं, ध्यान रहे जूस ताजा होना चाहिए. इसके अलावा आप खरबूजे के जूस को किसी दूसरे जूस में शामिल कर भी पी सकते हैं. गर्मी के दिनों में आप खरबूजे के जूस को अपनी डाइट में शामिल कर अपनी त्वचा के स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं. इसके अलावा कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है. जैसे इसके जूस का अधिक सेवन करने से कुछ लोगों को समस्या हो सकती है. अगर इससे आपको कोई एलर्जी या समस्या होती है, तो डॉक्टर की सलाह जरूर लें. डायबिटीज पेशेंट इसका सेवन डॉक्टर की सलाह लेकर करें अगर आप भी चमकदार स्किन पाना चाहते हैं, तो आज से खरबूजे का जूस पीना शुरू कर दें.

यकीन ना हो तो खुद आजमा लीजिए

थोड़ा सा काम करके भी थक जाते हैं, सीढियों से चढने–उतरने में सांस फूलने लगती है, हर समय कमजोरी महसूस होती है. अगर हां तो इसका मतलब आपका स्टैमिना कमजोर हो गया है. स्टैमिना मजबूत होने से किसी काम को बिना थके, बिना रुके देर क कर सकते हैं. अगर ऐसा नहीं कर पा रहे हैं तो आप शारीरिक रूप से कमजोर हो रहे हैं. जिसे बढ़ाने की जरूरत है. अगर आप भी स्टैमिना बढ़ाना चाहते हैं तो इसके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं,ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं,सिर्फ कुछ घरेलू उपाय की मदद से इसे बूस्ट कर सकते हैं.

स्टैमिना बढ़ाने के घरेलू उपाय

1. कमजोर स्टैमिना को बढ़ाना चाहते हैं तो रोजाना एक्सरसाइज करना शुरू कर दें. स्ट्रेंथ एक्सरसाइज, टहलना, दौडना, स्विमिंग, साइकिल चलाना, डांस करना फायदेमंद होता है.

2. सारा दिन बैठे रहने से स्टैमिना कमजोर हो सकती है, इसलिए खुद को फिजिकली एक्टिव रखें और पुश अप्स, बैलेंस बनाने वाले वर्कआउट करें.3. नियमित तौर पर योग, मेडिटेशन, योगासन करने से शारीरिक क्षमता बढ़ाने में मदद मिलती है.4. अश्वगंधा हर्ब के सेवन से स्टैमिना और एनर्जी लेवल बढ़ा सकते हैं. यह कॉग्निटिव फंक्शन को बढ़ाकर तनाव जैसी समस्याओं को भी दूर कर सकता है.

5. शरीर में सोडियम की कमी होने से भी स्टैमिना कमजोर हो जाती है. ऐसे में सही मात्रा में सोडियम लेकर या लिक्विड चीजें लेकर इसे बूस्ट कर सकते हैं.6. बहुत ज्यादा शराब, सिगरेट पीते हैं तो तुरंत इस आदत को छोड़ दें. ये अंदर ही अंदर शरीर को खोखला बनाकर उसे कमजोर करते हैं. शराब ऊर्जा को कम रते हैं, सिगरेट में हानिकारक निकोटीन, कार्बन मोनो–ऑक्साइड पाए जाते हैं, जो ब्लड वेसल्स को संकुचित कर ब्लड सर्कुलेशन को बाधित करते हैं और शरीर को कमजोर बनाते हैं.7. हेल्दी डाइट लेकर स्टैमिना को मजबूत बना सकते हैं. खाने में प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, जिंक, फॉस्फोरस और मैग्नीशियम जैसे पोषक तत्वों से भरपूर फूड्स शामिल करें.8. नट्स, दालें, फलियां, बीज, सब्जी, फल, दूध, दही, अंडा, मछली, चिकन, सोया और टोफू का रोजाना सेवन करें. इससे स्टैमिना बूस्ट होती है.9. दिन में पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं. इससे शरीर अंदर से मजबूत होता है और उसकी क्षमता बढ़ती है.10. रोजाना अपनी बॉडी को प्रॉपर रेस्ट दें. रात में कम से कम 7 से 8 घंटे की

वेब सीरीज मर्डर इन माहिम का ट्रेलर जारी, आमने–सामने दिखे विजय राज और आशुतोष राणा

बॉलीवुड के दो दिग्गज कलाकार आशुतोष राणा और विजय राज जल्द ही फिजियोलॉजिकल क्राइम थ्रिलर सीरीज मर्डर इन माहिम में मुख्य भूमिका निभाते नजर आएंगे। आज शुक्रवार को जियो सिनेमा ने सीरीज का ट्रेलर जारी किया गया, जिसे देख दर्शकों का उत्साह बढ़ गया। मर्डर इन माहिम को एक सामाजिक टिप्पणी माना जा रहा है, जो खौफनाक मर्डर मिस्ट्री और मुंबई की गुत्थी को उजागर करती है, जिसमें पीटर के रूप में आशुतोष राणा और जेंडे के किरदार में विजय राज के बीच खोई हुई दोस्ती के मेल–मिलाप को दिखाया गया है।राजनीति बालाकोट और बियॉन्ड की रिकॉर्ड–तोड़ सफलता के एक हफ्ते के भीतर जियो सिनेमा 10 मई को एक और मूल सीरीज मर्डर इन माहिम लॉन्च करने के लिए तैयार है। लेखक जेरी पिंटो की समीक्षकों द्वारा प्रशंसित पुस्तक से अनुकूलित मनोरंजक सीरीज राज आचार्य द्वारा निर्देशित है और टिपिंग प्वाइंट फिल्म्स और जिग्स पिक्चर्स द्वारा बनाई गई है। इसमें शिवानी रघुवंशी और शिवाजी साटम भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं।माहिम स्टेशन पर एक भयानक हत्या की पृष्ठभूमि पर आधारित सीरीज में पीटर को इस भयावह जांच में उलझा हुआ दिखाया गया है। मुश्किलें तब बढ़ जाती हैं, जब उसका अपना बेटा सुनील इस मामले में संदिग्ध बन जाता है। इस सबके बीच पीटर और जेंडे गुप्त इच्छाओं, ब्लैकमेल और अनकहे प्यार की दुनिया में फंस जाते हैं, क्योंकि वे हत्यारे का पता लगाते हैं और रास्ते में अपने व्यक्तिगत दिक्कतों का सामना करते हैं। प्रत्येक रहस्य के खुलासे और मोड़ के साथ सीरीज एक नई रहस्य का जाल बन जा रही है।मर्डर इन माहिम में अपनी भूमिका पर टिप्पणी करते हुए आशुतोष राणा ने कहा, जब जटिल भूमिकाओं की बात आती है तो मैं सबसे अधिक उत्साहित होता हूं। पीटर एक ऐसा किरदार है। मेरी कोशिश हमेशा यही रहती है कि मैं कुछ अलग करूं, एक अलग लुक में और मर्डर इन माहिम ने मुझे वह अवसर दिया। हत्या की जांच की जटिलताओं के बीच पीटर के आंतरिक संघर्ष ने मुझे चरित्र में गहराई जोडने की अनुमति दी। यह सिर्फ एक गहन हत्या का रहस्य नहीं है, इसमें कई महत्वपूर्ण कथानक शामिल हैं, जो सामाजिक कलंक को दर्शाते हैं, जैसे जाति, लिंग और कामुकता के इर्द–गिर्द,

दुर्लभ संवेदनशीलता के साथ यही इस शो की खूबसूरती है।हीं, विजय राज ने भी सीरीज के बारे में बात करते हुए कहा, जेंडे के चरित्र का सबसे आकर्षक पहलू उनके व्यक्तित्व के विभिन्न रंग हैं। मेरा प्रयास इस चरित्र में एक मानवीय स्पर्श लाना था, जो जांच दृश्यों में स्पष्ट है, लेकिन साथ ही आक्रामकता भी है। व्यक्तिगत मोर्चे पर जो उनके परिवार के सामने आता है, इसलिए मेरे किरदार के भावनात्मक आर्क को उकेरना और भावनाओं की एक पूरी सीरीज को स्क्रीन पर लाना रोमांचक था। मर्डर इन माहिम जैसे शो में काम करना एक दुर्लभ अनुभव है। पूरी टीम ने इस शो में अपना दिल और आत्मा लगा दी है, उम्मीद है कि दर्शकों को इसे देखने में मजा आएगा। वेब सीरीज मर्डर इन माहिम 10 मई से जियो सिनेमा पर स्ट्रीम होगी।

थिएटर के बाद ओटीटी प्लेटफार्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई अजय देवगन की शैतान

अजय देवगन और आर माधवन स्टारर हॉरर फिल्म 'शैतान' ने थिएटर में खूब गर्दा उड़ाया. इस फिल्म ने अपने काले जादू से दो महीने तक बॉक्स ऑफिस को अपने वश में किये रखा और जमकर कारोबार किया. इस फिल्म की ओटीटी रिलीज का भी दर्शकों को बेसब्री से इंतजार था. वहीं थिएट्रिकल रिलीज के लगभग दो महीने बाद फाइनली 'शैतान' ने ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दस्तक दे दी है. चलिए जानते हैं इस सुपरनेचुरल थ्रिलर को ओटीटी पर कब और कहां देख सकते हैं?

'शैतान' काले जादू और तंत्र मंत्र पर बेस्ड फिल्म है. इस हॉरर थ्रिलर की कहानी को दर्शकों ने काफी पसंद किया था और इसने सिनेमाघरों में शानदार

परफॉर्म किया था. वहीं थिएटरों में धमाल माचने के बाद फाइनली 'शैतान' ओटीटी पर रिलीज हो गई है. ये फिल्म दिग्गज प्लेटफॉर्म नेटफिलक्स पर अवेलेबल है. शुक्रवार को, स्ट्रीमिंग दिग्गज ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर घोषणा की थी कि फिल्म शनिवार, 4 मई, 2024 को डिजिटल रिलीज हो रही है.

फिल्म के एक पोस्टर के साथ, नेटफिलक्स इंडिया ने लिखा, घर के दरवाजे बंद रखना, कहीं शैतान ना आ जाए शैतान आधी रात को नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम करनी शुरू कर रहा है!यानी जो लोग 'शैतान' को सिनेमाघरों में नहीं देख पाए थे, वे अब अपने घरों में आराम से फिल्म का मजा ले सकते हैं.

बता दें कि 'शैतान' सिनेमाघरों में 8 मार्च को रिलीज हुई थी. इसे जियो स्टूडियोज, देवगन फिल्म्स और पैनोरमा स्टूडियोज द्वारा प्रेजेंट किया गया था और इसका निर्माण अजय देवगन, ज्योति देशपांडे, कुमार मंगत पाठक और अभिषेक पाठक ने किया था. वहीं फिल्म का निर्देशन विकास बहल ने किया है. 'शैतान' एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर है और ये गुजराती की हॉरर फिल्म वश की हिंदी रीमेक है. इस फिल्म में अजय देवगन, आर माधवन, ज्योतिका और जानकी बोदीवाला ने अहम रोल प्ले किया है.

शैतान में अजय देवगन ने फिर दृश्यम 2 के बाद एक प्रोटेक्टिव पिता के रोल में कमबैक किया था. इस फिल्म में अजय अपनी बेटी को बचाने के लिए शैतानी ताकतों से भिड़ जाते हैं. फिल्म में आर माधवन ने शैतान का किरदार निभाया है. माधवन ने अपने इस रोल से खूब लाइमलाइट बटोरी है.

बाक्स आफिस पर बड़े मियां छोटे मियां पर भारी पड़ रही अजय की मैदान

ईद के मौके पर सिनेमाघरों में अक्षय कुमार–टाइगर श्रॉफ की 'बड़े मियां छोटे मियां' और अजय देवगन की 'मैदान' रिलीज हुई थी. दोनों फिल्मों के बज को देखते हुए लग रहा था कि ये साल 2024 की सबसे बड़ी हिट साबित होंगी. लेकिन इन दोनों की परफॉर्मेंस बॉक्स ऑफिस पर बेहद खराब रही है. दोनों ही फिल्में रिलीज के तीन हफ्तों से बॉक्स ऑफिस पर कमाई के लिए स्ट्रगल कर रही है. चलिए यहां जानते हैं 'बड़े मियां छोटे मियां' और 'मैदान' ने रिलीज के 23वें दिन कितनी की कमाई?

अब्बास जफर के निर्देशन में बनी 'बड़े मियां छोटे मियां' में हाई–ऑक्टेन एक्शन सीक्वेंस से लेकर कॉमेडी और रोमांस सब कुछ डाला गया था. हर किसी को उम्मीद थी कि ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर गर्दा उड़ा देगी. लेकिन ईद जैसे त्योहार पर रिलीज होने के बावजूद इस फिल्म ने बेहद कम कमाई की.हालांकि फिल्म ने पहले हफ्ते में 49.9 करोड़ का कलेक्शन किया. जिसके बाद लगने लगा था कि फिल्म अपना बजट तो निकाल ही लेगी. हालांकि रिलीज के दूसरे हफ्ते में फिल्म की कमाई का ग्राफ गिरता चला गया और इसके सेकंड वीक का कलेक्शन 8.6 करोड़ रुपये रहा.

इसके बाद फिल्म की तीसरे हफ्ते की कमाई महज 3.9 करोड़ रुपये रही. वहीं अब ये फिल्म रिलीज के चौथे हफ्ते में एंट्री कर चुकी है और इसके चौथे फ्राइडे की कमाई के शुरुआती आंकड़े आ गए हैं.

3459 सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक 'बड़े मियां छोटे मियां' ने रिलीज के 23वें दिन यानी चौथे फ्राइडे 30 लाख की कमाई की. इसी के साथ 'बड़े मियां छोटे मियां' का 23 दिनों का कुल कलेक्शन अब 62.70 करोड़ रुपये हो गया है.

देश के बेहद फेमस फुटबॉल कोच रहे सैयद अब्दुल रहीम के जीवन पर आधारित स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म 'मैदान' में अजय देवगन ने एक बार फिर अपनी दमदार एक्टिंग का लोहा मनवाया है. इस इंस्पायरिंग स्टोरी वाली फिल्म को सिनेमाघरों में देखकर निकलने वाले हर दर्शक ने सराहा हैं लेकिन फिर भी 'मैदान' कमाई के मामले में फिसड्डी साबित हुई है. शानदार रिव्यू के बावजूद 'मैदान' ने रिलीज के पहले हफ्ते में 28.35 करोड़ का कलेक्शन किया. वहीं दूसरे हफ्ते में फिल्म की कमाई 9.95 करोड़ रुपये रही. तीसरे हफ्ते में 'मैदान' ने 7.3 करोड़ का कलेक्शन किया. वहीं अब ये फिल्म रिलीज के चौथे हफ्ते में पहुंच चुकी है औ इसी के साथ 'मैदान' के चौथे फ्राइडे की कमाई के शुरुआती आंकड़े भी आ चुके हैं. सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक 'मैदान' ने रिलीज के चौथे फ्राइडे 50 लाख की कमाई की है. इसी के साथ 'मैदान' का 23 दिनों का कुल कलेक्शन अब 46.10 करोड़ रुपये हो गया है.'बड़े मियां छोटे मियां' और 'मैदान' बॉक्स ऑफिस पर रेंग–रेंग कर कमाई कर रही है. दोनों ही फिल्में अपने बजट की आधी लागत भी वसूल नहीं पाई है. फिलहाल बॉक्स ऑफिस पर अगले हफ्ते कोई बड़ी फिल्म रिलीज नहीं हो रही है. ऐसे इन दोनों फिल्मों के पास अभी टिकट काउंटर पर थोड़ी बहुत और कमाई करने का मौका है.

बाक्स आफिस पर आयुष शर्मा की फिल्म रुसलान का खेल लगभग खत्म

सलमान खान के बहनोई और अभिनेता आयुष शर्मा फिल्म रुसलान को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। उन्हें इस फिल्म की सफलता से बड़ी उम्मीदें थीं, लेकिन उनकी मेहनत पर्दे पर रंग न ला पाई।दर्शकों के साथ–साथ ज्यादातर समीक्षकों ने भी फिल्म को नकार दिया। यही वजह है कि पहले ही दिन से यह सिनेमाघरों में दर्शकों के लिए तरस रही है। 8वें दिन भी फिल्म की कमाई ने दम नहीं भरा।आइए फिल्म का कुल कारोबार जानें।बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक, रुसलान की कमाई रिलीज के 8वें दिन और गिर गई। 7वें दिन इसने 29 लाख रुपये तो 8वें दिन महज 7 लाख रुपये अपने खाते से जोड़े। यह पहला मौका है, जब फिल्म ने इतनी कम कमाई दर्ज की है।इस तरह देशभर में अब तक फिल्म का कुल कलेक्शन सिर्फ 4 करोड़ 7 लाख रुपये हो पाया है। कमाई तो छोडिए, फिल्म बॉक्स ऑफिस पर पाई–पाई की मोहताज हो गई है।फिल्म ने पहले दिन सिर्फ 60 लाख रुपये कमाए थे। वीकेंड पर कलेक्शन में उछाल देखने को मिला था, लेकिन कमाई कुछ खास नहीं हुई।फिल्म ने दूसरे दिन 80 लाख, तीसरे दिन 90 लाख, चौथे दिन 40 लाख, 5वें दिन 55 लाख, छठे दिन 46 लाख और 7वें दिन 29 लाख रुपये कमाए।रुसलान को बनाने में 25 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं, लेकिन कमाई के आंकड़ों से लग नहीं रहा है कि ये अपनी लागत भी वसूल पाएगी।करण बुटानी के निर्देशन में बनी रुसलान में आयुष एक रॉ एजेंट की भूमिका में हैं। उन्होंने फिल्म के लिए अपनी बाडी और सिक्स पैक एब्स बनाने और एक्शन में तेज–तर्रार होने के लिए खूब मेहनत की, लेकिन इस चक्कर में वह अपनी एक्टिंग पर काम करना भूल गए। भावुक, गुस्सैल हर सीन में वह एक जैसा अभिनय करते हैं।

करियर से संतुष्ट हूं, लेकिन मुझे अभी एक लंबा रास्ता तय करना है – अलाया एफ

2020 में अपने करियर शुरुआत के बाद से, अलाया एफ ने कई बड़े बजट की फिल्मों में अलग–अलग किरदार निभाए हैं।

अभिनेत्री ने बताया कि कैसे कुछ फिल्में ऐसी होती हैं, जो उन्हें कड़ी मेहनत के बाद मिलती है और कुछ उनके भाग्य से मिलती हैं।अलाया ने कहा, हां, मैं अलग–अलग चीजें करने की कोशिश करती हूं, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे हर तरह की फिल्में ऑफर होती हैं। उसमें कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जिनके लिए मैं बहुत मेहनत करती हूं और कुछ फिल्में पूरी तरह से भाग्य पर निर्भर होती हैं। यह हर चीज का मिश्रण है।एक्ट्रेस ने कहा, मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे अलग–अलग भूमिकाएं मिलीं और मुझे उम्मीद है कि यह जारी रहेगी।एक्ट्रेस पूजा बेदी की बेटी अलाया ने सैफ अली खान स्टारर फिल्म जवानी जानेमन से डेब्यू किया था। इसके बाद उन्हें साइकोलॉजिकल थ्रिलर फ्रेडी, ऑलमोस्ट प्यार विद डीजे मोहब्बत और बड़े मियां, छोटे मियां में देखा गया। वह जल्द ही श्री में नजर आएंगी।जब उनसे पूछा गया कि बड़ी फिल्में उनके पास आ रही हैं, क्या उन्हें लगता है कि उन्होंने अपने करियर में खास मुकाम हासिल कर लिया है? एक्ट्रेस ने जवाब देते हुए कहा, मुझे नहीं लगता कि कोई भी एक्टर यह कहेगा, हां, मैंने इसे बनाया है। मैं अपने करियर से संतुष्ट हूं, लेकिन मुझे अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। मैं आगे बढ़ रही हूं और मुझे नहीं लगता कि यह कभी खत्म होगा। मुझे लगता है कि मैं हर दिन अपना बेस्ट दे रही हूं और उम्मीद करती हूं कि लोगों को यह पसंद आएगा।

बैकलेस आउटफिट पहन अवनीत कौर ने शेयर किया हाट लुक, तस्वीरें देख फैंस के उड़े होश

एक्ट्रेस अवनीत कौर हमेशा अपने ग्लैमरस लुक्स और स्टाइलिश ड्रेसिंग सेंस के कारण सोशल मीडिया पर लाइमलाइट बटौरती रहती हैं। एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर साझा करती हैं तो फैंस अक्सर उनके लुक्स पर अपना दिल हार जाते हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने स्टनिंग फोटोशूट की तस्वीरें फैंस के बीच शेयर कर लोगों का ध्यान उनकी ओर खींच लिया है।टिकू वेड्स शेरू से बॉलीवुड इंडस्ट्री में डेब्यू करने वाली एक्ट्रेस अवनीत कौर ने बेहद कम उम्र में लोगों के बीच अपनी पहचान बनाई है।एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर अपलोड करती हैं तो फैंस अक्सर उनके हर एक लुक पर अपना दिल हार जाते हैं।हाल ही में एक्ट्रेस अवनीत कौर ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरों से एक बार फिर फैंस को हैरान कर दिया है।लेटेस्ट फोटोशूट के दौरान एक्ट्रेस अवनीत कौर ने कैमरे के सामने एक से बढकर एक स्टनिंग लुक में पोज देते हुए हॉट फोटोज क्लिक करवाई हैं।बता दें कि एक्ट्रेस अवनीत कौर जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर करती हैं तो अक्सर सोशल मीडिया पर बवाल मच जाता है। इन तस्वीरों में आप देख सकते हैं अवनीत कौर ने व्हाइट कलर की बैकलेस ड्रेस पहनी हुई है, जिसमें वो काफी स्टनिंग पोज देती हुई नजर आ रही हैं।बालों को स्टाइल कर के और साथ ही लाइट

मेकअप कर के एक्ट्रेस अवनीत कौर ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। अवनीत कौर की इन तस्वीरों को शेयर हुए कुछ ही घंटे हुए हैं और अब तक 2 लाख स भी ज्यादा यूजर्स ने फोटोज पर लाइक्स और कॉमेंट्स कर रहे हैं।

वरुण धवन और जाह्नवी कपूर की फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी में शामिल हुए मनीष पाल!

शशांक खैतान के निर्देशन में बनी रही फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी का दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।इस फिल्म के लिए वरुण धवन और जाह्नवी कपूर ने एक बार फिर हाथ मिलाया है। बवाल के बाद यह वरुण और जाह्नवी के बीच दूसरा सहयोग है।ताजा खबर यह है कि छोटे पर्दे के प्रसिद्ध अभिनेता और होस्ट मनीष पॉल भी सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी में अपनी अदाकारी का तडका लगाने को तैयार हैं।एक रिपोर्ट के मुताबिक, सनी संस्कारी

की तुलसी कुमारी में वरुण और जाह्नवी के साथ मनीष भी नजर आएंगे।अभिनेता की निर्माताओं से बातचीत जारी है। मनीष को फिल्म की स्क्रिप्ट पसंद आ गई है।उम्मीद है कि वह जल्द फिल्म की शूटिंग शुरू कर देंगे। फिलहाल खबर की आधिकारिक पुष्टि होना बाकी है।बता दें, इससे पहले अभिनेत्री सान्या मल्होत्रा और अभिनेता रोहित सराफ के फिल्म से जुडने की खबर सामने आई थी। करण जौहर सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी के निर्माता हैं।

प्रियंका चोपड़ा ने करीना कपूर के लिए प्यारा संदेश पोस्ट किया, यूनिसेफ परिवार में बेबो का किया स्वागत

बॉलीवुड स्टार करीना कपूर को यूनिसेफ इंडिया के नेशनल एंबेसडर के रूप में नामित किया गया है। करीना पहली बार 2014 में एक सेलिब्रिटी एडवोकेट के रूप में संगठन में शामिल हुईं। वहीं 2016 में प्रियंका चोपड़ा बनी यूनिसेफ की ग्लोबल गुडविल एंबेसडर। करीना कपूर ने इंस्टाग्राम पर आभार व्यक्त किया और टीम को धन्यवाद किया।बॉलीवुड स्टार करीना कपूर को यूनिसेफ इंडिया के नेशनल एंबेसडर के रूप में नामित किया गया है। बेबो पहली बार 2014 में एक सेलिब्रिटी एडवोकेट के रूप में संगठन में शामिल हुईं। अपने हालिया नियुक्ति समारोह में, भावुक दिख रही करीना ने मंच पर अपना भाषण दिया। यूनिसेफ की ग्लोबल गुडविल एंबेसडर और करीना की बॉलीवुड सहयोगी प्रियंका चोपड़ा ने अब इस पर प्रतिक्रिया दी है। इवेंट से करीना की एक तस्वीर साझा करते हुए, प्रियंका ने लिखा, "परिवार में आपका स्वागत है @kareenkapoor[kku] बहुत योग्य।" करीना ने भी पोस्ट को दोबारा शेयर किया और लिखा, "धन्यवाद पीसीजे, जल्द ही फिर मिलेंगे।प्रियंका 2006 से यूनिसेफ के साथ जुड़ी हुई हैं और उन्हें साल 2010 और 2016 में बाल अधिकारों के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक यूनिसेफ गुडविल एंबेसडर नामित किया गया था। प्रियंका पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा और महिलाओं के अधिकारों सहित कई मुद्दों की वकालत करती हैं। प्रियंका खासतौर पर लैंगिक समानता और नारीवाद को लेकर काफी वोकल हैं। करीना ने व्यक्त किया आभार 4 मई को एक इंस्टाग्राम पोस्ट में, करीना ने यूनिसेफ इंडिया के नेशनल एंबेसडर के रूप में अपनी नई भूमिका के लिए आभार और उत्साह व्यक्त किया और बच्चों के अधिकारों की वकालत जारी रखने और सभी बच्चों के लिए समानता सुनिश्चित करने का वादा किया। करीना ने यूनिसेफ इंडिया के साथ अपनी दस साल की यात्रा के बारे में भी बात की और कहा कि यह समृद्ध रही है। उन्होंने लिखा, "मेरे लिए एक भावनात्मक दिन। मैं यूनिसेफ भारत का राष्ट्रीय राजदूत नियुक्त होने पर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। पिछले 10 वर्षों में /नदपबमपिदकपं के साथ काम करना वास्तव में समृद्ध और ज्ञानवर्धक रहा है। हमने जो काम किया है उस पर मुझे गर्व है ।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, मंगलवार 07 मई 2024
sheelshukla100@gmail.com

तबीयत बिगड़ने पर बच्चों को अस्पताल ले जाने के लिए सरकारी एम्बुलेंस का करें प्रयोग

दस्त से जीवन की रक्षा करते हैं ओआरएस घोल और जिंक टेबलेट

ब्यूरो अंकित वर्मा

देवरिया। बदलते मौसम में नवजात और बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति खास तौर पर सतर्क रहने की आवश्यकता है। इसे देखते हुए सभी आशा, एएनएम, आयुष्मान आरोग्य मंदिर और सरकारी अस्पतालों पर ओआरएस के पर्याप्त इंतजाम किये गये हैं। बच्चों को उल्टी दस्त की दिक्कत हो तो तुरंत नजदीकी अस्पताल के चिकित्सक को दिखाएं और सुविधा का लाभ लें। चिकित्सक द्वारा लिखी गयी दवा के साथ साथ बच्चे को ओआरएस का घोल भी देते रहें। सीएमओ (मुख्य चिकित्सा अधिकारी) डॉ राजेश झा ने यह जनपद वासियों से अपील करते हुए बताया कि मई और जून माह में हीटवेव (लू) का असर रहता है। इस मौसम में होने वाली बीमारियों से बचाव और नियंत्रण के आवश्यक उपाय स्वास्थ्य विभाग द्वारा किए जा रहे हैं। ब्लॉक स्तर पर इलाज की समुचित व्यवस्था के लिए ओआरएस और आईवी फ्ल्यूड का पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध करा दिया गया है। स्वास्थ्य केंद्रों पर आवश्यक दवाओं की आपूर्ति भी सुनिश्चित करा दी गई है, ताकि किसी भी स्थिति से निपटा जा सके। सीएमओ ने बताया कि बच्चों की तबीयत बिगड़ने पर सरकारी अस्पताल आने के लिए दो साल तक के बच्चों को 102 नंबर एम्बुलेंस और इससे अधिक उम्र के बच्चों के लिए 108 नंबर एम्बुलेंस का इस्तेमाल किया जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि ओआरएस घोल और जिंक टेबलेट दस्त से बच्चों के जीवन की रक्षा करते हैं। ओआरएस के एक पैकेट को एक लीटर पीने के पानी में घोल बनाकर रखना है जो समय–समय पर बच्चे की आयु के हिसाब से निर्धारित मात्रा में देना है। एम्बुलेंस में भी ओआरएस का इंतजाम एम्बुलेंस सेवा के प्रोग्राम मैनेजर श्याम सुन्दर कनौजिया ने बताया कि जिले में 108 नंबर की 35 और 102 नंबर की 38 एम्बुलेंस वर्तमान में क्रियाशील हैं ।

प्रचंड गर्मी और हीट वेब को देखते हुए इन सभी एम्बुलेंस में ओआरएस के इंतजाम किये गये हैं। बच्चों की तबीयत बिगड़ने पर एम्बुलेंस को कॉल करें। यह नजदीकी सरकारी अस्पताल पर पहुंचाएगी।

चुनाव आयोग बताए 11 दिन बाद कैसे बदला मत प्रतिशत– अविनाश पान्डेय

प्रयागराज। कांग्रेस महासचिव एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडेय ने यह सवाल उठाया है कि पहले और दूसरे चरण के चुनाव के 11 दिन बाद मत प्रतिशत 60 से बढ़कर 66 फीसदी कैसे हो गया?यूपी में चुनाव तैयारियों का समीक्षा के लिए निकले अविनाश पांडेय ने प्रयागराज में कहा कि आयोग को स्पष्ट करना चाहिए कि जो मतदान प्रतिशत वोटिंग वाले दिन फाइनल हो जाता है, वह मतदान के 11 दिनों के बाद कैसे बढ़ गया। भाजपा के 'अबकी बार चार सौ के पार' दावे पर कहा कि दो चरणों के चुनाव के बाद तस्वीर साफ हो रही है और पिछले आठ–दिनों से भाजपा के शीर्ष नेताओं ने अपनी सभाओं में यह दावा करना भी बंद कर दिया है।उन्होंने कहा कि 65 फीसदी मत अन्य दलों को जाता है, जो इस बार कांग्रेस के साथ हुए गठबंधन का हिस्सा हैं। इन मतों को सिर्फ व्यवस्थित करने की जरूरत है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस एवं अन्य दलों के गठबंधन की सरकार केंद्र में आने जा रही है। प्रियंका गांधी के रायबरेली से चुनाव न लड़ने के सवाल पर बोले कि उनके पास देश भर में प्रचार की जिम्मेदारी है, जो ज्यादा महत्वपूर्ण है।उन्होंने कहा कि प्रियंका ने स्वयं निर्णय लिया कि वह चुनाव लड़ने की जगह चुनाव लड़वाएंगी और पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने इस पर अपनी सहमति भी जताई। कांग्रेस के कई प्रत्याशियों के पार्टी छोड़ने के मसले पर कहा कि विरोधियों द्वारा प्रत्याशियों को डराया–धमकाया जा रहा है और खरीद–फरोख्त भी हो रही है। मुख्यमंत्रियों को जेल में डाला जा रहा है। देश की जनता देख रही है कि लोकतंत्र में क्या हो रहा है और अब जनता ही जवाब देगी।महंगाई, बेरोजगारी, नोटबंदी, सांविधानिक संस्थाओं के दुरुपयोग, किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य जैसे मुद्दों पर मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि देश और उत्तर प्रदेश में परिवर्तन की लहर है और इस बार यूपी की सभी 80 सीटों पर गठबंधन ने जीत के लिए पूरा जोर लगा दिया है। अविनाश पांडेय रविवार सुबह संवाददाताओं से बातचीत के बाद मिर्जापुर, भदोही, जौनपुर, वाराणसी के दौरे पर निकल गए।उनके साथ राष्ट्रीय सचिव राजेश तिवारी, शेखर

बहुगुणा, प्रदेश कोषाध्यक्ष शिव पांडेय, प्रदेश उपाध्यक्ष विश्व विजय सिंह, शहर अध्यक्ष प्रदीप मिश्र अंशुमन, यमुनापार अध्यक्ष अरुण तिवारी, कांग्रेस प्रत्याशी उज्ज्वल रमण सिंह, प्रदेश महासचिव मुकुंद तिवारी, पूर्व प्रवक्ता किशोर वार्ष्णेय, जावेद उर्फी, प्रवक्ता हसीब अहमद आदि मौजूद रहे।

वोटरों को साधने के लिए भाजपा का नुक्कड़ नाटक का मेगा प्लान

प्रयागराज। चुनावी माहौल को दिलचस्प बनाने के लिए अपने सांस्कृतिक चुनावी कैंपेन के साथ मतदाता तक पहुंचने की तैयारी कर रही है। जिला प्रवक्ता राजेश केसरवानी ने बताया कि प्रयागराज की दोनों लोकसभा फूलपुर एवं इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र के मतदाताओं को साधने के लिए नुक्कड़ नाटक का मेगा प्लान बनाया है। जिसके जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के द्वारा किए गए विकास का संदेश जन जन तक पहुंचाया जाएगा। कांग्रेस और सपा के शासन में किए गए भ्रष्ट शासन की पोल खोलेंगे और उनकी नियति का पर्दाफाश करेंगे। नुक्कड़ नाटक के जरिए मोदी सरकार के द्वारा राम मंदिर निर्माण, धारा 370 का हटाना, सिटिजन अमेंडमेंट एवं ट्रिपल तलाक एक्ट लागू करना, प्रयागराज का दिव्य एवं भव्य कुंभ एवं प्रयागराज में विकास की योजनाओं को लेकर किए गए कार्यों के विषय पर आधारित होगा। इलाहाबाद एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्र में लगभग 40 नुक्कड़ नाटक की टोली वार्ड स्तर पर महानगर, नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रसिद्ध चौक चौराहों पर नुक्कड़ नाटक के जरिए मतदाताओं को भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में साधने का काम करेंगी और पार्टी के प्रत्याशियों को जीतने की और 400 पार मोदी सरकार बनाने की अपील करेगी। नुक्कड़ नाटक का प्रोग्राम बहुत जल्द शुरुआत होने जा रही है जो 23 मई तक चलेगी।

इविवि लगातार पांच बार की टापर को रखा पदकों से वंचित

पीएमओ के हस्तक्षेप से मिले चार स्वर्ण पदक

प्रयागराज। निष्ठा मिश्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की उत्कृष्ट पूर्व छात्रा हैं, जिन्होंने स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों में टॉप किया था। लेकिन उन्हें इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अपने पदक जारी कराने के लिए राष्ट्रपति के शिकायत कक्ष से न्याय की गुहार लगानी पड़ी। उन्होंने 2011 की स्नातक परीक्षा में नामांकित सभी तीन विषयों में टॉप किया था और उन्होंने 2013 में अंग्रेजी साहित्य परीक्षा में पोस्ट ग्रेजुएशन में भी टॉप किया था।वह लगातार 5 वर्षों तक अपने सभी विषयों में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्रा रही। उनकी तमाम उपलब्धियों के बावजूद, उन्हें 13 वर्षों तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा उनके पदकों से वंचित रखा गया। शनिवार को प्रधान मंत्री कार्यालय के हस्तक्षेप के बाद उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन ने 13 वर्षों के बाद अंततः स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों परीक्षाओं में लगातार 5 वर्षों तक मेरिट के क्रम में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। उन्हें 4 स्वर्ण पदकों से सम्मानित किया गया। यह लड़ाई तब शुरू हुई जब तीन से चार अलग–अलग कुलपतियों के बदलने के कारण विश्वविद्यालय ने निर्णय लिया कि जब दीक्षांत समारोह आयोजित किया जा रहा है तो केवल उन सत्रों में टॉप करने वालों को ही पदक दिया जाना चाहिए। जबकि बाकी अन्य लोगों को प्रमाण पत्र से ही संतोष करना चाहिए। इन पदकों को विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित नहीं किया गया था और ये निजी पदक थे। जिन्हें उन लोगों द्वारा वित्त पोषित किया गया था, जिन्होंने आधी सदी से भी पहले, ज्यादातर आजादी के समय या उससे पहले, इनके लिए धन का योगदान दिया था।निष्ठा ने तर्क दिया कि चूंकि ये पदक हाल ही में 2021 में आयोजित दीक्षांत समारोह में दिए गए थे, इसका मतलब है कि इन पदकों के लिए धन उपलब्ध है।

चार घंटे बंद की गई शास्त्री पुल की एक लेन, बेयरिंग में आई खराबी

लगा भीषण जाम यातायात से हुई दिक्कत सोमवार को भी होगी दूसरे पिलर की मरम्मत

प्रयागराज (आरएनएस)। शास्त्री पुल के उत्तरी लेन के पिलरों में आ रही खराबी दूर होने का का नाम ही नहीं ले रही है। तकरीबन डेढ़ माह बाद एक बार फिर उत्तरी लेन के पिलरों में खराबी आ गई। रविवार को तकरीबन चार घंटे उत्तरी लेन पर यातायात बंद कर पिलर नंबर 10 की मरम्मत की गई। इस दौरान पता चला कि पिलर नंबर 10 का रोलर अपनी जगह से खिसक गया है। इसके साथ ही फाउंडेशन भी टूट गया था। दक्षिणी लेन के पिलर नंबर दो में भी आई खराबी को दूर करने के लिए मरम्मत कार्य किया गया। मरम्मत कार्य में लोक निर्माण विभाग के आधा दर्जन कर्मचारियों को लगाया गया था। इसके साथ ही पिलर नंबर 22 और 42 की मरम्मत सोमवार को होगी। इस दौरान यातायात एक बार फिर बंद होने की संभावना जताई गई है। पुल के पिलरों की मरम्मत कार्य के कारण दोनों ओर के वाहनों को एक लेन से गुजारा गया। इसके चलते सुबह से शाम चार बजे तक जाम जैसे हालात बने रहे। भीषण गर्मी में जाम के झाम को समाप्त करने में इलाकाई पुलिस और ट्रैफिक पुलिस के पसीने छूट गए थे।इसकी मरम्मत कार्य का जिम्मा पीडब्ल्यूडी के तृतीय खंड के अफसर और कर्मचारियों के ऊपर है। डीएम के आदेश के बाद रविवार को शास्त्री पुल के प्रयागराज से वाराणसी जाने वाली लेन के पिलरों की मरम्मत कार्य किया गया।

पिलर नंबर 10 में ज्यादा खराबी पाई गई है। मरम्मत कार्य में जुटे लोक निर्माण विभाग के कर्मचारियों ने बताया कि रोलर अपनी जगह से खिसक गया है। इसकी वजह से पिलर का फाउंडेशन भी टूट गया है। मरम्मत कार्य सुबह ग्यारह से तीन बजे के बाद तक चला। इसके साथ ही दक्षिणी लेन के पिलर नंबर दो पर भी मरम्मत कार्य आज चार घंटे तक चला। कर्मचारियों ने बताया कि 10 वें नंबर के पिलर के बाद सोमवार को पिलर नंबर 22 और 42 में आई खराबी को दूर किया जाएगा। इस दौरान प्रभावित लेन पर चार पहिया और भारी वाहनों का आवागमन बंद होने की संभावना है।

शास्त्री पुल के उत्तरी लेन के 10 नंबर पिलर में रविवार को तकरीबन पांच घंटे मरम्मत कार्य चला। इसकी वजह से दोनों ओर के वाहनों को एक ही लेन से गुजारा गया। नतीजा चिलचिलाती धूप में लोग दिनभर जाम में फंसे रहे।झूंसी से लेकर अलोपीबाग तक वाहनों की लंबी कतार लगी रही।

भीषण में गर्मी में भारी जाम में फंसे लोग पसीने से तरबतर हो गए। यातायात को सुचारू करने में इलाकाई पुलिस और ट्रैफिक पुलिस के पसीने छूट गए थे। शाम को तकरीबन चार बजे प्रभावित लेन से वाहनों का आवागमन शुरू किया गया। तब जाकर दोनों लेन पर यातायत पूरी तरह सुचारू हो सका।

ज्वैलरी शाप से सोने की चार लाकेट लेकर फरार

प्रयागराज(आरएनएस)। नैनी कोतवाली के काजीपुर मोहल्ले में शनिवार देर शाम ज्वैलरी है दुकान पर आभूषण लेने पहुंचे टप्पेबाज ने लॉकेट देखने के बहाने सोने की चार लॉकेट लेकर भाग निकला। जब तक दुकान मालिक ने शोर मचाया तब तक वह अपने साथी की बाईक पर बैठकर फरार हो गया। घटना की जानकारी होने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगालकर टप्पेबाजो की तलाश शुरु कर दी है। जानकारी के मुताबिक करैलाबाग के रहने वाले त्रिभुवन नाथ सोनी की नैनी काजीपुर में ज्वैलरी की दुकान है। वह रोज की तरह अपनी दुकान पर गये हुए थे। शनिवार की देर शाम एक युवक टोपी लगाकर उनकी दुकान पर पहुंचा और सोने की आठ लॉकेट निकलवाया। इसके बाद वह बहाने से चार लॉकेट पर हाथ साफ कर दिया। बाद व्हा से भागने लगा। इस दौरान दुकान मालिक त्रिभुवन ने शोर मचाया।मौके पर शोर सुनकर लोग पहुंचते, तब तक गली के बाहर बाईक लेकर खड़ा उसका एक साथी तत्काल बाईक स्टार्ट किया दोनों भागने में कामयाब हो गये। घटना की जानकारी पर पहुंची नैनी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आस पास लगे सीसीटीवी कैमरो को खंगालते हुए टप्पेबाजो की तलाश शुरु कर दी है। वही घटना की तहरीर भुक्तभोगी ने नैनी कोतवाली में दी है।जाम के झाम से जूझते रहे। दोपहर तकरीबन बारह बजे हाईवे की एक लेन में इस कदर जाम लगा कि लोग घंटों अपने चार पहिया वाहन के साथ जाम में फंसे रहे।झूंसी से लेकर अलोपीबाग तक वाहनों की लंबी कतार लगी रही।

भीषण में गर्मी में भारी जाम में फंसे लोग पसीने से तरबतर हो गए। यातायात को सुचारू करने में इलाकाई पुलिस और ट्रैफिक पुलिस के पसीने छूट गए थे। शाम को तकरीबन चार बजे प्रभावित लेन से वाहनों का आवागमन शुरू किया गया। तब जाकर दोनों लेन पर यातायत पूरी तरह सुचारू हो सका।

कायस्थ पाठशाला क्लब ने जीता उद्घाटन मुकाबला

रविकांत अंडर–16 समर क्रिकेट लीग

प्रयागराज(आरएनएस)। कायस्थ पाठशाला क्रिकेट क्लब ने भवम क्रिकेट क्लब को 46 रन से हराकर रविकांत अंडर–16 समर क्रिकेट लीग का उद्घाटन मुकाबला अपने नाम किया। केपी कॉलेज मैदान पर रविवार से शुरू हुई प्रतियोगिता के पहले मैच में कायस्थ पाठशाला क्लब ने 35 ओवर में सात विकेट पर 216 रन (अथर्व शुक्ला 86, आशुतोष 35, अमन यादव 30, विशाल सिंह 3ध्41, सानिध्य श्रीवास्तव 2ध्38) बनाए। जवाब में भवम क्लब की टीम 31.2 ओवर में 170 रन (रोशन कुशवाहा 89, आदर्श पाण्डेय 3ध्25, आशुतोष भास्कर 3ध्35, अमन शुक्ला 2ध्36) पर सिमट गई।इससे पूर्व प्रतियोगिता का उद्घाटन इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति समित गोपाल ने किया। डॉ. सुरेश द्विवेदी एवं डॉ. जूली ओझा ने खिलाड़ियों से मुख्य अतिथि का परिचय कराया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता और केपी ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष टीपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। एसीए के निदेशक आरपी भटनागर, डॉ सुरेश द्विवेदी और स्वर्गीय रविकांत के पुत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अधिवक्ता तरुण अग्रवाल ने मुख्य अतिथि का बुके देकर स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन एसीए की निदेशक डॉ. जूली ओझा ने किया। मैच में शिशिर मेहरोत्रा व हितेश श्रीवास्तव ने अंपायरिंग एवं अंकित पाण्डेय ने स्कोरिंग की। इस मौके पर अर्जुन अवार्डी अभिन्न श्याम गुप्ता, श्याम बाबू गुप्ता, नारायणजी गोपाल, अनुराग श्रीवास्तव, एलबी काला, सोमेश्वर पाण्डेय, मोहम्मद आसिफ, उमेश खरे, रमेश पाल, अजय कुशवाहा, अमरनाथ यादव, प्रितेश सोनकर और श्यामू भारतीय मौजूद रहे।

पूर्व विधायक सपा नेता मुजतबा सिद्दीकी के पुत्र की हार्टअटैक से निधन

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल सहित सपा जनों ने जताया दुख

प्रयागराज(आरएनएस)। पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के नेता मुजतबा सिद्दीकी के बड़े पुत्र मो. अब्दुल्लाह (40)की ह्रदय गति रुकने से मौत हो गई। आज शाम उनके पैतृक गाँव लिलहत के कब्रिस्तान मे दफनाया गया। वह आज सुबह 7 बजे सोकर उठे, चाय भी पिया फिर अचानक से बिस्तर पर जाकर लेट गए। घर वालों ने न्हें बुलाया, आवाज न आने पर पास जाकर हिलाया लेकिन कोई हरकत नहीं हुई, तब तक उनकी मौत हो चुकी थी।मो. अब्दुल्लाह समाजसेवी एवं फूलपुर तथा सिकंदरा मे स्थित कई स्कूल, कालेज के प्रबंधक थे। अपने पीछे पत्नी तहसीन बानों, दो पुत्रियां आयशा, जारा (6माह) एक पुत्र मो फाहिद 5 वर्ष छोड़ गए हैं।पूर्व विधायक एवं सपा नेता के पुत्र की अचानक मौत पर सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल सहित पार्टी के नेताओं, शुभ चिंतकों ने गहरा दुख जताया है। सपा कार्यालय मे भी पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं ने बैठक कर शोक जताया। शोक व्यक्त करने वालों मे सर्व पूर्व सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह, जिलाध्यक्ष गण अनिल यादव, सैयद इफ्तेखार हुसैन, पप्पूलाल निषाद, एमएलसी डॉ मानसिंह यादव, विधायक गण श्रीमती विजमा यादव, गीता शास्त्री, हाकिम लाल बिन्द, संदीप पटेल, अंसार अहमद, सत्य वीर मुन्ना, कमल सिंह यादव, पंधारी यादव, जोखूलाल यादव, कृष्ण मूर्ति सिंह, हाजी परवेज अहमद, लोकसभा प्रत्याशी अमरनाथ सिंह मौर्य, उज्जवल रमण सिंह, बासुदेव यादव, वजीर खां, मंसूर आलम, दान बहादुर मधुर, कुलदीप यादव, राम प्रताप यादव, आर एन यादव, अजय श्रीवास्तव, सचिन श्रीवास्तव, कमला यादव, मंजू यादव, जोंटी यादव, जीतलाल पासी, खिन्नी लाल, दूधनाथ पटेल, इसरार अंजुम, मो गौस, शकील अहमद, वकार

जलवायु परिवर्तन के संकट को लेकर हुई परिचर्चा

चित्रकूट(आरएनएस)। विकास पथ सेवा संस्थान ने जल, जंगल व जमीन विषय पर सार्थक चर्चा का आयोजन ग्राम अरछा बरेठी में मंदाकिनी नदी के घाट में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ जल संरक्षण के गीत के साथ हुआ।अध्यक्ष डॉ. प्रभाकर सिंह ने बताया कि संस्थान पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे पर 20 वर्षों से जन जागरूकता, वृक्षारोपण, नदी, नालों की सफाई का कार्य कर रही है। इसी क्रम में नदी, नालों के किनारे बसे गांव, स्कूल, कॉलेजों में जल, जंगल व जमीन के संरक्षण के लिए चर्चा का आयोजन किया जा रहा है। बताया कि जल, वर्षा जल के एक–एक बूंद पानी को बचाने के लिए ग्रामीण, स्कूली बच्चों को प्रेरित करेंगे। जिला गंगा समिति चित्रकूट रानीपुर टाइगर रिजर्व के जिला परियोजना अधिकारी गोपाल कृष्ण गुप्ता ने कहा कि नदियों के किनारे खेतों में एकजुट होकर साफ सफाई, अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। वह वृक्षारोपण के लिए निशुल्क पौधों को दिलाने में ग्रामीणों का सहयोग करेंगे। इस मौके पर डाबर कंपनी की ओर से प्रदत्त फ्रूट जूस, तेल, शैंपू, नारियल जूस का वितरण किया गया। चित्रकूट इंटर कॉलेज कर्वी के क्रीड़ा अध्यक्ष डॉ रमेश सिंह चंदेल ने कहा कि बृक्षों के कटान होने से पर्यावरण असंतुलित हुआ है। इसीलिए पर्याप्त मात्रा में वर्षा नहीं हो रही है। जितने अधिक वृक्ष होंगे उतनी ज्यादा वर्षा होगी। इसलिए पेड़ लगाओ, पानी बरसाओ। उन्होंने चिंता जताई कि मंदाकिनी नदी बंधोईन बांध के आगे धारा रुक गई है। अरछा बरेठी, औदहा, लोहदा आदि गांवों में मंदाकिनी का बहाव नहीं है। यदा कदा गड्ढों में पानी भरा है। यह बेहद चिंता का विषय है। कार्यक्रम का संचालन समाजसेवी लवलेश सिंह ने किया। गोष्ठी में शिक्षक सुरेश कुमार, राकेश राजपूत, हनुमान यादव, जगन्नाथ वर्मा, प्रकाश वर्मा आदि मौजूद रहे।

बीमारी से संबंधित संपूर्ण आहार के बारे में दी जानकारी

प्रयागराज। सृजन इंस्टिट्यूट ऑफ पैरामेडिकल साइंस सड़वा खुर्द प्रयागराज मे बीएससी नर्सिंग सेकंड सेमेस्टर के बच्चों के द्वारा न्यूट्रिशन प्रोगाम पोषण कार्यक्रम कराया गया। जिसमें बच्चों ने बीमारी से संबंधित संपूर्ण आहार के बारे में जानकारी दी एवं बीमारी से संबंधित आहार बनाकर आए हुए अतिथियों के सामने प्रस्तुत किया। अतिथियों ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया एवं उज्जवल भविष्य की कामना की।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की पूर्व सदस्य एवं प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ सृजन हॉस्पिटल डॉ सविता अग्रवाल उपस्थित रहीं। संस्था की प्राचार्य घ्तु तोबित ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया और बच्चों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में आहार विशेषज्ञ कल्पना श्रीवास्तव भी उपस्थित रहीं। संस्था के शिक्षक गण कर्मचारी गण अवनीश केवट, रीता सिंह, युवत कुमारी, विभा कुशवाहा, अर्पिता सिंह, निशि तिवारी, अतुल पाल, ज्योति श्रीवास्तव, प्रिंसु मिश्र, रत्नेश यादव, सौरभ मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

योगेन्द्र कुमार मिश्र विश्वबन्धु हुए विद्या वाचस्पति सारस्वत सम्मान से सम्मानित

प्रयागराज। प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ द्वारा महाराष्ट्र मंडल के सभागार में महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार मुनेश्वर मिश्र की अध्यक्षता,पाठ्यक्रम लेखक सुलतानपुर के डा. सर्वेशकान्त वर्मा श्सरलश के मुख्य आतिथ्य एवं राष्ट्रीय संयोजक डा. भगवान प्रसाद उपाध्याय के संचालन में साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, बरियावां (प्रतापगढ़) द्वारा प्रयागराज के वरिष्ठ कवि लेखक योगेन्द्र कुमार मिश्र षविश्वबन्धुष् को पुष्पहार, अंगवस्त्र, प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर षविद्या वाचस्पतिष् सारस्वत सम्मान से सम्मानित किया गया।

भारत तिब्बत सहयोग मंच ने मनाया रजत जयंती समारोह

प्रयागराज(आरएनएस)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आनुसांगिक संगठन भारत तिब्बत सहयोग मंच– के 25 वर्ष पूर्ण होने पर आज रजत जयंती समारोह के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम ष श्री सुमंगलम सेवा न्यास ष चांडी में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मंच के प्रयागराज महानगर अध्यक्ष योगराज मिश्रा व जिला अध्यक्ष युवा विभाग अजय मिश्रा ने मंच के 25 वर्ष की यात्रा से सभी को अवगत कराया।

पिटाई से मां–बेटे घायल, दी तहरीर

चित्रकूट(आरएनएस)। दूध देकर वापस लौट रहे किशोर को पड़ोसियों ने पीट दिया। बीचबचाव करने पहुंची मां पर पत्थर से सिर में वार कर दिया। जिसके चलते मां–बेटा गंभीर रूप से घायल हो गए। परिजनों ने सीएचसी में भर्ती कराया। चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार कर जिला अस्पताल रेफर कर दिया। घायलों ने थाने में तहरीर दी है।पहाड़ी थाना क्षेत्र के केलौहा बाबा का पुरवा परसौंजा निवासी निर्मला देवी (28) ने बताया कि रविवार की सुबह उसका पुत्र गोविंद (12) घर से दूध लेकर गांव के बाहर गया था। वापस वह साइकिल से लौट रहा था। जैसे ही वह घर के पास रास्ते पर पहुंचा तो पड़ोसी चतुरलाल, भरतलाल ने उसके साथ अकारण ही गालीगलौज करने लगे। कहासुनी होने के बाद गोविंद को पीट दिया। पीट रहे पुत्र को मां निर्मला देवी ने देखा तो बीच बचाव करने लगी। तभी पड़ोसी चतुरलाल व भरतलाल ने पत्थर से उसके सिर पर वार कर दिया। इसके बाद वह दोनों को वहां से भाग गए। घायल मां–बेटे को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहाड़ी में भर्ती कराया। चिकित्सक ने निर्मला को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। घायलों ने थाने में तहरीर दी है। इस संबंध में पहाड़ी थाना प्रभारी श्याम प्रताप पटेल ने बताया कि तहरीर मिलने के बाद कार्रवाई की जाएगी।

सूरज ने दिखाए तेवर, तापमान पहुंचा 44 के पार

चित्रकूट। सूरज के प्रचंड तेवर से रविवार को 44.3 डिग्री तक पारा पहुंच गया। इससे सबसे अधिक गर्म दिन रहा। तेज धूप के कारण बाजार में सन्नाटा छाया रहा। एक सप्ताह से जिले गर्मी का खासा असर देखा जा रहा है। रविवार को तो हालत अधिक खराब रही। सुबह से तेज धूप निकलने से घरों से निकलना मुश्किल हो गया। जरूरी काम पर निकलने वाले सिर में अगौंछा डालकर निकले। दोपहर को सडकों में सन्नाटा छाया रहा। गर्मी के कारण बीमारी भी फैल रही है। जिससे जिला अस्पताल सहित सामुदायिक अस्पतालों में मरीजों की संख्या अधिक देखी गई।

तुलसी की नगरी में रोड़वेज बसों का ठहराव न होने पर कस्बावासियों में रोष

राजापुर (चित्रकूट)(आरएनएस)। महाकवि तुलसी की जन्मस्थली राजापुर सड़क परिवहन निगम के कारण उपेक्षा का शिकार है। यह स्थान विकास से कोसों दूर है। नगर पंचायत अध्यक्ष संजीव मिश्रा, समाजसेवी शिवपूजन गुप्ता, सुनील मिश्रा ने बताया कि सन 1970 में तत्कालीन सरकार के मंत्री राधाकृष्ण गोस्वामी ने राजापुर में उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन निगम से बुकिंग ऑफिस एवं अन्य जिलों से आने वाली रोडवेज बसों का बस अड्डा बनाया था जो 2002 तक कायम रहा और इसके बाद शासन प्रशासन व निगम की उपेक्षा के चलते बस अड्डा एवं रोडवेज का बुकिंग ऑफिस किसी कारणवश समाप्त कर दिया गया। जबकि प्रदेश सरकार धर्म स्थलों को सड़कों व परिवहन से जोड़ने के लिए कई योजनाएं लागू कर रही है लेकिन तुलसी का यह स्थल आज भी रोडवेज बसों के यातायात के लिए आँसू बहा रहा है। जबकि पूर्व में राजापुर तीर्थस्थल से राजधानी लखनऊ, व्यापारिक नगरी कानपुर, प्रयागराज व प्रदेश के अन्य जिलों में यात्रा करने के लिए राजापुर से रोडवेज बसों का संचालन किया जा रहा था।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।